स्मारिका

आम सभा - ७ फरवरी, १९९६

ग्रामीण क्षेत्र अधिकारी कल्याण परिषद, उ० प्र०
सत्य कर्म न्याय

ग्रामीण क्षेत्र अधिकारी कल्याण परिषद
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

Scanned with OKEN Scanner

स्मारिका

आम सभा - ७ फरवरी, १९९६

ग्रामीण क्षेत्र अधिकारी कल्याण परिषद, उ० प्र०
सत्य कर्म न्याय

ग्रामीण क्षेत्र अधिकारी कल्याण परिषद
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

Scanned with OKEN Scanner

स्मारिका

आम सभा – फरवरी ७, १९९९

ग्रामीण क्षेत्र अधिकारी कल्याण परिषद
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

स्मारिका

सम्पादक की ओर से.....

प्रिय पाठकगण वर्ष 1999 कई अर्थों में अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं इतिहास में विशेष स्थान रखने वाला वर्ष है। 31 दिसम्बर 1998 को 999 वर्ष पूर्ण करके एक "मिलेनियम" को जहां एक ओर ऐतिहासिक बनाया है वहीं दूसरी ओर एक नये "मिलेनियम" में प्रवेश की आधारशिला रखी है इसी दिन एक सदी का अन्त हुआ है व विश्व 21वीं सदी में प्रवेश को तत्पर है। ग्रामीण क्षेत्र अधिकारी कल्याण परिषद उत्तर प्रदेश, जिसकी परिकल्पना मई 1995 में कुछ साथियों द्वारा की गई थी, ने भी अपने तीन वर्ष से अधिक का समय पूर्ण कर लिया है। हम अपना द्वितीय अधिवेशन कर रहें हैं। ऐसे महत्वपूर्ण समय में हमें परिषद को और अधिक सुदृढ़ गतिशील, क्षमतावान व सही अर्थो में उद्देश्यपरक बनाने का संकल्प लेना है जिससे 21वीं सदी में प्रवेश करते समय हम इसे प्रभावशाली व लाभकारी बनाकर एक आदर्श स्थापित करने में सफल हो सकें।

विगत समय में परिषद ने अपने को बहुआयामी बनाने का सफल प्रयास किया है। इससे न केवल चुने हुऐ जन प्रतिनिधि, विधानसभा व विधानपरिषद सदस्यगण व लोकसभा तथा राज्य सभा सदस्यगण जुड़े हैं, वरन प्रगतिशील समाजसेवी व उद्योगपतियों ने भी परिषद को सहयोग प्रदान किया है। किसी भी समाज की प्रगति में इसके बुद्धिजीवियों का चिन्तन व मार्गदर्शन अत्यन्त महत्व रखता है। इस दृष्टिकोण से परिषद को अपना विस्तार करना आवश्यक है। यह तभी सम्भव है जबकि जो पात्र एवं अर्ह सदस्य अभी तक इससे जुड़े नहीं हैं उन्हें शीघ्रता से इससे नाता जोड़ने हेतु प्रेरित किया जाय। साथ ही परिषद को गांव, गरीब व किसान के उत्थान हेतु कल्याणकारी प्रयास करने के रास्तों को खोजना है।

कृषक परिवारों से कठिन संर्घष कर "जनसेवक" के रूप में आसीन अधिकारियों को यह विस्मृत नहीं करना चाहिए कि भारत एक विशाल एवं कृषि प्रधान देश है तथा देश की उन्नति कृषि को लाभकारी बनाने व ग्रामों को समृद्ध व खुशहाल बनाने में ही निहित है! यदि 21 वीं सदी में एक मजबूत भारत विश्व परिदृश्य पर उदित होता है तो उसकी कुंजी रोजगारपरक शिक्षा, अच्छे स्वास्थ्य व सुखी समृद्ध गॉवों में निहित है। कृषि का तेजी से

मशीनीकरण हो रहा है यह अत्यधिक वैज्ञानिक भी हो गयी है अतः कृषि में पूंजी निवेश क
बढ़ाना आवश्यक है। प्रति हेक्टेयर उत्पादन को तेजी से बढ़ाना होगा तभी बढ़ती जनसंख्य
की आवश्यकताओं की पूर्ति सम्भव हो सकेगी। कृषि को व्यवसायिक रूप प्रदान करना होगा
दुर्भाग्य से वर्तमान में प्राथमिकताएं अन्य क्षेत्रों को प्रदान की जा रही हैं जिससे उद्योग व कृ
का फासला बढ़ा है, जो कि अहितकर है। ग्रामों में लाभकारी लघु उद्योगों की स्थापना व
पुनीत कार्य व सोच समाप्त प्रायः सी है। इस कारण शहरों की ओर पलायन की प्रवृत्ति तेज
से बढ़ी है। इसी का दुष्परिणाम है कि शहरों का फैलाव विभिन्न नई समस्यायें पैदा कर र
है। बजट का अधिकांश भाग शहरों में प्रयोग हो रहा है इस दिशा व दशा को बदलने व
समय आ गया है, आइये संकीर्ण वादों से ऊपर उठकर अभिनव प्रयास में अपना सहयो
प्रदान करें व परिषद को समृद्ध व उपयोगी बनावें।

स्मारिका का द्वितीय अंक आपके बहुमूल्य सुझाव हेतु प्रस्तुत है। मै उन सभी लेख
का आभारी हूं जिन्होने अपने लेख प्रकाशन हेतु उपलब्ध करायें हैं। मै उनका भी आभ
अभिज्ञापित करता हूं जिन्होने इसके प्रकाशन से पूर्व इसमें सहयोग प्रदान किया। मैं वि
रूप से कु. पल्लवी सिंह का आभारी हूं जिन्होने अपनी कल्पनाशीलता से मुख्यपृष्ठ डिजा
कर इसे साकार रूप दिया है।

ई० राजबहादुर सिं
अधिशाषी अभियन्ता
लघु सिंचाई विभाग

18/373, इंदिरा नगर
लखनऊ

स्मृति-पत्र

1. संस्था का नाम : ग्रामीण क्षेत्र अधिकारी कल्याण परिषद।

2. संस्था का पता : ए 1/13, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ।

3. संस्था का कार्यक्षेत्र : सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश

4. उद्देश्य :—

1 उत्तर प्रदेश में ग्रामीण क्षेत्र से आये अधिकारियों में आपसी भ्रातृभाव एवं सहयोग को प्रोत्साहित करना।

2 ग्रामीण संस्कृति को पुनर्जीवित करना।

3 ग्रामीण संस्कृति से जुड़े सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करना।

4 सदस्यों व उनके परिवारजनों में निहित प्रतिभा का विकास करना और इस सन्दर्भ में संगोष्ठी, वाद—विवाद, चित्रकला प्रतियोगितायें आयोजित करना।

5 ग्रामीण खेल यथा कबड्डी, कुश्ती, वालीवाल, तैराकी आदि का आयोजन एवं प्रोत्साहन करना।

6 ग्रामीण क्षेत्र के सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक विकास के लिये प्रयास करना।

7 ग्रामीण समाज एवं अन्य समाजों के बीच भातृभाव की भावना को प्रोत्साहन देना तथा राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देना।

8 सदस्यों एवं परिवारजनों में जनसेवा के कार्यक्रमों की गुणवत्ता बढ़ाने के प्रति जागरुकता उत्पन्न करना एवं जवाबदेही की भावना को जागृत करना।

9 ऐसे कार्यक्रमों को अपनाना जिसके द्वारा सदस्यों के कल्याण के साथ—साथ जनकल्याण का लक्ष्य प्राप्त हो सके।

5 संस्था के पदाधिकारियों के नाम व पते जिन्हें संस्था के सदस्यों द्वारा उत्तरदायित्व सौंपा गया है हम हस्ताक्षरकर्ता घोषित करते हैं कि स्मृतिपत्र एवं सलंग्न नियमावली के अनुसार सोसाइटी रजिस्ट्रेशन एक्ट 1860 के अन्तर्गत एक समिति का गठन किया है।

स्मारिका

Scanned with OKEN Scanner

क्र.सं.	नाम	धारित पद	व्यवसाय	पता
1	डा0 यशपाल सिंह	अध्यक्ष	सरकारी सेवारत अधिकारी	ए–6, दिलकुशा कालोनी, लखनऊ
2	श्री जयपाल सिंह	उपाध्यक्ष	सरकारी सेवानिवृत अधिकारी	12/638, इन्द्रानगर, लखनऊ
3	श्री जगजीत सिरोही	उपाध्यक्ष	सरकारी सेवारत अधिकारी	सी–3, निरालानगर, लखनऊ
4	श्री सुरेन्द कुमार वर्मा	महासचिव	सरकारी सेवारत अधिकारी	ए–1/9, विकासखण्ड, गोमतीनग लखनऊ
5	श्री अनिल राज कुमार सहरावत	सविच संगठन	सरकारी सेवारत अधिकारी	802, लाप्लास कालोनी, लखनऊ
6	श्री आर. एस. निर्वाण	सचिव वित्त	सरकारी सेवारत अधिकारी	उ० प्र० सहकारी बैंक, हजरतगंज,
7	डा. प्रमोद कुमार पवार	सचिव प्रचार	सरकारी सेवारत अधिकारी	सी–2, पशुपालन कालोनी फैजाबाद रोड, डालीगंज, लखनऊ
8	श्री ओम सिंह वर्मा	सचिव सांस्कृतिक	सरकारी सेवारत अधिकारी	
9	श्री महिपाल सिरोही	सम्प्रेक्षक	सरकारी सेवारत अधिकारी	805, लाप्लास कालोनी, लखनऊ
10	श्री आर. के. सरोहा	सदस्य कार्यकारिणी	सरकारी सेवारत अधिकारी	13/4, पी.डब्ल्यू.डी. कालोनी, जेल रोड, लखनऊ
11	डा. डी. पी. सिंह	सदस्य कार्यकारिणी	सरकारी सेवारत अधिकारी	जिलाधिकारी, गोण्डा
12	श्री महेन्द्र सिंह	सदस्य कार्यकारिणी	सरकारी सेवानिवृत्त अधिकारी	डी–40, निरालानगर, लखनऊ
13	श्री कप्तान सिंह	सदस्य कार्यकारिणी	सरकारी सेवारत अधिकारी	21/2, कैनाल कालोनी, लखनऊ
14	श्री नरेन्द्र सिंह	सदस्य कार्यकारिणी	सरकारी सेवारत अधिकारी	5/84, तारा निवास, सदर बाजार लखनऊ
15	श्री विजय सिंह	सदस्य कार्यकारिणी	सरकारी सेवारत अधिकारी	74, रोहताश एन्क्लेव, फैजाबार रो लखनऊ
16	श्री बी. एस. ढाका	सदस्य कार्यकारिणी	सरकारी सेवारत अधिकारी	ए–30, शास्त्री नगर, मेरठ
17	श्री रघुवंश सिंह राणा	सदस्य कार्यकारिणी	सरकारी सेवारत अधिकारी	पी.टी.सी., मुरादाबाद
18	डॉ. नवाब सिंह	सदस्य कार्यकारिणी	सरकारी सेवानिवृत्त अधिकारी	23–ए, आलोक नगर, आगरा
19	श्री प्रियव्रत आर्य	सदस्य कार्यकारिणी	सरकारी सेवारत अधिकारी	संयुक्त निदेशक (कृषि), मुरादाबाद
20	मेजर जनरल सोलंकी	सदस्य कार्यकारिणी	सरकारी सेवारत अधिकारी	24 बी–1, लाइन्स, मेरठ कैण्ट
21	श्री महक सिंह	सदस्य कार्यकारिणी	सरकारी सेवारत अधिकारी	बी–46, सेक्टर–इ, अलीगंज, लख

6. हम निम्नलिखित हस्ताक्षरकर्ता मिलकर उ० प्र० राज्य सेवा में सेवारत अधि सोसाइटीज रजिस्ट्रेशन एक्ट 1860 के अन्तर्गत उक्त संस्था का पंजीकरण क चाहते हैं।

स्मारिका

Scanned with OKEN Scanner

संख्या 1541 पत्रावली सं०-1-117363 दिनांक 5-7-96

सोसाइटी-रजिस्ट्रीकरण
का
प्रमाण-पत्र

(अधिनियम संख्या 21,1860 के अधीन)

संख्या 574 19 96 - 1997

एतद्द्वारा प्रमाणित किया जाता है कि ग्रामीण क्षेत्र अधिकारी कल्याण परिषद, 2/19, विकास खण्ड गोमती नगर, लखनऊ

को आज उत्तर प्रदेश में अपनी प्रवृत्ति के संबंध में यथासंशोधित सोसाइटीज रजिस्ट्रेशन अधिनियम, 1860 ई० के अधीन सम्यक् रूप से रजिस्ट्रीकृत किया गया है। यह प्रमाण-पत्र 01-7-2001 तक विधिमान्य होगा।

आज दिनांक 02-7- उन्नीस सौ 96 को मेरे हस्ताक्षर से दिया गया।

सोसाइटी के रजिस्ट्रार,
उत्तर प्रदेश।

अध्यक्षीय सम्बोधन

परिषद ने स्थापना के तीन वर्ष से अधिक का समय पूर्ण किया है परन्तु यह अभी अपनी शैशव अवस्था में ही है क्योंकि इसका पंजीकरण जुलाई, 1996 में हुआ है। इस संस्था की स्थापना के निम्न उद्देश्य हैं :–

1. आपसी परिवारिक जानकारी प्राप्त कर भ्रातृभाव तथा सहयोग की भावना सृदृढ़ करना।
2. ग्रामीण संस्कृति की धरोहर को सुरक्षित रखना।
3. युवा वर्ग में प्रतिभा विकास की प्ररेणा जागृत करना।
4. ग्रामीण समाज में सामाजिक, आर्थिक तथा शैक्षिक विकास का प्रयास करना।
5. समाज में जन सेवा तथा राष्ट्रीय एकता की भावना का प्रतिपादन करना।
6. राजनीतिज्ञों, बुद्धिजिवियों तथा समाज़सेवियों के विचार तथा शासकीय कार्यक्रमों के बीच प्रभावी सेतु स्थापित करना।

ग्रामीण समाज कृषि प्रधान समाज है। जनसंख्या का 80 प्रतिशत भाग ग्रामीण अंचल में निवास करता है तथा लगभग 72 प्रतिशत जनसंख्या खेती पर निर्भर है। लेकिन कालान्तर में जोत का आकार घटने से अब 90 प्रतिशत किसान सीमान्त अथवा लघु कृषक की श्रेणी में आये हैं, जिनके पास कुल कृषि योग्य भूमि का 50 प्रतिशत भाग ही है और 73 प्रतिशत सीमान्त कृषक प्रायः सभी गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहे हैं। वैसे ग्रामीण क्षेत्र की जनसंख्या के 31 प्रतिशत लोग ही मुख्य कर्मी है। और लगभग 22 प्रतिशत लोग कार्य के अभाव में फालतू हैं। ऐसी स्थिति में कम से कम जीविकोपार्जन उन्मुखी रोजगार सृजन की अत्यन्त आवश्यकता है।

हाल ही में शासन द्वारा सामाजिक क्षेत्र की आर्थिक उन्नति के लिए अधिकाधिक पूंजी निवेश पर बल दिया है परन्तु ग्रामीण क्षेत्र में अवस्थापना सृजन जैसे– दूरसंचार, सड़क, परिवहन, चिकित्सा, शिक्षा, पेयजल, ऊर्जा तथा सामाजिक सुरक्षा आदि सुविधाओं को घोर अभाव है, जिसके कारण कृषि निवेश में भी आशातीत वृद्धि नहीं हो पा रही है। इस शताब्दी के छठे दशक में देश में जो हरित क्रन्ति का प्रादुर्भाव हुआ था अब जनसंख्या वृद्धि दर कृषि विकास (खाद्यान्न उत्पादन दर से) अधिक होने के कारण निकट भविष्य में खाद्यान्न संकट (पी–एल 480 के पुराने बादल पुनः मंडराने) की सम्भावना प्रबल होती जा रही है। विश्वीकरण (ग्लोबिलाइजेशन) एवम् आधुनिकीकरण नीति के अनुसरण से सामान्य कृषक की समस्याएं कहीं और जटिल व विषम न हो जाय इस पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि विदेशी बाजार में अपने कृषि उत्पादों को प्रतिस्पर्धी होने का असली मौका तभी प्राप्त होगा जबकि देशी बाजार में कृषि अवस्थापना सुविधाएं वृहद स्तर पर उपलब्ध करायी जायें जिससे वहां पूंजी निवेश बढ़ाने में मदद मिल सकें। इन सुविधाओं के सृजन तथा गरीबी उन्मूलन एवं रोजगारपरक योजनाओं के क्रि न्वयन का दायित्व स्थानीय स्तर पर समाज सेवी संस्थाओं को देना अधिक हितकर होगा क्योंकि वर्तमान में चालू

कार्यप्रणाली एवं पद्धति उतनी कारगर एवं विश्वसनीय नहीं रह गयी है जितनी कि अपेक्षा की जाती
कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में पारदर्शिता तथा स्थानीय लोगों के सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने से वहां की
में इन कार्यक्रमों के प्रति अधिक विश्वास जागृत हो सकेगा और सम्भव है कि वे इनमें पूर्ण सहयोग प्रदान

खेती में पूजी निवेश एवं कृषि उत्पादन में वृद्धि, विपणन व्यवस्था पर अधिकांशतः निर्भर है। दुर्भ
कृषि एवं गैर कृषि उत्पाद के विगत 30–35 वर्ष के बाजार भावों की तुलना से ज्ञात होता है कि इस अवधि
उत्पादों का मूल्य 5 से 6 गुना तक बढ़ा है जबकि गैर कृषि उत्पादों का मूल्य 10 से 12 गुना बढ़ चुका है
भविष्य में भी कृषि उत्पादों के मूल्य में ठहराव की यही प्रवृत्ति जारी रही तो कृषि जो अभी तक अलाभक
लाचारी का पेशा रहा है, ग्रामीण समाज के लिए जीविकोपार्जन का यह एक मात्र विकल्प भी समाप्त हो
है। इससे कृषकों की आर्थिक स्थिति दयनीय होने के साथ–साथ राष्ट्र को भी इसके दूरगामी प्रतिकूल
भुगतने पड़ सकतें हैं क्योंकि कृषि उत्पाद के वृहद आयात से विदेशी मुद्रा की स्थिति अत्यन्त सोचनीय बन
है।

कृषि उत्पादों के मूल्य सरकार द्वारा परोक्ष रूप से नियंत्रित किए जाते हैं ताकि उपभोगताओं को अ
वस्तुओं के क्रय में मंहगाई का सामना न करना पड़े परन्तु इससे कृषकों को स्वतंत्र बाजार मूल्य के लाभ से
होना पड़ता है। यही कारण है कि देश के कृषकों की क्रय शक्ति काफी कम है, जिसका कृषि उत्पादक
प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। अतः यह आवश्यक है कि ग्रामीण क्षेत्रों अवस्थापना सुविधाओं का सरकारी र
सृजन तथा कृषि उत्पादों के मूल्यों का खुले बाजार में निर्धारण, स्थान बदलने (मूवमेन्ट) के नियंत्रण को
समाप्त कर "एक राष्ट्र एक बाजार" के सिद्धांत को अपनाना, कृषि निर्यात वृद्धि हेतु रियायती सुविधाएं बढ़ा
समर्थन मूल्य के क्षेत्र में उत्तरोत्तर (स्टेगर्ड) मूल्य सुविधा प्रदान करना तथा उपज ऋण प्रणाली लागू कर
उपायों पर गम्भीरता से विचार करने की आवश्यकता है।

सिंचाई जैसी सुविधाओं को अवस्थापना की श्रेणी में सम्मिलित करते हुए भूगर्भ जल उपलब्धता के
निःशुल्क बोरिंग की योजना सभी क्षेत्रों में लागू करने की आवश्यकता है। जल रिचार्ज के वृहद स्तर की
उन क्षेत्रों के लिए क्रियान्वित की जायं जहां भूगर्भ जल स्तर तेजी से घटता जा रहा है। विगत 25 वर्षो के
के अध्ययन से विदित है कि प्रदेश के पश्चिमी एवं मध्य क्षेत्रों में औसत वर्षा में लगभग 40 तथा 25 प्रतिश
क्रमशः कमी आई हैं इसी कारण भूगर्भ जल स्तर भी पूर्व की अपेक्षा 25 से 30 फिट नीचे चला गया है। य
दशा रही तो पश्चिमी उत्तर प्रदेश में सिंचाई का भारी संकट आ सकता है। भूगर्भ जल तथा सतही ज
वैज्ञानिक सर्वेक्षण कर उसके कन्जकटिव यूज पर बल देने की भी आवश्यकता है।

ग्रामीण जीवन में गुणात्मक सुधार लाने के लिए वहां शिक्षा का समुचित प्रबन्ध करना अनिवार्य है।
में छात्रों की शिक्षा किसी तरह से कराई जाती है परन्तु बालिकाओं की शिक्षा का अधिकांशतः अभाव ही है
कारण हमारी बहनें तथा बेटियां उच्च शिक्षा से वंचित रह जाती हैं और अनेक सामाजिक कुरीतियों का
बनती हैं। "लडका–लड़की एक समान" का सन्देश घर–घर ले जाना होगा और हमारे माननीय जनप्रतिनि

Scanned with OKEN Scanner

इस दिशा में विशेष प्रयास कर बालिकाओं की शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाने हेतु अवश्य प्रयास करेंगे, यह हमारा विश्वास है तभी लड़कियों का भारी ड्राप आऊट कम हो सकेगा और समाज समृद्धशाली बन सकेगा। आंकडों के आधार पर ग्रामीण क्षेत्र में केवल 10 प्रतिशत महिलाएं ही घरेलू कार्य के अलावा अन्य प्रोडक्टिव कार्य कर पाती हैं। शेष 90 प्रतिशत महिलाएं किसी रेमिरनेटिव व्यवसाय से वंचित ही रहती हैं जिससे परिवार की आय का स्तर अत्यन्त सीमित बना रहता है। परन्तु शिक्षित होने के पश्चात् ऐसे व्यवसाय तलाश करना अपेक्षाकृत सरल हो सकता है। शिक्षा हेतु अधिक स्कूल, कालेज खोलने तथा शहरी एवं ग्रामीण शिक्षा के अन्तर को समाप्त करने हेतु गम्भीर प्रयास करने होंगे। उद्यमियों को क्रियाशील पूंजी उपलब्ध कराने के साथ–साथ उनके प्रशिक्षण तथा प्रबन्धकीय ज्ञानवर्धन हेतु ज्यादा प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना करना भी जरूरी है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता कार्यक्रम पर अधिक बल देने की आवश्यकता है।

ग्रामीण अंचल में ज्ञान एवं जानकारी के अभाव में युवा प्रतिभा का विकास नहीं हो पाता है। इसी कारण ग्रामीण पृष्ठिभूमि वाले युवाओं का सरकारी अथवा गैर सरकारी सेवाओं में प्रतिनिधित्व काफी कम है और वह भी लगातार घटता जा रहा है। जबकि ग्रामीण पृष्ठि–भूमि वाले अभ्यर्थियों को वहां की समस्याओं का ज्ञान बेहतर होता है। अतः इस के लिए प्रशासनिक और सामाजिक सेवाओं में आरक्षण पर बल देने की महती आवश्यकता है। सजातीय आरक्षण के मुद्दे को सभी स्तर पर आक्रामक ढंग से उठाना विचारणीय है।

ग्रामीण क्षेत्रीय अधिकारी कल्याण परिषद द्वारा उक्त सभी मुद्दों पर विश्लेषणात्मक अध्ययन किए जायेगा और राजनीतिज्ञों, बुद्धिजीवियों तथा सामाज सेवी संस्थाओं में ज्ञान, सूचना एवं दिशा–निर्देशों का आदान–प्रदान किया जायेगा। इसके अतिरिक्त शिक्षित बेरोजगारों तथा प्रतिभावान युवाओं को समुचित ज्ञान, विभिन्न क्षेत्रों व व्यवसायों की अनिवार्य सूचना तथा काउंसिलिंग की सुविधा प्रदान करने के बारे में कारगर कदम उठाये जाने प्रस्तावित है। इसमें परिषद के सदस्यों के अतिरिक्त समाज के सम्पन्नजनों तथा गैर प्रवासी भारतीयों से आर्थिक मदद एवं सहयोग प्राप्त किया जा सकता है। कुछ होनहार बच्चों को चिन्हित कर उनको उच्च शिक्षा एवं प्रशिक्षण प्रदान करने का दायित्व भी इस संस्था के उद्देश्यों में से एक है ताकि समाज उनकी प्रतिभाओं से लाभान्वित हो सके।

विगत वर्षों में परिषद ने इन्ही उद्देश्यों की पूर्ति हेतु स्वयं को जनप्रतिनिधियों व उद्योगपतियों से जोड़ा है, सेमिनार आयोजित किए हैं परन्तु अभी बहुत कार्य करना शेष हैं। बिना मजबूत आर्थिक आधार के यह सब कार्य करना कठिन अवश्य है अतः इस ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। आगामी वर्षों में अधिकाधिक "इन्टरेक्शन" करना होगा जिसके लिए विस्तृत विचार विमर्श की जरूरत है।

महीपाल सिरोही
एच. जे. एस.
अध्यक्ष

Scanned with OKEN Scanner

With best compliments from :

For Good Quality of Fertilizer
use
Single Super Phosphate
of Khaitan Brand of
16% P_2O_5

KHAITAN FERTILIZE
RAMPUR

(A Unit of Rampur Fertilizer)

Soraj Singh Khokar

स्मारिका

Scanned with OKEN Scanner

महासचिव का सम्बोधन

समाज के परिपेक्ष में साथी अधिकारियों में सर्वहितः की भावना एवं कामना के साथ स्पष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु "ग्रामीण क्षेत्र अधिकारी कल्याण परिषद" का गठन सम्भव हुआ। परिषद का रजिस्ट्रेशन दिनांक 2.7.96 को होने के बाद परिषद के सदस्यों द्वारा दिनांक 17.11.96 की आम सभा में परिषद की कार्यकारिणी का गठन/चयन कर परिषद के सुचारू कार्यकलापो हेतु दायित्वों का निर्वहन निर्धारित किया गया। पिछले दो वर्षो के कार्यकाल में परिषद की कार्यकरिणी द्वारा हर सम्भव यह प्रयास किया गया कि परिषद के उद्देश्यों की प्राप्ति में एक गति बनी रहे तथा परिषद का प्रत्येक सदस्य अपनी सहभागिता को आभासित कर सके। परिषद की सदस्यता केवल सेवारत/सेवा निवृत्त राजपत्रित अधिकारियों या उनके समकक्ष पदधारकों तक सीमित रक्खें जाने के कारण वर्तमान तक लगभग 250 सदस्य परिषद में नामांकित हुए तथा इसके अतिरिक्त अलगभग 150 सदस्य भावनात्मक रूप से परिषद से जुड़े हुए हैं, जिनकी विधिमान्य सदस्यता हेतु शीघ्र सम्पर्क कर सदस्यता ग्रहण कराते हुए परिषद में उनकी सहभागिता सुनिश्चित करने का काम किया जा रहा है।

किसी भी समाज की उन्नति के लिये उसकी मुख्य तीन इकाईयों की सहभागिता की आवश्यकता होती है। पूर्व में परिषद जो स्वयं में एक इकाई (प्रशासकीय अधिकारियों का समूह) है द्वारा समाज के राजनीतिज्ञों तथा उद्यमियों से सीधे तारतम्य बनाने, उसके विचारों द्वारा समाज की समस्याओं के निदान हेतु प्रयास करने तथा आपसी भाईचारा तथा सौहार्द स्थापित करने के उद्देश्य से दिनां 3.8.96 तथा दिनांक 17.11.96 में क्रमशः माननीय सांसदों तथा विधायकों को सम्मानित करने तथा दिनांक 7.6.97 को उद्यमियों को सम्मानित कर अपनों के बीच समाहित करने के उद्देश्य से समारोहों के आयोजन किये गये। उसी कड़ी में अक्टूबर 97 तथा अप्रेल 98 में प्रदेश के मंत्रियों तथा नवनिर्वाचित संसद सदस्यों को अपने बीच बुलाकर उनके विचारों से अभिभूत होते हुए अतुल प्रेम की उसी श्रंखला में उन्हें भी समाहित करने का प्रयास किया गया।

आर्थिक, शैक्षिक, सामाजिक एवं औद्योगिक रूप से पिछड़े समाज की समस्याओं को चिन्हित करने प्रत्येक सेवा के मानकों को तय करने की दिशा में परिषद कार्यरत रही। परिषद द्वारा राजनैतिक औद्योगिक शैक्षिक एवं समाजिक सेवा के विशिष्ट व्यक्तियों को चिन्हित कर उनके विचार जनमानस के कार्यों में समाहित करने के उद्देश्य से सभी को एक मंच प्रदान किया गया। परन्तु व्यवस्था एवं तंत्र की सीमाओं के कारण मंच से उपलब्ध निष्कर्षों को क्रियान्वयन में समाहित कराने का कार्य परिषद द्वारा सम्भव न हो सका। फिर भी यह हर्ष का विषय है कि अपनी छोटी सी आयु में परिषद समाज के सभी अंगों से वैचारिक स्तर पर जुड़ने तथा अपनी पहचान अपने कार्यकलापों के अधार पर प्रदेश तथा अन्य प्रदेशों में स्थापित करने में सफल रही है।

सरकारी अधिकारी के रूप में राजनैतिक तथा उद्यमियों को जानने–समझने तथा जनकल्याण की भावनाओं को उन सभी तक पहुंचाने का प्रयास कभी न कभी सभी अधिकारियों द्वारा किया जाता है। परन्तु एक समाज विशेष के उत्थान के लिये इस प्रकार का सामूहिक प्रयास अपने में एक इतिहास का सृजन होगा। परिषद समाज के उन सभी कर्णधारों जिन्होने अपनी ग्रामीण पृष्ठ भूमि से ऊपर उठकर अपनी मेहन, लगन व कर्मठता से स्थान बनाया है को एक सूत्र में पिरोने

के कार्य पर गम्भीरता से अग्रसित रहेगी। प्रयत्न यही होगा कि आर्थिक, शैक्षिक, सामाजिक एवं औद्योगिक मानव समाहित कर, समस्याओं को चिन्हित किया जाये तथा सामयिक समाधान ढूंढा जाये। परिषद आप सभी के सहयो आशीर्वाद से सकारात्मक प्रयास करने को कृत संकल्प है।

समाज एक ओर जहां आर्थिक तथा शैक्षिक रूप से पिछड़ा है वहीं उद्यमिता विकास में शून्य की स्थित नव युवकों को जहां दिशा नहीं मिल पा रही हैं वहीं आधारभूत सुविधाओं का अभाव भी है। उद्यमिता विकास में यदि दिशा प्रदान कर सकेगी तो समाज के कल्याण में यह एक प्रभावी योगदान होगा। उद्यमियों का सहयोग परि उद्देश्य प्राप्ति में एक मील का पत्थर साबित होगा। वर्तमान व्यवस्था में नीति निर्धारण तथा क्रियान्वयन में सम भूमिका की समीक्षा करनी होगी। पूर्व के समय से यदि तुलना की जाये तो नीति निर्धारण (राजनीति) तथा क्रियान समाज की भागीदारी बढ़ने के बजाये घटती ही जा रही है। जहां एक ओर राजनैतिक चेतना तथा एक जु आवश्यकता प्रतीत होती है वहीं क्रियान्वयन मशीनरी के रूप में समाज के नव युवकों की भागीदारी सरकारी सेवक में घटती ही जा रही है। ऐसे नवयुवकों को चिन्हित कर (जो प्रतिभाशाली हो, आर्थिक रूप से पिछड़े हों) उन्हें दिश की जाये, यदि आवश्यकता हो तो एंडवान्सड – स्टडीज के लिये रास्ता बताते हुए आर्थिक मदद भी किये ज आवश्यकता है। परिषद प्रतिवर्ष 10 प्रतिभाशाली छात्रों को पूर्ण रूपेण छाट कर, उन्हें वर्तमान व्यवस्था में समुचि पर पदस्थापित कराने का प्रयास करेगी। धनाभाव इस महत्वपूर्ण उद्देश्य तथा अन्य सामयिक उद्देश्यों की प्राप्ति अवरोध बनेगा, जिसका समाधान भी किया जाना आवश्यक होगा।

परिषद के गठन की आवश्यकता पर प्रकाश पूर्व में डाल चुका हूं। परिषद के उद्देश्य काफी वृहद व है, फिर भी मुख्य उद्देश्य भ्रातृत्व भावना को जागृत करना, सौहार्द व प्रेम को बढ़ाना, एक दूसरे को और करीब हुए समाज के प्रबुद्ध गणमान्य तथा अग्रणी महानुभावों की पहचान कर सभी को एक सूत्र में पिरोने का कार्य परिषद ने अविश्वमरिणीय कार्य कर दिखाया है। भविष्य में भी प्रत्येक क्षेत्र में प्रतिभा सम्पन्न महानुभावों को सम्मा हुए उनका सहयोग एवं मार्गदर्शन प्राप्त करने का प्रयास जारी रखा जायेगा, ताकि उनका अनुभव व आशीर्वाद के लिए उन्नति का सम्बल बने। उपरोक्त के अतिरिक्त परिषद की कार्यकरिणी द्वारा परिवार परिचय नामक वैचारिक सम्पर्क स्थापित कर उनके विचारों को परिषद के उत्थान में समाहित करने का प्रयास किया गया । माह 98 में आगरा मथुरा, मेरठ तथा अलीगढ़ में बैठकें कर वहां समाज के कार्यकलापों तथा अपने विचारो को समायो का प्रयास क्रिया गया। भाविष्य में ऐसे अन्य कार्यक्रमों को अपनाया जायेगा जिसके द्वारा सदस्यों के क साथ–साथ जनकल्याण का लक्ष्य भी प्राप्त हो सके।

बदली हुई मान्यताओं तथापरिस्थितियों में अपने सुदृढ़ आचरण, प्रभावी क्रियान्वयन तथा विश्वास की साथ समाज उत्थान के कार्य में पुनः जुटना होगा। परिषद अपने स्पष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति में आने वाले कि को पार कर मंजिल पर पहुचेगी तथा दूसरों के लिये मार्ग दर्शक बनेंगी। ऐसा मेरा विस्वास है।

धन्यवाद

एस० व

महा

ग्रामीण क्षेत्र अधिकारी कल्याण परिषद,
उ० प्र०, लखनऊ

आय व्यय का विवरण

(अ) **कुल प्राप्तियाँ (31.12.1998 तक)**

1.	17.11.1996 का अवशेष	=	रु०	1,09,392.25
2.	उपरोक्त के बाद दिनांक 3.12.98 तक सदस्यता शुल्क द्वारा	=	रु०	1,16,000.00
3.	ब्याज द्वारा	=	रु०	22,607.75
4.	17.11.96 की स्मारिका प्रकाशन में विज्ञापन द्वारा	=	रु०	13,500.00
	योग	=	रु०	**02,61,500.00**

(ब) **कुल व्यय (17.11.1996 से 31.12.98 तक)**

1.	स्मारिका 96 का प्रकाशन	=	रु०	14,800.00
2.	स्टेशनरी व्यय (10.2.97 तक)	=	रु०	2,000.00
3.	स्टेशनरी व्यय (5.7.97 तक)	=	रु०	2,000.00
4.	दूरभाष निर्देशिका 14.6.97 (प्रथम संस्करण)	=	रु०	6,000.00
5.	सी० एस० आई० समारोह का व्यय दिनांक 5.7.97	=	रु०	5,772.00
6.	सेमीनार (गन्ना संस्थान)	=	रु०	1,500.00
7.	स्टेशनरी व्यय 27.4.98 तक	=	रु०	2,700.00
8.	दूरभाष निर्देशिका (द्वितीय संस्करण)	=	रु०	6,500.00
9.	स्टेशनरी व्यय 31.12.98 तक	=	रु०	3,500.00
10.	दिनांक 8.6.97 के समारोह हेतु प्रतीक चिन्ह, स्टेज, फोटोग्राफी पर व्यय	=	रु०	4,600.00
11.	दिनांक 26.4.98 के समारोह पर प्रतीक चिन्ह, स्टेज, फोटोग्राफी पर व्यय	=	रु०	4,800.00
12.	होली मिलन, दीपावली मिलन, पिकनिक आदि पर स्थल आरक्षण आदि पर व्यय	=	रु०	3,200.00
	कुल व्यय	=	रु०	57,372.00

Scanned with OKEN Scanner

(स) बैलेंस

कुल प्राप्तियां	=	रु0	2,61,500.00
कुल व्यय	=	रु०	57,372.00
अवशेष	=	**रु0**	**2,04,128.00**
बैंक में जमा एफ०डी० के रूप में	=	रु०	1,80,000.00
सेविंग एकाउंट तथा कैश इनटैंडं	=	रु०	24,128.00

sd
राज बहादुर सिंह
सम्प्रेक्षक

sd
डा० पी० के० पंवार
सचिव (वित्त)

स्मारिका

Scanned with OKEN Scanner

नवीं पंचवर्षीय योजना में कृषि एवं ग्रामीण विकास की रणनीति विषय पर ग्रामीण क्षेत्र अधिकारी कल्याण परिषद द्वारा आयोजित एक दिवसीय संगोष्ठी की संस्तुतियाँ

प्रथम सत्र

कृषि विकास रणनीति –

प्रथम सत्र में कृषि विकास की रणनीति पर चर्चा की गयी। सर्वप्रथम प्रो० अजीत कुमार सिंह ने उत्तर प्रदेश में कृषि विकास की प्रवृत्तियों पर अपना शोध प्रपत्र प्रस्तुत किया। प्रो० सिंह ने इस बात की ओर ध्यान आकर्षित किया कि सत्तर एवं अस्सी के दशक में उत्तर प्रदेश में कृषि उत्पादन के क्षेत्र में संतोषजनक प्रगति हुयी थी, लेकिन नब्बे के दशक में कृषि विकास के क्षेत्र में शिथिलता आयी है जो एक चिन्ता का विषय है। प्रो० सिह ने यह बताया कि 1969–85 के बीच प्रदेश में खाद्यान्न का मात्र 3.64 प्रतिशत प्रति वर्ष की गति से बढ़ा था। लेकिन यह वृद्धि दर 1985–90 की बीच घटकर 2.66 प्रतिशत प्रति वर्ष हो गई और 1990–95 की अवधि में खाद्यान उत्पादन में मात्र 1.76 प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से वृद्धि हुयी थी, जो प्रदेश की जनसंख्या की वर्तमान वृद्धि दर से भी कम है। कृषि क्षेत्र की हाल के वर्षों में असंतोष जनक प्राप्ति के कारणों की व्याख्या करते हुये प्रो० सिंह ने इस बात की ओर ध्यान आकर्षित किया कि 1985 के पश्चात कृषि क्षेत्र में निजी व सार्वजनिक क्षेत्र में निवेश में कमी हुई है और सिंचाई क्षमता की वृद्धि दर में कमी आयी है। कृषकों को व्यापरिक बैंकों के माध्यम से ऋण की पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं कराया गया है। दूसरी ओर उर्वरकों के मूल्य में तीव्र वृद्धि की घोषणा के फलस्वरूप उर्वरकों के प्रयोग में कमी आयी हैं। कृषकों को व्यापारिक बैंकों के माध्यम से ऋण पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं कराया गया है। दूसरी ओर उर्वरकों के मूल्य में तगड़ी वृद्धि की घोषणा के फलस्वरूप उर्वरकों के प्रयोग में कमी आयी, जिसका कृषि उत्पादन की वृद्धि पर स्पष्ट प्रभाव पड़ा। प्रो० सिंह ने इस बात पर भी बल दिया कि उत्तर प्रदेश में अधिकांश कृषक सीमान्त और लघु कृषकों की श्रेणी में है और उनकी जोत अनार्थिक है।

विकसित राज्यों से उत्तर प्रदेश में कृषि की तुलना करते हुये प्रो० सिंह ने यह मत रखा कि वर्तमान तकनीक के आधार पर भी उत्तर प्रदेश में कृषि विकास की पर्याप्त सम्भावनायें है। यह इस तथ्य से स्पष्ट है कि उत्तर प्रदेश में 1994–95 में चावल की औसत उपज 1867 किलोग्राम प्रति एकड़ थी और गेहू की औसत उपज 2508 किलोग्राम। जबकि पंजाब में इन फसलों की औसत उपज क्रमशः 3383 किलोग्राम और 4090 किलोग्राम प्रति एकड़ थी।

डा० सिंह ने प्रदेश के कृषि के तकनीकी पिछड़ेपन को दूर करने के अनेक सुझाव रखे, जिन पर संगोष्ठी में विस्तृत विचार विमर्श हुआ। इस विचार विमर्श में निम्नलिखित बिन्दुओं पर विशेष बल दिया गया।

1. यद्यपि उदारीकरण की नीतियों के द्वारा कृषि व अन्य क्षेत्रों में निजी क्षेत्र को बढ़ावा देने की आवश्यकता है, फिर

Scanned with OKEN Scanner

भी कृषि के पिछड़ेपन को ध्यान में रखते हुये नवीं पंचवर्षीय योजना में भी राज्य सरकार को एक भूमिका निभानी है। सिंचाई, ग्रामीण अवस्थापना, कृषि शोध व प्रसार आदि के क्षेत्र में सार्वजनिक व नि को मिलजुल कर कार्य करना होगा।

2. विशेषरूप से सीमानत और लघु किसानों की कठिनाइयों को दूर करने के प्रयास करने होंगे। ताकि उन्ह खाद उन्नत बीज व अन्य साधन समय से और उचित मूल्यों पर उपलब्ध कराये जा सकें।

3. उर्वरक, खाद्यान्न, सिंचाई आदि पर दिये जाने वाले अनुदानों के सम्बन्ध में एक सम्यक नीति आवश्यकता है। इन अनुदानों को दीर्घकाल में ही समाप्त किया जा सकता है, अन्यथा कृषि की नि हानिकारक प्रभाव पडेगा।

4. उत्तर प्रदेश में कृषि क्षेत्र में क्षेत्रीय व जिले के स्तर पर काफी असमानतायें है, जिनको दूर करने के प्रय होंगे। यद्यपि पश्चमी उत्तर प्रदेश के कुछ जिले तुलनात्मक रूप से कृषि के क्षेत्र में अधिक विकसित हैं यहां भी कृषि विकास के विशेष प्रयत्न आवश्यक है, क्योंकि इन जिलों में भी अधिकांश कृषि जोतें अन गयी है।

5. कृषि अनुसंधान को विशेष बल देने की आवश्यकता है, जिससे प्रत्येक क्षेत्र की स्थिति के अनुरूप तकनीकी पैकेज का विकास किया जा सके। इस सम्बन्ध में पश्चिमी उत्तर प्रदेश में एक, पृथक कृ विद्यालय की स्थापना की आवश्यकता है।

6. कृषि विकास में प्रसार सेवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है, ताकि शोध और फार्म पर उसके प्रयोग के कम किया जा सके। कृषि विभाग का एक विस्तृत प्रशासनिक ढांचा प्रसार सेवा के लिये उपलब्ध उसके कार्य–कलाप की गुणवत्ता आवश्यकतानुरूप नहीं रही है। इस प्रसार व्यवस्था को अधिक उपयोगी बनाने के लिये यह उचित होगा कि कृषि विद्यालयों को प्रसार के लिये उत्तरदायी बनाया कृषकों तथा कृषि विश्वविद्यालयों के सम्बन्धों को प्रगाढ़ किया जाये।

7. कृषि क्षेत्र में आय व रोजगार के अवसरों को बढ़ाने के लिए कृषि विविधीकरण की आवश्यकता है। प्रदान करने वाली फसलों यथा फल, शाक सब्जी, फूल को बढ़ावा देने के लिये सरकार को आवश्य उठाने चाहियें। इसके लिये वांछित शोध, प्रसार, अवस्थापना, बाज़ार, व्यवस्था आदि के क्षेत्र में प्रयास क इस सम्बन्ध में यह ध्यान रखने की बात है कि ऐसे संगठनात्मक कदम उठायें जिससे छोटे कृषकों व प्रकार की खेती का पर्याप्त लाभ मिल सके तथा केवल बड़े कृषकों, व्यापरियों और अन्तराष्ट्रीय कम्पनियों तक कृषि परिवर्तन के लाभ सीमित न रहें। उत्पादन और प्रसंस्करण के क्षेत्र में कृषकों सामूहिक संगठनों की स्थापना की आवश्यकता है।, जिसके लिए राज्य सरकार को उपयुक्त कद चाहिए।

स्मारिका

Scanned with OKEN Scanner

द्वितीय सत्र

प्रदेश में सिंचाई सुविधाओं के विस्तार, उपलब्ध संसाधनों के दक्षतापूर्ण उपयोग व प्रबन्ध व्यवस्था में सुधार :

सिंचाई सुविधाओं के विस्तार तथा उपयोग पर इं० कप्तान सिंह द्वारा अवगत कराया गया कि वर्ष 1953–54 में प्रदेश में शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल 159.5 लाख हेक्टेयर था। यह वर्ष 1992 तक 171.1 लाख हेक्टेयर हो गया, जो अगले दशक तक 197.0 लाख हेक्टेयर तक हो सकता है। जबकि आकलन के अनुसार सन् 2000 में खाद्यान्न की आवश्यकता वर्ष 1991 की तुलना में दुगुनी होगी। वर्तमान सिंचाई साधनों से बोये गये क्षेत्र का 60 प्रतिशत सींचा जाता है। खाद्यान्न की आवश्यकता की प्रतिपूर्ति के लिए सन् 2021 में बोये गये क्षेत्र का 200 प्रतिशत सिंचित होना आवश्यक है। इं० कप्तान सिंह द्वारा प्रस्तुत पेपर पर सत्र में हुई चर्चा के बाद निम्न मुख्य बिन्दु संज्ञान में लाये गये :–

1. सम्पूर्ण प्रदेश का बेसिन/सब–बेसिन वार, बड़ी, मझली तथा लघु सिंचाई योजनाओं हेतु विस्तृत सर्वेक्षण कराया जाए।
2. बड़ी, मझली तथा लघु योजनाओं में प्रदेश के भौगोलिक क्षेत्रफल तथा स्थिति को दृष्टिगत रखते हुए अनुपात तय किया जाए।
3. सतही तथा भू जल के प्रयोग में वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा व्यवहारिकता का समावेश किया जाय।
4. राष्ट्रीय जल नीति 1986 का प्रदेश में कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित कराया जाए।
5. यू०पी० कैनाल एवं ड्रेनेज एक्ट, यू०पी० ट्यूबवेल एक्ट, यू०पी० माइनर इरीगेशन वर्क्स एक्ट 1920 तथा यू० पी० प्राइवेट इरीगेशन एक्ट 1920 अब काफी पुराने हो चुके हैं। भू–जल तथा सतही जल के उपयोग को ध्यान में रखते हुए सभी एक्टों को पुनरीक्षित एवं संशोधित किया जाए।
6. जल संसाधन मंत्रालय अथवा परिषद का गठन प्रदेश स्तर पर केन्द्र सरकार की भॉति किया जाए, जिसकी शाखाओं का विस्तार जनपद स्तर तक रखा जाए।
7. पश्चिमी उत्तर प्रदेश में भू–गर्भ जल स्तर के लगातार गिरने से पूर्व में स्थापित नलकूप या तो फेल हो गये हैं या फिर फेल होने की दशा में हैं। इस समस्या के निदान हेतु सबमर्सेबिल पम्प के प्रयोग को बढ़ावा दिया जाए। सबमर्सेबिल पम्पों पर लघु एवं सीमान्त कृषकों को अनुदान उपलब्ध कराया जाए। फेल हुए बोरिगों को प्रदेश सरकार द्वारा शत् प्रतिशत अनुदानों पर, दुबारा कराने की कार्यवाही की जाए।
8. भू–गर्भ के सम्पूर्ण प्रदेश में लगातार गिर रहे स्तर के कारण, भू–गर्भ जल के दोहन पर कार्यनीति बनाते हुए भू–गर्भ जल रिचार्ज की योजनाओं का शासन द्वारा शत् प्रतिशत अनुदान के द्वारा प्राथमिकता पर क्रियान्वयन कराया जाए।

स्मारिका

Scanned with OKEN Scanner

तृतीय सत्र

नवीं पंचवर्षीय योजना में निजी लघु सिंचाई योजना की प्राथमिकता, समीक्षा तथा सम्भावनाओं पर विचार :

इं० राज बहादुर सिंह, अधिशाषी अभियन्ता, लघु सिंचाई द्वारा प्रदेश में बोये गये क्षेत्रफल, औसत वर्षा तथा सिंचाई के उपलब्ध साधनों के तथ्यात्मक आंकड़े उपलब्ध कराते हुए यह बताया गया कि शुद्ध बोये गये क्षेत्रफल का लगभग 60 प्रतिशत भाग ही सिंचित है। जिसमें 40 प्रतिशत सिंचाई सतही जल का उपयोग करते हुए नहरों द्वारा तथा 60 प्रतिशत सिंचाई भू–गर्भ जल का उपयोग करते हुए नलकूपों द्वारा सम्भव हो पा रही है। कृषि उत्पादन में बढ़ोत्तरी के लिए यह आवश्यक है कि सतही वेस्ट वाटर का प्रभावी उपयोग किया जाये, साथ ही भू–गर्भ जल का प्रयोग तकनीकी माप दण्डों के अनुसार प्रयोग किया जाये। नवीं पंचवर्षीय योजाना में लघु सिंचाई योजनाओं को प्राथमिकता दी जाये। क्योंकि यह योजनायें सस्ती हैं तथा इनके क्रियान्वयन में काफी कम समय लगता है। गोष्ठी में हुए विचार–विमर्श के उपरान्त निम्न बिन्दु प्रकाश में आये :

1. नलकूपों के मध्य में निर्धारित दूरी का कड़ाई से पालन, लघु सिंचाई एक्ट बनाते हुए कराया जाये।
2. शासन द्वारा उपलब्ध कराये जा रहे व्यक्तिगत नलकपों पर अनुदान की सीमाओं को वर्तमान परिस्थितियों में संशोधित किया जाये।
3. उथले बोरिंगों के स्थान पर भू–गर्भ जल स्तर में आ रही लगातार गिरावट को दृष्टिगत रखते हुए द्वितीय स्ट्रेटा में गहरी बोरिंग सम्पादित कराई जाये।
4. भू–गर्भ जल के प्रयोग को और तकनीकी बनाया जाए तथा स्प्रिंकलर एवं ड्रिप इरीगेशन के साधनों के प्रचार –प्रसार पर और ध्यान देते हुइ इन्हें शत्–प्रतिशत अनुदान पर लघु सीमान्त कृषकों को उपलब्ध करया जाये।
5. जलागम क्षेत्रों की सीमाओं का निर्धारण करते हुए समेकित एकीकृत विकास की योजनाओं को लागू किया जाये।
6. बिजली की कम उपलब्धता को दृष्टिगत रखते हुए वैकल्पिक ऊर्जा के अन्य श्रोतों सें सिंचाई संसाधनों को संचालित किया जाये।

स्मारिका

Scanned with OKEN Scanner

ग्रामीण विकास से सम्बन्धित कुछ मूलभूत विचारणीय बिन्दु

1. जनसंख्या / प्रतिभा पलायन :

क. ग्रामीण क्षेत्र के आर्थिक एवं सामाजिक रूप से पिछड़ेपन के कारण गांव से शहर की ओर जनसंख्या का निरन्तर पलायन हो रहा है। अध्ययन एवं विशलेषण से विभिन्न दशकों में, वर्ष 1961 को आधार मानते हुए, शहरी जनसंख्या में विभिन्न श्रोतों से वृद्धि का विवरण निम्नानुसार है।

क्रम० सं०	वर्ष	स्थानीय वृद्धि		ग्रामीण क्षेत्र से पलायन के कारण वृद्धि		कुल वृद्धि
		संख्या करोड़	कुल का प्रतिशत	संख्या करोड़	कुल का प्रतिशत	संख्या करोड़
1	1961–71	1.69	65.33	1.04	34.67	3.00
2	1971–81	2.46	48.23	2.64	51.77	5.10
3	1981–91	2.90	50.34	2.86	49.66	5.76
		7.32	52.81	6.54	47.19	13.86

इस प्रकार गत तीन दशकों में शहरी जनसंख्या में लगभग 50 प्रतिशत वृद्धि ग्रामीण क्षेत्र से पलायन के कारण हुई है। इससे देश के समक्ष गम्भीर समस्या उत्पन्न हो रही है। ग्रामीण क्षेत्र से शिक्षित, सम्पन्न एवं महत्वाकांक्षी लोग शहर की ओर आ रहें हैं फलस्वरूप ग्रामीण क्षेत्र की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक हानि हो रही है। प्रतिभा फलायन से स्वाभाविक विकास कुप्रभावित हो रहा है श्रमशक्ति के पलायन से कृषि क्षेत्र प्रभावित हो रहा है। कारीगरों के शहर आने से स्थानीय कुटीर धन्धे कुप्रभावित हो रहे हैं। शहरों के आर्थिक व सामाजिक क्षेत्रों पर अनावश्यक दबाव बढ़ रहा है। शहरों में गन्दी बस्तियों का विस्तार हो रहा है।

ख. यदि देश हित में पलायन की समस्या का निदान करना है तो ग्रामीण क्षेत्र में आर्थिक व सामाजिक सुविधाओं का आधारभूत ढांचा त्वरित गति से खड़ा करना होगा ताकि सामाजिक सुविधाएं गांव में ही उपलब्ध हो सकें, गांव में ही आर्थक विकास के अवसर उपलब्ध हो सकें और गाव के आदमी को शहर की ओर न भागना पड़े।

2 सिकुड़ता आर्थिक तंत्र :

क. हम सभी जानते हैं कि भूमि का क्षेत्रफल निश्चित एवं सीमित है। जैसे जैसे जनसंख्या बढ़ती है प्रति व्यक्ति जमीन की उपलब्धि कम होती जाती है और भविष्य में भी होती रहेगी। किसी भी व्यक्ति की भूमि 25–30 वर्ष

पश्चात् उसके पुत्रों में वितरित होने पर प्रति व्यक्ति आधी या तिहाई रह जाएगी। वर्ष 70–71 में देश में प्रति परिवार 2.28 हेक्टेयर कृषि भूमि थी जो कि वर्ष 85–86 में घटकर 1.68 हेक्टेयर रह गई। वर्ष 1947 में प्रति व्यक्ति कृषि भूमि की उपलब्धि लगभग 1.2 हेक्टेयर थी जो वर्ष 80–81 में घटकर 0.3 हेक्टेयर रह गई। इसके विपरीत शहरी क्षेत्र में स्थिति भिन्न है। व्यवसाय बढ़ने के अवसर जनसंख्या में वृद्धि के साथ बढ़ते हैं। यह देखने में आया है कि जहां शहरी गैर कृषि क्षेत्र का अर्थतन्त्र जनसंख्या वृद्धि के साथ विस्तार पाता है कृषि क्षेत्र का अर्थतंत्र सिकुड़ता है।

ख. अतः यह आवश्यक है कि आर्थिक विकास के कार्यक्रमों की रूपरेखा बनाते समय इस मूलभूत अन्तर को ध्यान में रखा जाए।

3. कृषि का पिछड़ापन :

क. भारत प्राकृतिक दृष्टि से कृषि क्षेत्र में बहुत सौभाग्यशाली है। देश के भौगोलिक क्षेत्रफल का लगभग 60.87 प्रतिशत भाग कृषि के अर्न्तगत है, जबकि एशिया का औसत 42.17 प्रतिशत और विश्व का प्रतिशत 4.89 ही है। इसके अतिरिक्त अपने देश में यदि सिंचाई सुविधा उपलब्ध हो तो बारह महीने फसलें उगाई जा सकती हैं जबकि अधिकांश देशों में जाड़ों में बर्फ जमी रहती है, परन्तु इसके बावजूद हमारे देश की कृषि उत्पादकता अन्य देशों की तुलमा में कम है। वर्ष 86–87 में भारत में खाद्यान्न की प्रति हेक्टेयर उत्पादकता 1.6 टन थी जबकि एशिया में 2.47 टन तथा विश्व की उत्पादकता 2.55 टन थी। यही नहीं अधिकतम उत्पादकता जापान में 0.85 टन प्रति हैक्टेयर थी। किसान की गरीबी, पूजी का अभाव, सहयोगी इन्फ्रास्ट्रक्चर की कमी, कृषि मे भौगोलिक स्थिति के अनुसार विविधता का न होना आदि कम उत्पादन के मूल कारण हैं। राष्ट्रीय आय में कृषि का योगदान विभिन्न वर्षो में 60 से 30 प्रतिशत रहा है जबकि पूंजी निवेश में उसका अंशदान 18.3 से 12 प्रतिशत के बीच रहा है। देश में आज भी अनेक गांव ऐसे हैं जिनके 5 कि0मी० के अन्दर कोई पक्की सड़क नहीं है, मण्डी नहीं है, न गोदाम है, न वेयर हाउसिंग की सुविधा। सिंचाई सुविधाओं की कमी है। बिजली की उपलब्धि बहुत कम है।

ख. ऐसा अनुमान किया जाता है कि देश में लगभग 2.9 करोड़ हेक्टेयर भूमि बिना बोई या बंजर है। परन्तु यह का भूमिहीन छोटे किसानों की सामर्थ्य से बाहर हैं कि इसे प्राप्त कर कृषि योग्य बनाये।

ग. किसान की आय उपजों के मूल्य और कृषि संसाधनों तथा अन्य सामान के मूल्यों के संतुलन पर निर्भर करत है। दुर्भाग्यवश यह सन्तुलन ऋणात्मक रहा है। और उपज के मूल्यों की तुलना में किसान द्वारा क्रय किया जा वाले सामान के मूल्यों में तुलनात्मक रूप से अधिक वृद्धि होती रही है। अतः कृषि क्षेत्र में लगे लोगों की अ गैर कृषि क्षेत्र में लगे लोगों की आय से कम है और यह अन्तर बढ़ता ही जा रहा है। एक मोटे अनुमान अनुसार विभिन्न दशकों में कृषि क्षेत्र और गैर कृषि क्षेत्र में वर्ष 80–81 के मूल्यों पर प्रति व्यक्ति आय/उत्प की स्थिति निम्नानुसार आती है :–

स्मारिका

Scanned with OKEN Scanner

	वर्ष	कृषि क्षेत्र प्रति व्यक्ति वार्षिक आय / उत्पाद रु०	गैर कृषि क्षेत्र प्रति व्यक्ति वार्षिक आय / उत्पाद रु०
1	1961	912.00	4054.00
2	1971	926.00	4645.00
3	1981	981.00	4896.00
4.	1991	1087.00	6672.00

घ. कृषि उपजों के मूल्यों में असन्तुलन को समाप्त कर, कृषि क्षेत्र का पिछड़ापन दूर कर, कृषि का विस्तार कर, व्यवसायिक विधायें / कार्यों का विस्तार कर, वितरण एवं विपणन व्यवस्था कर, पशु संसाधनों का अधिकतम उपयोग कर कृषि व्यवस्था को सुधारा जा सकता है।

4. शिक्षा की स्थिति :

क. वर्ष 1991 की जनगणना के अनुसार देश में शिक्षा की स्थिति निम्नानुसार है :–

	ग्रामीण क्षेत्र	शहरी क्षेत्र	कुल
पुरुष	57.87 प्रतिशत	81.86 प्रतिशत	64.13 प्रतिशत
महिलाएं	30.62 प्रतिशत	64.35 प्रतिशत	39.29 प्रतिशत
औसत	44.69 प्रतिशत	73.08 प्रतिशत	52.21 प्रतिशत

स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षित लोगों की संख्या कम है। देश में कुल 40.55 करोड़ लोग अशिक्षित हैं इनमें से 34.77 करोड़ लोग ग्रामीण क्षेत्र में रहते हैं। ज्यों–ज्यों उच्चतर स्तर पर जाते हैं त्यों–त्यों ग्रामीण क्षेत्र का भाग घटता जाता हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा का विस्तार किया जाए तथा उसके प्रबन्ध में सुधार कर उसे व्यवहारिक बनाया जाए।

5. बेरोजगारी :

क. अप्रैल 1992 में देश में बेरोजगार लोगों की संख्या लगभग 230 लाख थी। अनुमान के अनुसार आठवीं योजना काल तथा 1970–2000 की तुलना में क्रमशः 350 लाख और 360 लाख अतिरिक्त श्रमशक्ति सृजित होने की सम्भावना है। इस प्रकार इस दशक के अन्त में बेरोजगार लोगों की संख्या 940 लाख हो जाएगी जिसमें 70 प्रतिशत से अधिक ग्रामीण क्षेत्र से होंगे। इस समस्या के निदान के लिए 90 से 100 लाख प्रति वर्ष की दर से रोजगार के अवसर सृजित करने होंगे।

स्मारिका

Scanned with OKEN Scanner

ख. यह भी उल्लेखनीय है कि औद्योगिक एवं विर्निमाण के क्षेत्र में रोजगार की वृद्धि दर उत्पादन के परिपे अत्यन्त धीमी रही है। वर्ष 1975–76 से 1985–86 की अवधि में पंजीकृत औद्योगिक इकाईयों में रोजग वृद्धि दर 1.65 प्रतिशत रही जबकि उत्पादन की वृद्धि दर 7.31 प्रतिशत रही। इसी प्रकार विर्निमाण के वर्ष 75–76 में प्रति लाख विनियोजन पर 2.28 व्यक्ति कार्यरत थे। वर्ष 80–81 में यह संख्या घटकर 1.8 वर्ष 86–87 में 0.66 रह गई।

ग. आय का वितरण भी विषमतापूर्ण रहा। कृषि क्षेत्र में जहां 70 प्रतिशत कार्मिक हैं आय की वृद्धि 25 प्रतिशत विर्निमाण क्षेत्र में जहां 9 प्रतिशत कार्मिक लगे हैं आय की बृद्धि 138 प्रतिशत हुई। स्पष्ट है कि कृषि कार्मिकों का अधिक उपयोग तथा कम उत्पादकता है।

घ. इस भयावह स्थिति के निराकरण के लिए आवश्यक है कि कृषि क्षेत्र का विस्तार किया जाए, गांव में व्यवस विघायन कार्यो का जाल फैलाया जाए, ग्रामीण क्षेत्र में कुटीर उद्योग धन्धों का विस्तार किया जाए।

6. आरक्षण :

क. सरकार के द्वारा शिक्षण संस्थाओं एवं राजकीय सेवाओं में आर्थिक एवं सामाजिक रूप से पिछड़े वर्ग के आरक्षण की व्यवस्था की गई हे। इस नीति को और अधिक व्यापक एवं व्यवहारिक बनाने की आवश्य है।ताकि अन्य खेती करने वाले वर्गो को भी इसका लाभ मिल सके।

7. जवाबदेह प्रशासन :

क. प्रजातंत्र में प्रभुसत्ता यद्यपि आम आदमी में निहित होती है तथापि शासन एवं प्रशासन इस प्रभुसत्ता से अधि पाकर अपने अपने क्षेत्रों में उत्तरदायित्व का वहन करता है। वस्तुतः शासन व प्रशासन आम आदमी के जवाबदेह हैं। परन्तु व्यवहार में ऐसा नहीं है। आज प्रशासन तंत्र के सामने आम आदमी का दर्जा नीचा है वह प्रायः मनमाने तरीके से व्यवहार करता है। कदाचित इसका मूल करण यह है कि हमें अपनी प्रशास संस्कृति ब्रिटिश सत्ता से विरासत में मिली है।

ख. आज आवश्यकता इस बात की है कि प्रशासनिक संस्कृति में आमूल चूल परिवर्तन करके विकास पर आध जवाबदेह संस्कृति की नींव डाली जाए। इसके लिए प्रशासनिक सुधार आयोग के गठन की आवश्यकता

इं0 कप्तान सिंह
13, कैनाल कालोनी, लखनऊ
दूरभाष : 218868 (आवास), 398162 (कार

स्मारिका

Scanned with OKEN Scanner

प्रेरणा के अद्वितीय सितारे

स्वर्गीय चौ० चरन सिंह भारत माँ के इने गिने सपूतों में से एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होने स्वतंत्र भारत में गांव और किसान के उचित स्थान की परिकल्पना ही नहीं की, बल्कि उसको मूर्तरूप दने के लिए गहरे चिन्तन के फलस्वरूप देश की आर्थिक योजना के ठोस व स्पष्ट आधार बताये। वैसे तो आजकल कोई भी दल, उसके कार्यकर्ता व नेतागण ऐसे नहीं हैं जो इनके उत्थान की बात न करते हों, परन्तु उनकी कथनी व करनी में बहुत अन्तर है। वह जो करना भी चाहते हैं वे भी कुछ ठोस कार्य करने में अपने को असमर्थ पाते हैं व दफ्तरों की फाइलों के जाल से निकल नहीं पाते।

इस असफलता के दो मुख्य कारण हैं पहला तो यह है कि हम अपनी योजना के विषय में स्पष्ट नहीं हैं। गोल व लुभावने मुहावरों से कार्य नहीं किया जाता, वे तो जनता को शान्त करने को कहे जाते हैं। दूसरी और पहले से भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि योजना जैसी भी हो किन्तु उसका कार्यान्वयन तो सरकारी मशीनरी द्वारा ही होता है।

स्वर्गीय चौ० चरन सिंह ने स्वतंत्रता प्राप्ति के कुछ ही समय पश्चात् इस मशीनरी के पर्याप्त व क्रियाशील होने पर जोर दिया था। उन्होंने तब कहा था कि हमारी राज्य व केन्द्रीय सेवाओं में ग्रामीणों व किसानों का कम से कम पचास प्रतिशत भाग होना चाहिए। कितनी दूरदर्शिता की यह बात तब कही थी, इसको अब हम आज अनुभव कर रहे हैं। इनसे बहुत पहले स्वर्गीय छोटूराम ने भी किसानों व ग्रामीणों को कहा था कि यदि उन्नति करना चाहते हो तो दफ्तरों पर कब्जा करो। उन्होने तो अपने कार्यकाल में इस मशीनरी को ग्रामोन्मुख बनाने का बड़ा प्रयत्न किया व कुछ सीमा तक वे सफल भी हुए। आज हम यह कह रहे है कि देश के बजट का 50 प्रतिशत गांव व कृषि विकास पर लगाया जा रहा है। अपने आप में यह पहले से बहुत बड़ा कदम है परन्तु यदि इसके साथ–साथ राजकीय मशीनरी के सब स्तरों पर हम उसे ग्रामीण आधार व उससे जुड़े हुए व्यक्तियों को नहीं लगायेंगे तो यह कार्यक्रम भी कागज पर ही बन कर रह जायेगा। केन्द्र की सरकार तथा प्रदेशीय सरकार को चाहिये कि जो भी अवसर किसी प्रकार मिले उन्हें इस मशीनरी में इस विचारधारा से व्यक्तियों को फिट करना सुनिश्चित करें। चूंकि सही व्यक्तियों की जानकारी में समय लगता है अतः चाहे पद व अवसर न हो तो भी वे ऐसे व्यक्तियों की जानकारी प्राप्त करते रहें, ताकि जैसे ही अवसर मिले उनको उचित स्थान पर लगा सकें।

स्वर्गीय चौ० चरन सिंह कहा करते थे कि हम कृषि से ग्रामीण जनता को अधिक से अधिक बाहर निकालें और उन्हें कुटीर व लघु उद्योंगों में लगावें। लेकिन यह तभी संभव हो सकेगा जब कुटीर व ग्रामीण उद्योग लाभकारी हों। इनके द्वारा उत्पादन किये गये सामान का मुकाबला बड़े उद्योगों के उत्पादन से नहीं हो सकता। वे सामान इनसे अच्छा तो बनाते ही हैं और उनकी तुलना में खर्चा भी कम होगा इसलिए कुछ समय बाद कितना ही अनुदान मिले यह ठप हो जाते हैं। अतः उनका यह कहना था कि जो माल कुटीर व लघु उद्योगों द्वारा उत्पादन किया जावे वह माल बड़े उद्योगों द्वारा या तो उत्पादित न हो या वह देश में न बिके। वह केवल निर्यात ही किया जाये। इसका परिणाम यह होगा कि इन उद्योगों के माल की खपत देश में पर्याप्त होती जावेगी और ग्रामीण जनता वाकई बेरोजगारी से छुटकारा पा जावेगी।

इसी सम्बन्ध में एक और सम्भावना हो सकती है। कुटीर व लघु उद्योग द्वारा उत्पादित माल ही बड़े उद्यागों का

कच्चा माल बने व इनका उत्पादन अन्तिम व परिष्कृत बड़े उद्योग प्रारंभिक उत्पादन प्रक्रिया में न करें। इससे भी व लघु उद्योग लाभकारी होंगे और भूमि पर भार कम होता जायेगा।

कृषि के सम्बन्ध में जो मुख्य बात स्वर्गीय चौ० चरन सिंह कहा करते थे वह यह है कि कृषि मूल्य व उद्यो उत्पादिक वस्तुओं की कीमतों में सामान्जस्य बना रहे; जो अनुपात उनकी लागतों में है, वही बना रहे। इसर उत्पादकों के मुल्य लाभकारी बने रहेंगे। यदि औद्योगिक उत्पाद की कीमतों में कृषि उत्पादकों की तुलना में अधि होती है, जैसी हो रही है, तो उन्हें वृद्धि के बावजूद हानि होती जावेगी। यही उनके ऋणी बने रहने का एक का

किसानों के ऋणों की माफी कोई दान स्वरूप नहीं मांगी जाती रही हैं, बल्कि उस हानि को पूरा करने मांगी जा रही है, जो कृषि व उद्योग की कीमतों में असंतुलित वृद्धि के कारण हुई। यह दृष्टिकोण हमारे बजट क माफी की योजना में नजर नहीं आता।

राजेन्द्र फौजदार,
सम्पादक–जाट समाज मासिक पत्रि
सी–20, न्यू आगरा,
आगरा–282 005

स्मारिका

Scanned with OKEN Scanner

प्रशासन तन्त्र की कार्यसंस्कृति में परिवर्तन कर उसे दक्ष व जवाबदेह कैसे बनाया जाय

यह लेख मैं आपको इस आशा एवं विश्वास के साथ लिख रहा हूं कि आप इस पर गम्भीरता से मनन करेंगे और अपने विचारों तथा सुझाओं से अवश्य अवगत करायेंगे।

कदाचित आप इस बात से सहमत होंगे कि आज इस देश का आम नागरिक किसी भी सरकारी अर्द्धसरकारी या स्वायत्तशासी विभाग/संस्था की कार्यप्रणाली से सन्तुष्ट नहीं है। उसकी आम शिकायत है कि अधिकारियों तथा कर्मचारियों का रवैया असहायतापूर्ण है, वे अपने उत्तरदायित्वों के प्रति उदासीन हैं, कार्यों के निष्पादन में जानबूझकर विलम्ब किया जाताहै, व्यवहार में संवेदनशीलता तथा मानवीय दृष्टिकोण का अभाव है। चिन्ता का विषय यह है कि आम आदमी का यह असन्तोष समय के साथ घटने के बजाय बढ़ रहा है। यह तो सही है कि लोकतंत्र में आम आदमी की आकांक्षाएं तथा अपेक्षाएं बढ़ी हैं तथा उन्हें शत-प्रतिशत पूरा किया जाना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। परन्तु यह भी सही है कि सरकारी मशीनरी स्वतंत्रता के 50 वर्ष बाद भी ब्रिटिश सत्ता से विरासत में मिली औपनिवेशिक संस्कृति में परिवर्तन कर आम आदमी की समस्याओं एवं आकांक्षाओं से भावनात्मक तथा मानसिक लगाव स्थापित करने और यह विश्वास उत्पन्न करने में विफल रही है कि वह आम आदमी की समस्याओं के निराकरण एवं हितों की सुरक्षा के लिए सक्षम और तत्पर है, वह शासक नहीं सेवक है।

आज हमारा देश गम्भीर आर्थिक व सामाजिक समस्याओं से जूझ रहा है। अतः इस समय एक जवाबदेह कार्यसंस्कृति तथा अच्छी कार्यप्रणाली के बिना इन चुनौतियों का प्रभावशाली तरीके से सामना नहीं किया जा सकता क्योंकि चुने हुए प्रतिनिधियों के द्वारा स्वीकृत नीतियों और कार्यक्रमों को मूर्तरूप देने एवं क्रियान्वित करने में सरकारी मशीनरी की महत्वपूर्ण भूमिका होती हैं। कृषि प्रधान गरीब व विकासशील देश में यह भूमिका और भी बढ़ जाती है क्योंकि राज्य को सामाजिक न्याय व कल्याण के दृष्टिकोण से अनेक कार्यक्रमों के सम्पादन का उत्तरदायित्व भी स्वयं लेना पड़ता है।

प्रायः सेवारत या सेवानिवृत्त अधिकारी व कर्मचारीगण सरकारी मशीनरी की असफलता की जिम्मदारी राजनैतिक नेतृत्व तथा जनता पर डालकर स्वयं को निर्दोष साबित करने का प्रयास करते हैं। परन्तु न तो यह सही है और न ही व्यावहारिक। प्रशासन तन्त्र के अधिकांश सदस्य भारत के आम आदमी से कहीं अधिक शिक्षित और योग्य हैं। एक गरीब और सुविधाविहीन समाज होते हुये भी इन्हें पर्याप्त मात्रा में सुविधाएं एवं अधिकार मिले हैं। यह ऐसी स्थिति मे भी रहे हैं जहां राष्ट्रीय नीतियों और कार्यक्रमों को प्रभावित किया जा सकता है। आम आदमी की सेवा करने के सबसे अधिक अवसर भी उन्हे मिले हैं। अतः देश के करोड़ों अशिक्षित और गरीब लोगों के जीवन स्तर को उठाने का उत्तरदायित्व भी इन्हीं का था और है।

निश्चित रूप से सरकारी मशीनरी की वर्तमान कार्यसंस्कृति में कहीं न कहीं कोई कमी है। जिसको दूर करने

से प्रत्येक व्यक्ति को लाभ होगा। अतः इसके बारे में गहन चिन्तन आवश्यक है। यह चिन्तन एवं विश्लेषण यदि प्रशासन तंत्र के सदस्य ही प्रारम्भ करें तो अधिक उपयुक्त होगा क्योंकि उनकी कार्यप्रणाली के बारे में उनसे अधिक जानकारी किसको हो सकती है। आज शिक्षा, कृषि, इन्जीनियरिंग, चिकित्सा, कानून एवं व्यवस्था, प्रशासन, राजस्व, अनुसंधान नियोजन आदि लगभग सभी सेवाक्षेत्रों में सुधार की गुंजाइश है। अतः प्रत्येक सेवा क्षेत्र में कार्यरत अधिकारी एवं कर्मचारी का कर्तव्य हो जाता है कि वह अपने–अपने सेवा के बारे में पहल करें।

प्रथम तो सेवारत अधिकारियों एवं कर्मचारियों में से प्रत्येक व्यक्ति को यह विचार करना होगा कि वह अपने पद के उत्तरदायित्वों के निष्पादन में किस प्रकार सुधार कर सकता है। ताकि वह अपने स्तर से जन–जीवन के लिये अधिक से अधिक उपयोगी हो सके। आप प्रबुद्ध एवं शिक्षित व्यक्ति हैं। अतः आपसे यह अपेक्षित है कि इस बारे में पहले भी चिन्तन करते रहें होंगे और आगे भी करते रहेंगे।

दूसरे यह विचार करना होगा कि जिस संस्था अथवा सेवाक्षेत्र में आप कार्यरत हैं या रहे हैं या जिन क्षेत्रों के बारे में आपको जानकारी है उनकी कार्यप्रणाली में क्या सुधार किया जा सकता है, नियमों व प्रक्रियाओं में क्या परिवर्तन किया जा सकता है, व्यक्ति के अनुभव व प्रतिभा का अधिकतम् उपयोग किस प्रकार किया जा सकता है, व्यवस्था को किस प्रकार परिणामपूरक व जवाबदेह बनाया जा सकता है और उसकी कार्य संस्कृति को शासक के बजाय सेवक में किस प्रकार बदला जा सकता है निःसन्देह यह एक कठिन कार्य है, परन्तु यदि हम सभी इसके बारे में मिलकर चिन्तन करें तथा प्रयास करें तो सफलता मिल सकती है। यहां यह कहना असंगत न होगा कि, किसी व्यक्ति के चाहें कितने ही अच्छे प्रस्ताव या प्रयास हों, परन्तु वह अकेले अथवा अपने स्तर से उन्हें मूर्तरूप दिलवाने में कठिनाई अनुभव करेगा क्योंकि प्रत्येक व्यवस्था में परिवर्तन का विरोध होता है, परन्तु जब कोई दृष्टिकोण सामूहिक रूप से सामने आता है तो उसे नकारना आसाना नहीं होता।

इस परिषद का यह प्रयास है कि आपके चिन्तन को सामूहिक चिन्तन का रूप देकर प्रशासनिक व्यवस्था में सुधार की दिशा में सकारात्मक व प्रभावी कार्यवाही की जाये। इसलिये हमारा विनम्र अनुरोध है कि कृपया अपने सुझाव/प्रस्ताव यथाशीघ्र भेजने का कष्ट करें ताकि इस देश का आम आदमी, गरीब, किसान उनसे लाभान्वित हो सके।

मुझे यह भी अवगत कराना है कि निकट भविष्य में इस ज्वलन्त एवं महत्वपूर्ण विषय पर "ग्रामीण" संस्थान के द्वारा एक विचार गोष्ठी का आयोजन प्रस्तावित है। इसके कार्यक्रम से आपको अलग से अवगत कराया जायेगा ताकि आपकी भागीदारी से विषयान्तर्गत सुझावों/प्रस्तावों को एक निश्चित रूप दिया जा सके।

मैं अन्त में आपसे पुनः निवेदन करुंगा कि इस विषय पर आप गंभीरता से विचार करें तथा अपने विचारों व प्रस्तावों से हमें मार्गदर्शन प्रदान करें।

शुभकामनाओं सहित

कप्तान सिंह
13, कैनाल कालोनी, लखनऊ
दूरभाष : 218868 (आवास), 398162 (कार्या०)

रोना कोसना हमारी नियति है या विवशता!

एक समय था जब राष्ट्रस्तर के विपक्षी नेताओं द्वारा (जिनमें से कुछ अब सत्ता पक्ष में आ बैठे हैं) यह भविष्यवाणी की जाती थी कि "फैसले सड़कों पर होंगे" तब इन भविष्यवाणियों पर कोई भरोसा नहीं होता था बल्कि शेख चिल्ली के हवाई किले समझकर नजर अंदाज कर देते थे। उसके पश्चात आतंकवाद से ग्रसित हत्याकांडों की खबरों ने कुछ दिनों हमारे दिलों पर हलचल पैदा की। मरने वालों के प्रति सहानुभूति तथा मारने वालों से घृणा उत्पन्न हुई परन्तु कुछ दिन पश्चात् इस प्रकार की खबरें भी अखबारों के प्रथम पृष्ठ की सुर्खियों से हटकर दूसरे तीसरे पृष्ठ के कोने में स्थान पाने लगी। आज कल अखबारों में रास्ता जाम, चक्का जाम, रेल रोका आदि को पढ़कर हमारे ऊपर साधारण सी प्रतिक्रिया होकर हमारे अतीत में विलुप्त हो जाती है। ऐसा क्यों? क्या यह सब जो हो रहा है वह क्षणिक है या किसी भविष्य की कल्पना के आधारिक संस्कार है।

हम भारतवासियों के बारे में ईस्ट इंडिया कम्पनी के राजदूत कर्नल स्लीमन ने अपने संस्मरण में लिखा है कि "भारतवासियों की यह खासियत है कि उन्हे अच्छा से अच्छा शासन दो, सुख और शान्ति दे दो पर वह रोयेंगे अवश्य, अपने भाग्य को कोसते रहेंगे तथा उपद्रव आदि अवश्य करते रहेंगें" उससे भी आगे बढ़कर कर्नल स्लीमन ने प्रशासनिक व सामाजिक व्यवस्था के सम्बन्ध में रामराज्य का उदाहरण देते हुए कहा है कि राम चन्द्र जी का राज्य बड़े सुख तथा शान्ति से चल रहा था कि सीता वनवास, लवकुश से युद्ध आदि का काण्ड हो गया। राम ने अपने भाइयों सहित जल समाधि ले ली। कर्नल स्लीमन से ही मिलते जुलते विचार सत्ता में बैठे उच्चस्तरीय राजनेताओं तथा अधिकारियों के हैं तथा गणित और ज्यामिति के फार्मूले से सिद्ध करने पर जनसाधारण का ऊपरी मन मुहदेखी हां में हां मिलाने लग जाता है। परन्तु जब हम तर्क बुद्धि लगाते हैं तो प्रश्न खड़ा होता है कि हम प्रगति में भी रोते क्यों है? क्यों रोज पुतले जलाये जाते हैं, क्यों रास्ता जाम और अफसरों को घेराव करने वालों की संख्या दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। आज हम क्यों फैसले सड़क पर करना चाहते हैं? क्या आज सच्चे प्रशासन और न्याय से हमारा विश्वास बिल्कुल उठ गया है? या ये सब क्रिया–प्रतिक्रिया हमारे स्वभाव अनुसार स्वतः चालित है, या हमारी असफलता का परिणाम है? यह हमारे भाग्य की विडम्बना है या हमारे कर्मो का फल है? हमारा धर्म है या विवशता? मैं कर्नल साहब तथा इसी प्रकार के भारतवासी लेखकों तथा बुद्धिजीवियों से सहमत नहीं हूं चूंकि यदि केवल भौतिक उपलब्धियां ही विकास और प्रगति की मानक होती, तो हम शायद अंग्रेजों को कभी नहीं निकाल पाते। यदि भौतिकता ही प्रगति का प्रतीक है, तो पिछले 50 वर्षो में भारत की भौतिक उपलब्धियां भी किसी भी तीसरी दुनिया के देशों से कम नहीं है अपितु किन्ही मायनों में तो बहुत आगे है उदाहरणार्थ संयुक्त राष्ट्र संघ के स्वास्थ्य विभाग की रिपोर्ट के अनुसार प्रगतिशील देशों में तीस प्रतिशत मौतें अशुद्ध पेय जल के कारण होती हैं। भारतवर्ष इस दिशा में एक हजार करोड़ रुपया प्रतिवर्ष खर्च कर रहा है। 1967 में लगभग बड़ी माता चेचक की बीमारी से लगभग 20 लाख मौतें होती थी परन्तु आज यह बीमारी नियंत्रण में है। योजना आयोग के अनुसार 1978–79 में गरीबी की रेखा से निचले स्तर का जीवन यापन करने वालों की संख्या 31 करोड़ 84 लाख थी जो कि जनसंख्या वृद्धि के बावजूद 1987 में 21 करोड़ रह गयी बताते हैं। ब्रिटिश शासन काल में औसत आयु 24 वर्ष थी। जो कि अब 50 वर्ष के लगभग है। शहरों की आबादी 18 प्रतिशत से बढ़कर 26 प्रतिशत हो गयी है तथा आजादी मिलते समय 15 प्रतिशत शिक्षित थे अब लगभग 40 प्रतिशत हैं। इस प्रकार ये कुछ आंकड़े ऐसी तस्वीर पेश करते हैं जिनसे

सिद्ध होता है कि हम प्रगति कर रहें हैं परन्तु यह सत्य होते हुये भी साधारण जनमानस के गले नहीं उतरता अर्थशास्त्री और समाजशात्री बुद्धि और प्रगति तथा परिवर्तन और विकास की परिभाषा अलग–अलग करके इन आं से सन्तुष्ट नहीं होते यद्धपि वह यह मानते हैं कि खाना, कपड़ा और मकान जीवन की मूल–भूत आवश्यकताअं साथ–साथ सुरक्षा और कल्याण भी सामाजिक अनिवार्यता है।

जीवन की इन मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति की ओर भी यदि सिंहावलोकन किया जाय तो 1970–7 भारत में अनाज की पैदावार 10 करोड़ 84 लाख टन थी जो कि अब लगभग 15 करोड़ टन से अधिक है। इसी प्र तिलहन और गन्ना की पैदावार में बढ़ोत्तरी हुई है। इस औसत पैदावार के बढ़ने के कारण 1961 में पूर्ति प्रति व्यक्ति ग्राम अनाज की अपेक्षा आज 430 ग्राम है। सूती कपड़े का उत्पादन भी 7 अरब 80 करोड़ मी से बढ़कर 10 अरब करोड़ मीटर हो गया है।

वर्ष 1960 में देश में 40,500 बड़ी फैक्ट्रियां थी जिनमें 3644000 मजदूर काम करते थे और 1450 करोड़ की पूंजी लगी थी तथा 3915 करोड़ रु का सकल उत्पादन था। 1985 में बृद्धि होकर यह संख्या 66900 फैक्ट्री 7870000 मजदूर तथा 54842 करोड़ की पूंजी तक पहुंच गयी जिसमें 106566 करोड़ का उत्पादन हुआ। इस प्रति व्यक्ति औसत आय 2553 रुपये है जबकि 81–82 में मात्र 1636 रूपये थी। इस प्रकार सभी क्षेत्रों के साथ–जनसंख्या तथा मूल्य वृद्धि भी हुई है जिनके कारण समृद्धि में ह्रास हुआ है।

यदि ये भौतिक उपलब्धियां ही प्रगति और विकास के अंतिम लक्ष्य हैं तो अंग्रेज जब भारत में आये थे उस की स्थति और जब भारत से गये हैं (1947) के बीच की स्थिति का हम जायजा लें तो शायद यह उपलब्धियां भी की तुलना में किसी भी प्रकार कम न रहेंगी परन्तु फिर भी हम अंग्रेजों को बर्दास्त नहीं कर पाये? क्यों

यदि भौतिकता ही जनसाधारण का झुनझुना होता तो 1977 में कांग्रेस सत्ता से नहीं हटायी जाती जबकि उपलब्धियां उस समय भी कम न थी।

गुलाम भारत में कच्चे माल को इंग्लैण्ड भेजकर आर्थिक शोषण किया गया था। आज हमारे इंजीनियर डाक्टरों तथा तक्नीशियनों को बाहर भेजकर मानसिक दोहन किया जा रहा है। हमारी सभ्यता को पश्चिम का मोह बनाया जा रहा है। इस प्रकार हम मानसिक रूप से आज भी गुलाम हैं। रामराज्य से लेकर आज तक हमारा रोना कं किन कारणों से और क्यों रहा? क्या राम राज्य में हम आज की भांति महंगाई, पानी व बिजली के लिए रोये थे? क्या रोने कोसने के कारण सीता जी का बनवास हुआ था? या कारण कुछ और थे?

राम राज्य में हम रोये थे सामाजिक मूल्यों की अक्षुणता के लिए और आज के जन और गणतंत्र में हमारी समस्या है क्या इन पचास वर्षो में हमने अपने संस्कृति और सभ्यता की चारदीवारी में सेध लगवाकर उसकी कब्र नही की? क्या आजादी की लड़ाई लड़ते समय जो गणराज्य, जनतंत्र और रामराज्य के सपने संजोये थे उन्हें हम पूर पाये? क्या हमने विदेशी कपड़ों की होली की ज्वाला को अपने ही हाथों से नहीं बुझाया? क्या आज सुरक्षा और क के दो महत्वपूर्ण कर्तव्यों में से राज्य हमें सुरक्षा की गारंटी दे सका है? आज हमारी सभ्यता व संस्कृति के मानव सामाजिक मूल्यों पर विदेशी आस्था दिन पर दिन घुसपैठ कर रही है। राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक विभिन्न रीति रि में अंग्रेजियत का घुसना, विदेशी कम्पनियों को ठेके दिये जाना, विदेशी मशीनरी माल को बाजार देना क्या यह सब ह

Scanned with OKEN Scanner

प्रगति के प्रतीक है? क्या यह सब हमें सर टामस रो और जंहागीर काल का पुर्न–स्मरण दिलाकर कंपायमान नहीं करते?

आज की पीढ़ी सोने, बैठने, खाने–पीने, बोलने चालने से लेकर आधुनिक सुख सुविधा के लिए विदेशी तौर तरीके अपनाकर बड़ा आदमी कहलाने के मोह में भ्रमित हो रही है। हमने यहां तक प्रगति कर ली है कि हमारे बच्चे जो इंग्लैण्ड, अमरीका चले जाते हैं उन्हें देशी पत्नी भी स्तरहीन लगती है। इन 42 वर्षो में हमने जो कल्याण कारी साधन उपलब्ध कराये हैं वे सब पश्चिममुखी आधार लिये हैं। भोगवादी सभ्यता ने आलस्य और उन्माद पैदा किया है जिससे हमारी सामाजिक, परिवारिक, गणतांत्रिक व्यवस्था और सुरक्षा में घुन लग गया है। हमारी जीवन सुरक्षा की गारण्टी देने में प्रशासन नाकामयाब रहा है। जिन कारणों से हमने अंग्रेजों को भारत से निकाला था वे कारण आज भी मौजूद हैं। काले–गोरे का भेद अमीर–गरीब का भेद, शहरी–देहाती का भेद, किसान और व्यापारी का भेद आज भी काले अंग्रेजों द्वारा कायम रक्खा जा रहा है। शहर और गांवों में समानान्तर उपनिवेशक व्यवस्था भी चल रही है। हमें रसगुल्ले परोसे जा रहें है और साथ ही हर रसगुल्ले के साथ जूता भी मारा जा रहा है और यह कहा जा रहा है कि रोओं मत।

इन्ही कारणों से ऐसा लगता है कि हम आगे नहीं बढ़े बल्कि जो कुछ गांव में था उसे भी खो बैठे। हमारी अस्मिता खतरे में है। अच्छी साज–सज्जा करके क्रीम–पाउडर की महक ने हमें भूंखे पेट ऐसे महल में कैद कर लिया है जहां रंगरेलियों से छुटकारा पाकर हमारी ओर देखने भर की किसी को फुर्सत नहीं। आज प्रशासन तंत्र द्वारा लूट–पाट तथा बलात्कार जैसी घटनाऐ आम बात हो गयी हैं। क्या यही सब प्रगति के लक्षण हैं? क्या यही हमारा मानसिक, शारीरिक और अध्यात्मिक विकास है। प्रगति का मापदण्ड केवल खाना कपड़ा ही नहीं हो सकता? खाना–कपड़ा तो जेल में भी निशुल्क मिलता है, भिखारियों को भी मिलता है और कुत्ते–बिल्ली भी पेट भर लेते हैं। खाना–कपड़ा के साथ हमें इज्जत भी चाहिए। इस इज्जत को चौराहे पर खड़ा होकर नीलाम किया जा रहा है जिसे कुछ ही लोग क्रय करने की शक्ति रखते हैं इसलिए रोना कोसना ही हमारे पास रह जाता है। कमजोर ही सदा रोते हैं वही गाली देते है। इसलिए हम रोते और कोसते हैं जैसे बिना रोये मां दूध नही पिलाती वैसे ही बिना चक्का जाम, रास्ता जाम किए शासन भी नहीं सुनता न समझता है, इसलिए भी रोना कोसना हंमारी नियति बन चुका है, हमारा धर्म है, प्रशासन को समझाने की यही भाषाशैली है, जनजागरण की यही राह है, निर्माण का यही मूल है।

परन्तु जो रोया या कोसा जा रहा है वह मानवीय सामाजिक मूल्यों व मर्यादाओं की सुरक्षा के लिए न होकर कुर्सी की छीना झपटी के लिए है, सत्ता की पिपासा तृप्ति के लिए है। इसलिए यह विध्वंसकारी है। रोना भी स्वर में ही अच्छा लगता है अभी हम आपस में ही बेसुरे रो रहे हैं। हम जब स्वर मे रोयेगें तो निर्माण की धारा प्रस्फुटित होगी। प्रतीक्षा करों हमारे लय में रोने की। समय अब बहुत नजदीक है। जब किसान और मजदूर का बेटा जो प्रशासन में बैठा हुआ है, इस दर्द को समझ लेगा उसी दिन देश का भविष्य उज्जवलता की ओर तीव्र गति से निखर उठेगा।

–आर० एस० फौजदार
जिला पंचायत राज अधिकारी (से०नि०)
सी–20, न्यू आगरा,
आगरा–282 005

स्मारिका

"SUCCESS COMES TO THOSE WHO WANT TO SUCCED"

More the competition, more your brain works and more your brain works higher your achievments. What is achievment/certainly it is the success you achiev. Is it said/difir not.

Today is the time of competition. Everyboady wants to excel but it is not easy to l yourself in the limelight of success and fame. At the same time nothing is impossible achievement if one truely wants it, Yes, ways can be different.

Success is a relative term. Every individual measures it from his or her own scale has to stand in his own arena and fight his competitors to win the goal which he has aimed This exercise can be mentaly and physicaly exhausting. But when success knocks at your you start enjoying it bushing behind both the former things.

For us the battle of achievments starts at an very early age. Firstly getting admis in so called reputed educational instititions then keeping academic excellance. A sir housewife is condidered be succesful if she is a good mother, caring wife, warm hostess Man grade his success in the field in which he is working. Everybody cannot become lead star but one who has become, has more potential, it may be natural or attained talent.

Success is a vicious circle, It goes on and on. It is an addiction which hooks to yo strongly that when you do not get it, its whithrawl symptoms are very serious. They sh your health, personal, social and offical life. But we should remember "No pain No gain". has to go through the agony of time to achieve success. There is no short cut method to it. like a fruit tree on the top of the mountain, if you want to eat the fruit go and get it but for your strong determination, healthy brain and body are required. There will be other compet to fulfilling all the above given criterias, then, the only way out is skill. Above given crit plus skill gives you an edge over your colleagues and you will be the first to reach at the t the mountain.

It was rightly said by long fellow in one of his poems - "Be not like a dumb driven c but be there in the strife"

For becoming hero one has to climb the steps which leads to the door of success. are one who should have tact to influence people, cooperation from others, skill of ge sympathy and good wishes, strong will power, sharpness of brain and perfection in your v There talents can be god gifted or attained. But take my word cocktail of these gives y sweet taste of success. A word of caution - It is only for those who will handle it.

Mrs. Anila Singh
A-802, La-Plas Colony
Shafnajaf Road, Luckno

Scanned with OKEN Scanner

Promotion of Entrepreneurship in Rural Areas

Entrepreneurs have always played a leading role in the process of economic development in all places and times. With the innovative spirit an entrepreneur perceives, creates and exploits new profit opportunities thereby unleashing the forces of economic growth. An entrepreneur is a leading change agent who is followed by others.

Entrepreneurship requires unique psychological traits such as innovative spirit, risk taking ability, organisational capacity, thriftiness, hard work, etc. These traits are not easily formed among men nor they are equally distributed in different social groups and communities. It is well known that most of the entrepreneures in India have come up from a limited number of social groups like the Marwaris, Parsis and Gujraties. Entrepreneurship flourished where entrepreneurs are regarded in high social esteem and the social values and environment is conductive for their development.

Conservative and traditional societies do not provide a congenial atmoshpere for the growth of entrepreneurship which leads to their economic stagnation. In India, the best talent has always been attracted to careers in the army, civil services or universities rather than venturing into the field of business or industry. Now with the winds of liberalisation and globalisation of the economy blowing freely, things are fortunately changing, leading to the phenomenal growth of educational institutions in the field of business management which now provides most lucrative job opportunities.

At the same time, we must take note of the fact that these opportunities are being availed of almost exclusively by the Engilsh speaking urban based elites. Rural youths without proper educational background, guidance and resources have been denied their due share in these new fields leading to the problem of educated unemployment in the rural areas which in many cases forces them into unsocial activities like robbery and kidnapping etc.

The problem is specially serious in communities like ours which follow agriculture as the main profession and have little experience of business and industry. With continous sub-division of holdings, the average size of land holding has become economically non viable and can not provide a decent standard of living to the family. In U.P., agriculture accounts for 72.2 percent of the work force. In western districts, this percentage is only slightly less being 54 percent in Meerut and 68 percent in Muzaffarnagar. In these two districts which are regarded

as agriculturally developed, around 82.5 percent of holdings are marginal or small, i.e.
than 2 hectres in size.

In the above context, the future of our community depends on its ability to diversify
economic base as quickly as possible by resorting to new and growing sectors of the econo
Our youth has to be motivated, guided and trained to (i) get salaried employment in diffe
fields, especially in business and industry, and (ii) set up own enterprises to generate employm
for self and others. A large number of schemes of different govt. departments and finan
institutions are operating to provide financial and tachnical assistance to set up industry.
few people of our community are equipped with and motivated to avail of these facilities.

It is, therefore, imperative that we identify and develop the entrepreneurial talent
our youths so that they are not left on the road side in the race for economic progress.
association, i.e. the PARISHAD has been seriously discussing these issues. Some of
suggestions which have come up in this regard are as follows :

(I) Setting up of institutions to provide education in the field of Management, comp
Applications and Engineering with particular focus on the training of rural youth.

(II) To set up entrepreneurship Development Institutions to promote entreprene
talent in our youth and equip them to set up their own enterprises.

(III) To set up centres for dessemination of information about training facilities
various assistance programmes among the community on a wide basis.

(IV) To set up an endowment fund to provide scholarship and financial assistan
merit cum means basis for youth to take up admission in existing management/Tech
training institutions in the country.

As leading entrepreneurs of our community, you have made a mark in the fie
business and industry. We seek your active advice and assistance in the various progran
we hae outlined. We are sure of your co-operation for this noble cause in the service o
community.

Dr. Ajit Kumar Sing
Proffessor
Girl Institute, Luckno

5- Tilak Marg
Lucknow
Ph. : 273846

Scanned with OKEN Scanner

THE ANCIENT SCIENCE AND ART OF PRANIC HEALING

WHAT IS PRANA ? : Prana means energy the vital energy of life force that forms an outer layer to the physical body in all life forms. This is called "KI" in Japanese, "Chi" in Chinese, "peneuma" in greak and "Rush" in hebrew. It is an invisible energy field or bioplasmic force that surrounds the body. It is more universally known as the "energy body" or "aura". In yoga, we call it the "Pranamaya Kosha" as distinct from the physical body the "Annamaya Kosha". This aura is invisible to the naked eye, though persons with clairvoyant abilities are able to see it. Scientific research is being conducted in many countries to further investigate the nature and character of the "aura". Krilian photography has already documented the "aura" through high frequency photography.

PRANA AND HEALING : The energy body and the physical body are closely related, so much so that the energy body is referred to as the "etheric twin" of the physical body. What affects one affects the other. Any disease aiming at the Physical body has to first penetrate the energy body. A disease can be located in the energy body three months before it manifests in the physical body. While medical doctors treat the physical body to cure disease, the pranic healer treats the energy body and thereby effects a cure in the physical body. This is a "no-touch-no-drug" healing system. However, it must be emphasised that Pranic Healing is not meant to replace any system of medicine, but in fact to complement and supplement it.

HOW IS THE HEALING PERFORMED ? : The energy body comprises of the 'Chakras' (which correspond the vital organs in the physical body) and the nadis (which correspond to the blood vessels in the physical body) for perfect health, the Chakras are to be balanced and the Nadis free flowing. Any imblance in the form of under activation or over activation, depletion or congestion of chakras, or block in the nadis causes the Person to fall ill.

The Pranic Healer scans the aura, the chakras and the nadis to determine their condition. Energy "leaks" in Chakras are also detected and scaled. Healing is done by cleansing the affected chakras and nadis by removing the diseased energy and replacing it with fresh vital energy, restoring the patient to good health.

WHERE DOES THE ENERGY COME FROM ? : The energy for healing is secured from the three vital natural elements - air, sun and ground prana. The fourth element is Divine prana which is received by the healer through his spiritual chord called "Anthakarna" in yogic terminology.

WHAT CAN PRANIC HEALING CURE ? : Pranic Healing can be used to heal, alleviate and prevent all kinds of physical, emotional and mental diseases. The following gives an illustration (not exhaustive list of examples) of ailments that are amenable to Pranic Healing.

PHYSICAL AILMENTS : Haemorrhages, migraine, Impaired vision or hearing, Respiratory diseases, sinus, asthma, Cardiac Diseases, Gall Bladder-Stones ulcer, Stomach Disorders, Hepatitis, liver infections, Renal failure, kidney disorders Arthritis reheumatism,

Scanned with OKEN Scanner

Skin diesases and Psoriasis, Gynaecological Problems, Hypertension, Diabities, Cancer, Inju cuts, wounds, fractures, Paralysis, Spinal injuries, scoliosis, Spoundylitis.

EMOTIONAL & MENTAL AILMENTS : Depressions, Psychotic and psychia conditions, Schizophrenia, Mental retardation, Cerebral palsy, Epilepsy all physical ailm have accompanying mental or emotional symptional symptoms and vice versa pranic Hea treats the disease as a whole for total cure.

ENHANCE NASCENT ABILLTIES : Pranic Healing can also enhance phys emotional and mental attributes like character, attitude and strengths of individuals instance increased learning ability and intellect of children and performance of athletes soprts persons.

PREVENTIVE HEALING : One of the greatest benefits of pranic Healir preventive Healing. As mentioned earlier the Pranic Healer is able to detect discase befo manifests in the physical body and eradicate it.

DISTANCE AND SELF HEALING : Another very powerful aspect of Pranic Hea is the ability to heal without the physcical presence of the Patient, it also empowers the h to heal himself.

ORIGIN OF PRANIC HEALING : Pranic Healing has its origin in time immem Our ancient Rishis, Chinese Taoists, Tibetan Monks among others have been using 'Pra energy in healing, However, the system has been shrouded in mystery since it was taugh practised secretively and selectively for fear for misuse. That the mystique of "Aura" familiar since ancient times is evident from the fact that portraits of Deities and S belonging to almost every race or religion show light surrouding their head, enveloping bodies or even emerging from their palms. These are all depictions of energy. These an techiques have been carefully researched and developed into a thoroughly documented sc and art form at the world Pranic Healing Foundation set-up by Master Choa Kokk S Manila, Philippines as a non-profit, Charitable, non-sectarian research institution.

TRAING IN PRANIC HEALING : Any person of average intelligence can be and effective Pranic Healer after participation in a two-day basic Workshop and can bec proficient Pranic Healer after participating in three day Advanced & Psych therapy Works In Lucknow 700 Pranic Healers (Comprising serving & retired administrators. engi doctors, teachers, businessmen, students & housewives) have taken the training and ma them are providing rapid relief to patients suffering from simple and complicated ailm

Be a Pranic Healer - Attain Psysical Mental & Ecotional Harmony

A-16, Avas Vikas Colony
Mall Avenue
Lucknow - 226001
Ph. : 223205

Bijendra Singh
Gayatri Upchar Kend
11, Akrit Tower
V. S. Marg, Lucknov

स्मारिका

Scanned with OKEN Scanner

विगत कार्यवाही का लेखा जोखा

दिनांक 17.11.96 के प्रथम अधिवेशन में परिषद की विधिवत कार्यकारिणी का गठन हुआ और कार्यकारिणी द्वारा परिषद के सुदृढीकरण के साथ–साथ उद्देदश्यों की प्राप्ति हेतु व्यवस्थित रूप में प्रयास किये गये।

सर्वप्रथम कार्यकारिणी द्वारा सदस्यों की संख्या बढ़ाने पर बल दिया गया तथा सदस्य संख्या को दोगुने से अधिक के स्तर तक पहुंचाया गया। सदस्यता बढ़ाने का कार्यक्रम अभी जारी है और अंतिम सदस्य को शामिल करने तक का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

समाज के जाने माने उद्यमियों को चिन्हित कर उनके विचार, मार्गदर्शन एवं प्रेरणा प्राप्त करने की दिशा में लखनऊ में 3.6.97 को समारोह आयोजित कर उन्हें आमंत्रित किया गया। समारोह में पधारी मुख्य उद्यमी श्रीमती रीता सिंह द्वारा समाज में नवयुवकों को बड़े उद्यमों के सहायक उद्यम लगाने तथा व्यवसायिक दृष्टिकोण को बढ़ाने हेतु प्रशिक्षण पर बल दिया। इच्छुक नवयुवक मार्गदर्शन हेतु कार्यकारिणी सदस्यों से सम्पर्क कर सकतें हैं।

परिषद द्वारा नवी पंचवर्षीय योजना में ग्राम्य विकास के परिप्रेक्ष्य में गन्ना संस्थान दालीबाग, लखनऊ में सेमिनार आयोजित किया गया। इसमें अपने अपने क्षेत्र के व्यस्थापित व्यक्तियों द्वारा विचार पत्र प्रस्तुत किये गये। इनकी समीक्षा एवं उसके उपरांन्त प्राप्त किये निष्कर्षों को इस स्मारिका में समावेशित किया गया है। अधिक जानकारी के लिए सेमिनार में प्रस्तुत प्रपत्र परिषद के पदाधिकारियों से प्राप्त किये जा सकते हैं।

समाज के वर्ष 1998 में नवनिर्वाचित संसद सदस्यों का अभिनन्दन एवं उनके विचार और मार्गदर्शन प्राप्त करने के उद्देश्य से, अप्रैल 98 में, समारोह आयोजित किया गया। सांसदगण सर्व श्री शमशेर सिंह सुरजेवाला, श्री राम चन्द्र बेदा, श्री सोहनवीर सिंह एवं श्री तेजवीर सिंह के अतिरिक्त माननीय मंत्रीगण उत्तर प्रदेश सरकार श्री सरदार सिंह एवं चौधरी लक्ष्मी नारायण तथा आदरणीय समरपाल सिंह सदस्य विधान सभा उ० प्र० द्वारा समारोह में भाग लेकर विस्तृत विचार विमर्श एवं चर्चा में भाग लिया गया। सभी अतिथिगणों द्वारा परिषद के गठन और इसके उद्देश्यों की सराहना करते हुए इसके प्रसार एवं सुदृढीकरण की आवश्यकता बताते हुए सदस्य संख्या बढाकर इसे और प्रभावी ढंग से समाज

की बात उठाने योग्य बनाने का आहवान् किया।

इसके अतिरिक्त आपसी मेलजोल एवं सौहार्द बनाने की दिश में परिषद द्वारा स्
पर परस्पर मिलन कार्यक्रम आयोजित कर आपसी भाईचारे को बढ़ाने एवं एक दूसरे
जानने के अवसर पैदा किये गये।

परिषद के पदाधिकारियों द्वारा दिसम्बर 98 में परिषद के फैलाव एवं बढावे के उद्
से डा. नवाब सिंह जी, सेवानिवृत संयुक्त निदेशक पशुपालन विभाग, के संयोजन से अ
में तथा श्री गंगाराम सिंह, अधिशासी अभियन्ता लघु सिंचाई, के संयोजन से अलीगढ़ में बै
का आयोजन किया गया। इन बैठकों में अनेक स्थानीय सदस्यों द्वारा उत्साह से भाग
गया गया तथा परिषद के उद्देश्यों, वित्तीय एवं सांगठिक स्थिति पर चर्चा करते हुए इ
मजबूती हेतु सधन सदस्यता अभियान चलाने का निर्णय लिया गया साथ ही साथ निर्णय
कि भविष्य में इसी प्रकार क्षेत्रीय बैठक कर परिषद के प्रभाव क्षेत्र का विस्तार किया

इसके उपरान्त परिषद कार्यकारिणी द्वारा 7 फरवरी 99 को लखनऊ में परिष
द्वितीय अधिवेशन आयोजित किये जाने का निर्णय हुआ। अधिवेशन के अवसर पर स्म
के प्रकाशन के माध्यम से परिषद के कार्यकलापों को सभी सदस्यों तक पहुंचाने एवं
के लिए मार्गदर्शन लेने का प्रयास है। परिषद के विभिन्न सदस्यों को भिन्न भिन्न जिम्मेव
अधिवेशन को सफल बनाने के उद्देश्य से सौंपी गयी। आगामी कार्यक्रमों को तय क
विगत की समीक्षा हेतु अधिवेशन में आप सभी की भागीदारी का स्वागत है।

Scanned with OKEN Scanner

माननीय विशिष्ट अतिथियों का स्वागत करते व परिषद का परिचय देते
श्री एस० के० वर्मा, महासचिव

बायें से मंचस्थ विशिष्ट अतिथिगण बायें से श्रीमती सत्यवती,
श्री ओमवीर सिंह, (जे०वी०जी० ग्रुप), श्रीमती रीटा सिंह (उद्योगपति),
श्री यशपाल सिंह, श्री सिरोही (अध्यक्ष), श्री कप्तान सिंह (उपाध्यक्ष),
श्री एस० के० वर्मा (महासचिव)

दिनांक 26-4-98 को नवनिर्वाचित सांसदो के अभिनंदन समारोह में मंच पर आसीन विशिष्ट अतिथगण एवं उपस्थित सदस्यगण

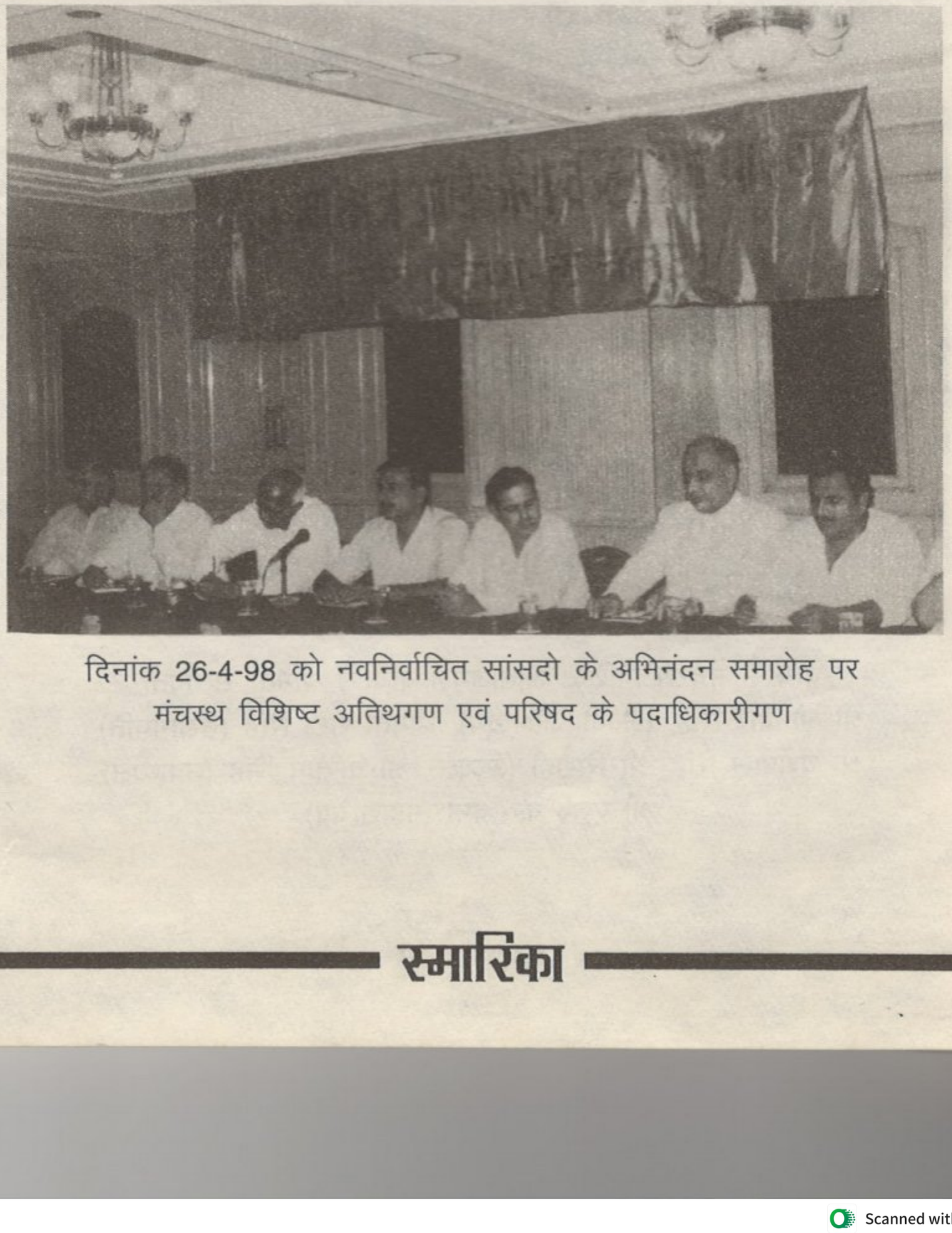

दिनांक 26-4-98 को नवनिर्वाचित सांसदो के अभिनंदन समारोह पर मंचस्थ विशिष्ट अतिथगण एवं परिषद के पदाधिकारीगण

माननीय सांसद श्री शमशेर सिंह सुरनेवाला का माल्यार्पण करते
श्री अरविन्द सिंह पी.सी.एस.

माननीय सांसद श्री रामचन्द्र वेदा को माल्यार्पण करते
श्री बाबूराम अधि० अभि० (लो. नि. वि.)

स्मारिका

Scanned with OKEN Scanner

माननीया श्रीमती रीटा सिंह, उद्योगपति दिनांक 26-4-98 को
परिषद सदस्यों को संबोधित करती हुई।

संगोष्ठी में विचार विमर्श के दौरान हंसी के कुछ क्षण

बायें से माननीय मंत्रीगण उ० प्र० सरकार सर्व श्री सरदार सिंह, श्री वीरेन्द्र सिरोही व श्री चौ० लक्ष्मी नारायण संगोष्ठी में विचार विमर्श करते हुए।

संगोष्ठी में उपस्थित मान० सदस्यगण, ग्रा० क्षेत्र अधिकारी कल्याय परिषद

संगोष्ठी में विचार विमर्श का एक दृश्य

मान० विधायक श्री समरपाल सिंह का माल्यार्पण कर स्वागत करते हुए

स्मारिका

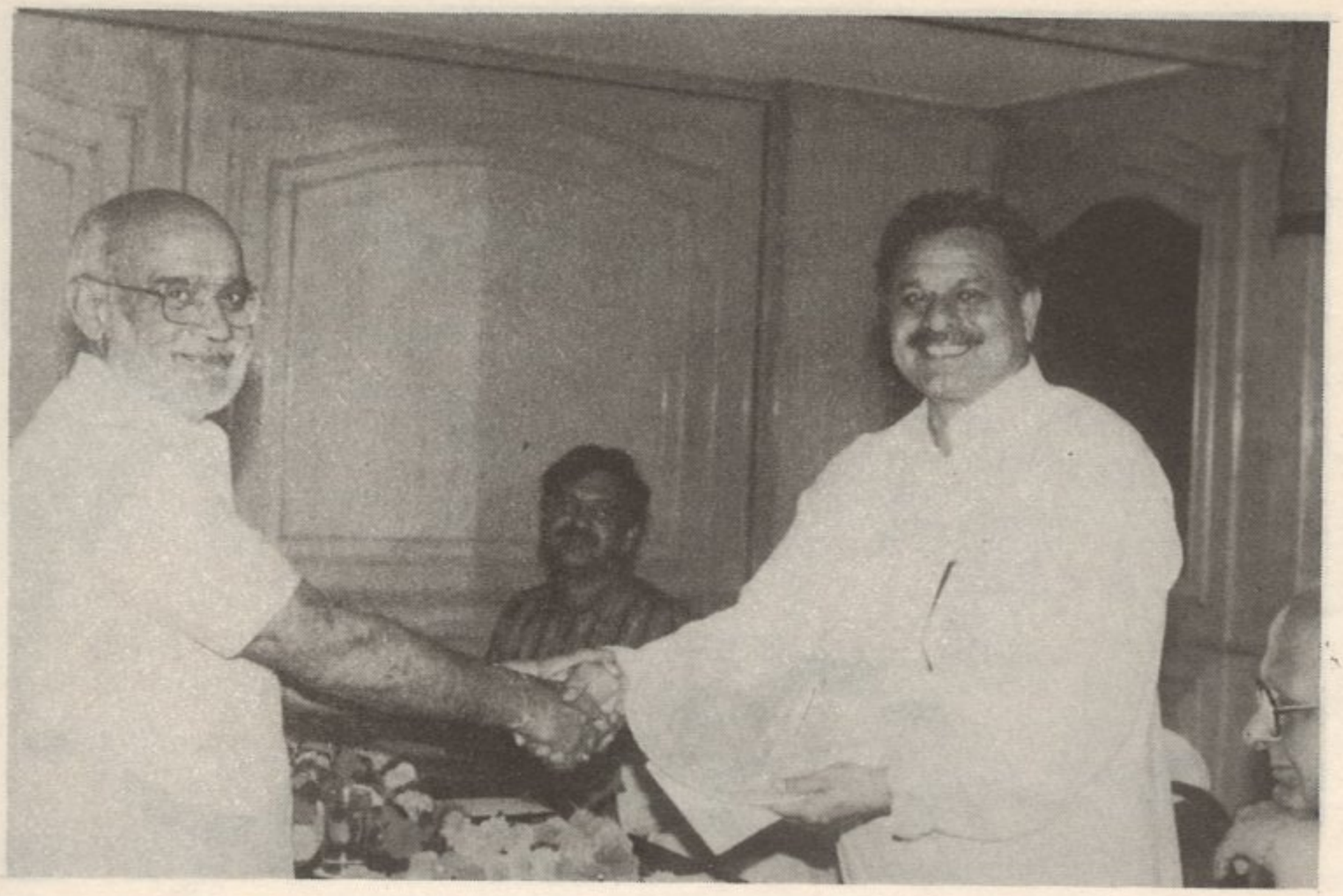

मान० श्री सरदार सिंह, मंत्री वस्त्र उद्योग, उ० प्र० सरकार का
ई० महेन्द्र सिंह, मुख्य अभियन्ता (सिंचाई) सेवानिवृत स्वागत करते हुए

माननीय सांसद श्री सोहन वीर सिंह को माल्यार्पण करते
श्री शैलेन्द्र चौधरी पी.सी.एस.

स्मारिका

Scanned with OKEN Scanner

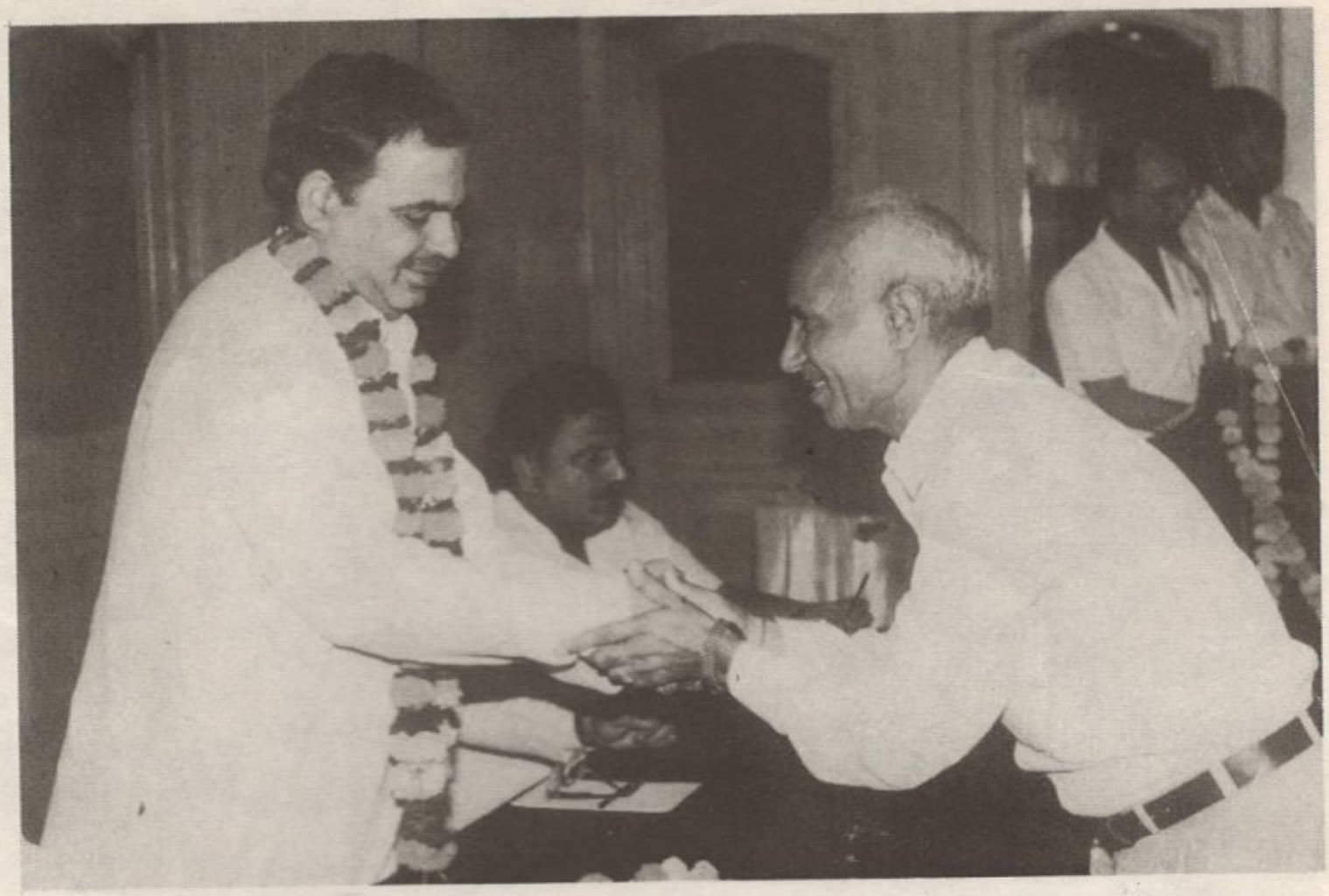

माननीय सांसद श्री तेज बीर सिंह का माल्यार्पण करते
श्री सिवाल (उपनिदेशक कृषि)

अभिनन्दन समारोह में उपस्थित सदस्यगण

अभिनन्दन समारोह में उपस्थित सदस्य एवं परिवारगण

दिनांक 26-4-98 को परिषद द्वारा आयोजित
अभिनन्दन कार्यक्रम में सम्मिलित सदस्यगण

दिनांक 26-4-98 को परिषद द्वारा आयोजित
अभिनन्दन कार्यक्रम में सम्मिलित सदस्यगण

निर्देशिका के तृतीय संस्करण के सम्बन्ध में .....

प्रबन्धकारणी समिति की दिनांक 16 जनवरी, 1999 को हुई बैठक में लिए गये निर्णय के अनुरूप 'निर्देशिका' का तृतीय संस्करण आपके समक्ष प्रस्तुत है। द्वितीय संस्करण के प्रकाशन के बाद अनेक अधिकारियों के परिषद से जुड़ने एवं काफी संख्या में सदस्यों के स्थानान्तण/पदोन्नति के फलस्वरूप तृतीय संस्करण का प्रकाशन आवश्यक हो गया था।

प्रबन्धकारिणी समिति में लिए निर्णय के अनुरूप इस संस्करण में अनुक्रमणिका न देकर केवल सदस्यों की सूची अंग्रेजी वर्णमाला क्रम में Sur name wise / Last name wise दी गई है।

निर्देशिका के इस संस्करण का प्रकाशन श्री राजगोपाल सिंह वर्मा, उप निदेशक, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग तथा श्री नन्द राम सिंह, सहायक निदेशक, कृषि विभाग एवं अन्य सदस्यों के सहयोग से ही सम्भव हो सका है। निर्देशिका को अद्यावधिक एवं त्रुटिरहित छपवाने का पूर्ण प्रयत्न किया गया है, फिर भी यदि कोई त्रुटि पाई जाती है तो मैं उसके लिये क्षमाप्रार्थी हूँ।

सदस्यों से अनुरोध है कि परिषद के हित में एवं निर्देशिका की उपयोगिता बनाये रखने के उद्देश्य से अपने पदनाम, पता, दूरभाष, आदि में वांछित संशोधन की सूचना महासचिव या सचिव, संगठन को यथाशीघ्र अवश्य भेजने का कष्ठ करें ताकि भाविष्य में प्रकाशित किये जाने वाले पाकेट बुक संस्करण में अद्यावधिक जानकारी दी जा सके।

अनिल राज कुमार
सचिव, संगठन
7-2-99

स्मारिका

Scanned with OKEN Scanner

क्र.सं.	*नाम, पदनाम व कार्यालय का पता (दूरभाष सहित)*	*वर्तमान आवासीय पता (दूरभाष सहित)*
1.	**डा. यशपाल सिंह** आई.ए.एस. राज्य निर्वाचन आयुक्त, (पंचायत एवं स्थानीय निकाय) राज्य निर्वाचन आयोग, उ.प्र., 23–सी, गोखले मार्ग, लखनऊ दूरभाष : 283446, फैक्स : 273621	ए–6, दिलकुशा कालोनी, लखनऊ दूरभाष : 214920
2.	**श्री कप्तान सिंह** महाप्रबन्धक उ. प्र. प्रोजेक्ट एवं ट्यूबवेल नलकूप निगम इंदिरा नगर, लखनऊ दूरभाष : 398162	13, कैनाल कालोनी, कैन्ट रोड, लखनऊ – 226 001 दूरभाष : 218868
3.	**श्री सुरेन्द्र कुमार वर्मा** अधिशाषी अभियन्ता, लघु सिंचाई विभाग, लखनऊ दूरभाष : 322115	ए–1/13, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ – 226 010 दूरभाष : 392809, 394255
4.	**श्री बाबू राम** अधिशाषी अभियन्ता, लो.नि.वि., मेरठ दूरभाष : 0121–647814	बी–16, पी.डब्लू.डी. कालोनी, (मवाना बस स्टैंड के सामने) मेरठ दूरभाष : 0121–543545
5.	**श्री तेजपाल सिंह** आई.ए.एस.	के. वी.–22, कवि नगर, गाजियाबाद दूरभाष : 0575–721696
6.	**डा. मथान सिंह** अपर निदेशक (से.नि.) पशुपालन विभाग	ग्रा. व पो. पचेंडा, गांधी कालोनी, मुजफ्फरनगर दूरभाष : 0131-411168, 412263
7.	**डा. प्रमोद कुमार पंवार** शोध अधिकारी पशु जैविक औषधि, पशुपालन विभाग, लखनऊ दूरभाष : 375365 पी.पी.	बी–1, पशुपालन कालोनी, डालीगंज रोड (निकट आई. टी. चौराहा), लखनऊ दूरभाष : 333394

स्मारिका

क्र.सं.	नाम, पदनाम व कार्यालय का पता (दूरभाष सहित)	वर्तमान आवासीय पता (दूरभाष सहित)
8.	**श्री अनिल राज कुमार** पी.सी.एस. संयुक्त सचिव, उ0प्र0 शासन, ऊर्जा विभाग, कक्ष संख्या 603, बापू भवन, सचिवालय, लखनऊ दूरभाष : 238001 Ext. 4565	ए–802, लाप्लास कालोनी, शाहनजफ रोड़, ल दूरभाष : 283373, 272952 पिन : 2226 00 (2) 1/48, विराम खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ– दूरभाष : 391783
9.	**श्री जगजीत सिंह सिरोही** आई.ए.एस. (से.नि.)	सेक्टर ए, 1034, इन्दिरा नगर, (निकट शालीमा लखनऊ, दूरभाष : 346344
10.	**श्री महीपाल सिरोही** एच.जे.एस. अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश, अलीगढ़	जे–24, जज कम्पाउंड, मलखम नगर, अलीगढ़ दूरभाष : 0571–410452
11.	**डा. राजबल वर्मा** प्रबन्ध निदेशक (से.नि.) उ0प्र0 मतस्य निगम, लखनऊ	सूरज अकादमी, सरधना रोड, कंकरखेड़ा, मेरठ दूरभाष : 0121–555396, 643559
12.	**श्री जयपाल सिंह** अपर आयुक्त (से.नि.), ग्राम्य विकास विभाग	12/648, इन्दिरा नगर, लखनऊ दूरभाष : 342806
13.	**श्री राज बहादुर सिंह** अधिशाषी अभियन्ता, लघु सिंचाई, लखनऊ दूरभाष : 280627	18/373, इन्दिरा नगर, लखनऊ दूरभाष : 345986
14.	**श्री गंगाराम सिंह** अधिशाषी अभियन्ता, लघु सिंचाई, लखनऊ दूरभाष : 280627	24, न्यू आर्य नगर, जेल रोड, मेरठ दूरभाष : 0121-763812
15.	**श्री देवन्द्र सिंह देशवाल** अधीक्षण अभियन्ता, दूरसंचार सिविल, मोतीमहल, कानपुर, दूरभाष : 0512–356700, 356500 फैक्स : 356400	2, टेलीकाम आफिसर्स कालोनी, कैन्ट, कानपुर दूरभाष : 317777

क्र.सं.	नाम, पदनाम व कार्यालय का पता (दूरभाष सहित)	वर्तमान आवासीय पता (दूरभाष सहित)
	श्री सुनील चौधरी तकनीकी अधिकारी, राज्य नागर विकास अभिकरण (सूडा) दूरभाष : 281406, 280029, 281406	1/68, विजय खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ दूरभाष : 392914, 395426
	श्री राम कृपाल सिंह अधिशाषी अभियन्ता, लो.नि.वि., लखनऊ	2/168, विश्वास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ दूरभाष : 392715, 393168
	श्री अजीत चौधरी अधिशाषी अभियन्ता, पैक्सफैड 15/56, इन्दिरा नगर, लखनऊ	1/102, विश्वास खण्ड, गोमतीनगर, लखनऊ दूरभाष : 309861, 309622
	डा. सुधीर पंवार जन्तु विज्ञान विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ दूरभाष : 372803	विश्वविद्यालय परिसर, लखनऊ दूरभाष : 370813
	श्री राम किशन सरोहा अधिशाषी अभियन्ता, लो.नि.वि., मेरठ दूरभाष : 0121-391525	बी–13, पी.डब्लू.डी. कालोनी, मवाना रोड, मेरठ
	डा. नरेन्द्र सिंह वरिष्ठ वैज्ञानिक, सुगरकेन ब्रिडिंग इन्सटीट्यूट, रीजनल सेन्टर, अग्रसेन मार्ग, करनाल हरियाणा–132001 दूरभाष : 0184–262160	725, माडल टाउन, करनाल हरियाणा, पिन – 132001 दूरभाष : 0184–262835
	श्री विजय सिंह मण्डलीय अभियन्ता, यू०पी० एग्रो, लखनऊ दूरभाष : 265544	74, रोहताश इन्क्लेव, फैजाबाद रोड, लखनऊ दूरभाष : 384544
	श्री धर्मपाल सिंह आई. ए.एस. (से.नि.)	बी–92, सेक्टर–14, नोयडा, दूरभाष : 01191-531112, 0575-531112
	श्री (स्व०) सोहन वीर सिंह	
	श्री राजवीर सिंह जूरेल अधीक्षण अभियन्ता, लघु सिंचाई, पौड़ी गढ़वाल दूरभाष : 01368–22077	कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, लघु सिंचाई विभाग बल्लूपुर–गढ़ी रोड (नहर किनारा) देहरादून दूरभाष : 0136–758972

क्र.सं.	नाम, पदनाम व कार्यालय का पता (दूरभाष सहित)	वर्तमान आवासीय पता (दूरभाष सहित)
26.	**श्री विनय मोहन** प्रबन्धक, इफको, 8, गोखले मार्ग, लखनऊ	सी–373, इन्दिरा नगर, लखनऊ दूरभाष : 351077
27.	**श्री महक सिंह** पुलिस उपाधीक्षक क्षेत्राधिकारी, मिश्रिख, सीतापुर दूरभाष : 05865–22222	बी–46, सेक्टर–ई, अलीगंज, लखनऊ दूरभाष : 321310, 05865–22242
28.	**श्री अजय सिंह** महाप्रबन्धक केसा, उ. प्र. राज्य विद्युत परिषद, कानपुर	अवध कुंज, फरीदीनगर, कुकरैल पिकनिक स्पाट लखनऊ दूरभाष : 347381 (2) महाप्रबन्धक आवास कानपुर दूरभाष . 0512-
29.	**श्री हरपाल सिंह** अधिशासी अभियन्ता, सिंचाई विभाग, रूडकी, हरिद्वार,	10, विश्व बैंक परियोजना कालोनी, गणेशपुर, रु दूरभाष : 01332–701105
30.	**श्री हरदन सिंह** सहायक अभियन्ता, सिंचाई विभाग, रूडकी, हरिद्वार,	18, विश्व बैंक परियोजना कालोनी, गणेशपुर, रु दूरभाष : 01332–73274
31.	**श्री राम सिंह** स्थानिक अभियन्ता (से.नि.) राजकीय निर्माण निगम, अलीगढ़	विद्यानगर कालोनी, राम घाट रोड, अलीगढ़
32.	**श्री महेन्द्र सिंह** मुख्य अभियन्ता (से.नि.) सिंचाई विभाग	65, पंचशील पार्क, जी.टी. रोड, (निकट पुलिस प स्टेशन), सहिबाबाद, गाजियाबाद
33.	**श्री सोहन सिंह** उप प्रबन्धक, एच.ए.एल., लखनऊ दूरभाष : 383967 एक्सटेन्शन 38	9/511, इन्दिरा नगर, लखनऊ
34.	**श्री फतह सिंह दहिया** अपर महाप्रबन्धक एच.ए.एल., लखनऊ दूरभाष : 383176, 383967 एक्सटेन्शन 4255	डी–9, एच.ए.एल. टाउनशिप, फैजाबाद रोड, लखन दूरभाष : 350168, 350168

Scanned with OKEN Scanner

क्र.सं.	नाम, पदनाम व कार्यालय का पता (दूरभाष सहित)	वर्तमान आवासीय पता (दूरभाष सहित)
35.	श्री हनुमान सिंह उप महाप्रबन्धक हेलीकाप्टर डिवीजन, एच.ए.एल., बंगलौर - 560017 दूरभाष : 5230671	ग्राम मंगली, जनपद–हिसार, हरियाणा (2) एफ. डी. 26, एच.ए.एल., सीनियर आफीसर्स एन्क्लेव ओल्ड मद्रास रोड, बंगलौर - 560093
36.	श्री आर.एस. निर्वाण महाप्रबन्धक सहकारी बैंक, लखनऊ दूरभाष : 224972	3/76, विकास नगर, लखनऊ दूरभाष : 768699
37.	डा. ओम सिंह वर्मा एडवाइजर I (एडमिनिस्ट्रेशन) आल इंडिया काउंसिल फार टेक्नीकल एजूकेशन इंदिरागांधी स्पोटर्स काम्प्लेक्स, आई. पी. इस्टेट, नई दिल्ली - 110 002 दूरभाष : 3379024 फैक्स : 3379964	
38.	श्री विनय कुमार गिल सहायक जिला विद्यालय निरीक्षक गाजियाबाद	31, विकास विहार, ओल्ड मोहनपुरी, मेरठ द्वारा चौधरी भीम सिंह दूरभाष : 650182 पी. पी. (2) 273, पटेलनगर, शामली, मुजफ्फरनगर
39.	जयकरण सिंह सिवाल उप निदेशक यू0पी0 सीड सर्टिफिकेशन, लखनऊ दूरभाष : 452358, 451639	डी–1269, इन्दिरा नगर, लखनऊ दूरभाष : 346582
40.	श्री कृष्ण पांल राठी मैनेजर, यू0पी0 एग्रो, लखनऊ दूरभाष : 223680	डी–1245, इन्दिरा नगर, लखनऊ दूरभाष : 344574
41.	श्री कृष्ण पाल सिंह महाप्रबन्धक सहकारी बैंक, लखनऊ दूरभाष : 224972 व 213626	1/151, विकास नगर, लखनऊ दूरभाष : 768530
42.	श्री धनपाल सिंह मण्डलीय अभियन्ता (एग्रो) नोयडा दूरभाष : 577568	बी–80, सेक्टर 14, नोयडा, 201301 दूरभाष : 552850

क्र.सं.	नाम, पदनाम व कार्यालय का पता (दूरभाष सहित)	वर्तमान आवासीय पता (दूरभाष सहित)
43.	**डा नवाब सिंह** संयुक्त निदेशक (से.नि.) पशुपालन विभाग	23 ए, अशोक नगर, कोठी मीना बजार, शाहगंज, आगरा दूरभाष : 313399
44.	**श्री ए. पी. सिंह** प्रबन्धक एच.ए.एल., लखनऊ दूरभाष : 383967	सी–16, एच.ए.एल. कालोनी, फैजाबाद रोड, लखनऊ दूरभाष : 350088
45.	**डा. विक्रम सिंह** सहायक महाप्रबन्धक, नाबार्ड, 3 सेक्टर 34 ए, चंडीगढ़	5516/3, माडर्न हाउसिंग कामप्लेक्स, मनी माजर चण्डीगढ़
46.	**श्री कुलतार सिंह चौधरी** निदेशक एण्ड सलाहकार (से.नि.) अर्थ एवं संख्या विभाग, लखनऊ	ई–29, पल्लवपुरम, फेस–एक, मोदीपुरम, मेरठ
47.	**श्री रनवीर सिंह** पुलिस उपाधीक्षक लखनऊ दूरभाष : 382820	35 बटालियन, पी.ए.सी., महानगर, लखनऊ (2) ए–403, इन्दिरा नगर, लखनऊ दूरभाष : 384953
48.	**श्री एस. एस. रावत** सहायक अभियन्ता लघु सिंचाई विभाग एटा दूरभाष : 400183	आवन्तिका कालोनी, रामघाट रोड, अलीगढ़ दूरभाष : 401082
49.	**(स्व०) श्री आनन्द सिंह**	
50.	**(स्व०) श्री अजीत सिंह सिरोही**	
51.	**श्री धर्मवीर सिंह** मुख्य क्षेत्रीय अभियन्ता यू0पी0एस0ई0बी0, आगरा क्षेत्र, आगरा	हाईडिल कालोनी, आगरा
52.	**श्री नन्द राम सिंह** सहायक निदेशक कृषि भवन, लखनऊ दूरभाष : 282831, 282832 एक्सटै. 433	ए–1403, ओ.सी.आर. कम्पाउन्ड विधानसभा मार्ग, लखनऊ दूरभाष : 227628

क्र.सं.	नाम, पदनाम व कार्यालय का पता (दूरभाष सहित)	वर्तमान आवासीय पता (दूरभाष सहित)
53	श्री वेद प्रकाश सिंह सरोहा समन्वय अधिकारी राज्य योजना आयोग, योजना भवन, लखनऊ दूरभाष : 214790	ए–804, ओ.सी.आर. कम्पाउन्ड विधानसभा मार्ग, लखनऊ दूरभाष : 270926
54	श्री जयपाल सिंह चौहान प्रक्षेत्र प्रबन्धक केन्द्रीय उपोषण उद्यान संस्थान रहमान खेड़ा, लखनऊ दूरभाष : 298212	44–शालीमार गार्डेन, इस्माइलगंज निकट सेक्टर–8, इन्दिरानगर, लखनऊ दूरभाष : 352795
55	महेन्द्र सिंह आर्य उपनिदेशक उ0प्र0राज्य बीज प्रमाणीकरण, कानपुर	
56	श्री अरविन्द कुमार ढाका वरिष्ठ प्रबन्धक भूमि सुधार निगम, पिकप भवन, गोमतीनगर, लखनऊ दूरभाष : 305270	ए–1202, ओ.सी.आर. कम्पाउन्ड, विधानसभा मार्ग लखनऊ दूरभाष : 214640
57	श्री विजेन्द्र सिंह पूर्व प्रबन्धक एच. ए. एल. लखनऊ	ए–16, आवास विकास कालोनी माल एवेन्यु, लखनऊ दूरभाष : 223205
58	श्री जय भगवान डिप्टी मैनेजर, कस्टमर सर्विस डिवीजन स्कोप काम्प्लेक्स, कोर नं० 6 फर्स्ट फ्लोर, 7, लोधी रोड, नई दिल्ली दूरभाष : 4362292	
59	डा राजेन्द्र सिंह सांगवान वरिष्ठ वैज्ञानिक केन्द्रीय औषधिय एवं सगंध पौधा संस्थान (सीमैप), लखनऊ – 15 दूरभाष : 342676 एक्सटै. 257	डी–15, सीमैप कालोनी, सुगंध विहार विकास नगर, सेक्टर–7, लखनऊ दूरभाष : 385589

क्र.सं.	*नाम, पदनाम व कार्यालय का पता (दूरभाष सहित)*	*वर्तमान आवासीय पता (दूरभाष सहित)*
60.	**श्री डोरी लाल वर्मा** अपर निबन्धक (से.नि.) सहकारिता विभाग दूरभाष · 323383	बी–15, हर्ष विहार, अलीगंज, लखनऊ दूरभाष : 385589
61	**श्री धर्मवीर सिंह** जिला पंचायत राज अधिकारी मेरठ	ए–10, शास्त्रीनगर, मेरठ दूरभाष : 562466
62	**श्री ऋषिपाल सिंह** अपर जिला विकास अधिकारी, गजियाबाद दूरभाष : 724621	जे. ए. –6 पटेल नगर–1, गाजियाबाद
63.	**श्री तेजपाल सिंह** जिला विकास अधिकारी बुलन्दशहर, दूरभाष : 27784	
64	**श्री शैलेन्द्र चौधरी** पी.सी.एस., सचिव, मथुरा वृन्दावन विकास प्राधिकरण, मथुरा दूरभाष : 0765-400660, 406553	पशु चिकित्सा महाविद्यालय परिसर, मथुरा दूरभाष : 410123, 409080
65	**श्री विवेक चौधरी** लेखाधिकारी (डी. आर. डी. ए.), मेरठ दूरभाष : 544352	701, मनोरंजन पार्क, मेरठ दूरभाष : 645308
66.	**श्री वी. पी. सिंह** प्रधानाचार्य आई टी आई दुहाई, गाजियाबाद दूरभाष : 0575–781841	एस ए–90, शास्त्री नगर, गाजियाबाद दूरभाष : 0575–725825
67.	**श्री राजीव कुमार** सहायक अभियन्ता जल निगम, गाजियाबाद	एस ए–90, शास्त्री नगर, गाजियाबाद दूरभाष : 719486

Scanned with OKEN Scanner

क्र.सं.	नाम, पदनाम व कार्यालय का पता (दूरभाष सहित)	वर्तमान आवासीय पता (दूरभाष सहित)
[illegible]	श्री चन्द्रपाल सिंह सहायक अभियन्ता ग्रामीण अभियन्त्रण सेवा, ज्योतिबा फूले नगर, (अमरोहा) दूरभाष : 544337	जी–71, पाण्डव नगर, मेरठ दूरभाष : 641819
[illegible]	श्री ब्रह्म सिंह ढाका अधीक्षण अभियन्ता (हाइडिल) उत्तर प्रदेश राज्य विद्युत परिषद मेरठ दूरभाष : 562599	ए–30, शास्त्री नगर, मेरठ दूरभाष : 560293
[illegible]	श्री सत्यवीर सिंह अधीक्षण अभियन्ता (हाइडिल) उत्तर प्रदेश राज्य विद्युत परिषद मेरठ दूरभाष : 644449	457, चौबे कम्पाउन्ड, पश्चिमी कचेहरी मार्ग मेरठ
[illegible]	श्री इन्द्रजीत सिंह संयुक्त कृषि निदेशक बरेली	टाईप–4/22, आफीसर्स कालोनी, दिल्ली रोड, सहारनपुर दूरभाष : 733301
[illegible]	श्री सुरेन्द्र सिंह सिवाच सहायक अभियन्ता लोक निर्माण विभाग, गाजियाबाद	3–बी–39, नेहरूनगर, गाजियाबाद दूरभाष : 716589
[illegible]	श्री ए. पी. सिंह सहायक अभियन्ता लोक निर्माण विभाग, गाजियाबाद	द्वारा श्री सुरेन्द्र नाथ सिंह सिवाच 3–बी–39, नेहरूनगर, गाजियाबाद
[illegible]	श्री विनय सिंह सिरोही अपर मुख्य नगर अधिकारी, गाजियाबाद	अपर मुख्य नगर अधिकारी आवास जिला परिषद कालोनी, कविनगर, गाजियाबाद
[illegible]	डा. बलराज सिंह पंवार पशु चिकित्सा अधिकारी सहारनपुर दूरभाष : 0132–710165	50–बी, लालबाग, मुजफ्फरनगर दूरभाष : 0132–730243
[illegible]	श्री नेपाल सिंह उप निदेशक सिंचाई विभाग, बिजनौर	ई–14, नई कालोनी कालागढ़, बिजनौर दूरभाष : 86026

क्र.सं.	नाम, पदनाम व कार्यालय का पता (दूरभाष सहित)	वर्तमान आवासीय पता (दूरभाष सहित)
77.	श्री देशपाल सिंह उप क्षेत्रीय प्रबन्धक (इफको) 8, गोखले मार्ग, लखनऊ दूरभाष : 282835	2/334, विकास खण्ड, गोमती नगर, ल दूरभाष : 392962
78.	डा. वी. के. चौधरी मेडिकल आफीसर प्रा. स्वा. केन्द्र, सुनेहरी खड़कड़ी, सहारनपुर	2/918, राम नगर, सहारनपुर दूरभाष : 723802
79.	डा. योगन्द्र सिंह पंवार पशु चिकित्साधिकारी गंगोह, सहारनपुर	द्वारा सहदेव सिंह पवार म. नं. 2 कृषि उत्पादन मण्डी समिति चिलकाना रोड, सहारनपुर दूरभाष : 74
80.	डा. राजवीर सिंह पशु चिकित्साधिकारी सरसावा सहारनपुर दूरभाष : 0132–744656	862, भोपा रोड, हरसौली भवन, मुजफ्फर दूरभाष : 404979
81.	श्री तेजपाल सिंह प्रभारी निरीक्षक, कोतवाली, बरेली	
82.	डा. अजीत सिंह मुख्य चिकित्साधिकारी, बुलन्दशहर	डी–1205/15, इन्दिरानगर, लखनऊ दूरभाष : 341705
83.	श्री बृजपाल सिंह अधीक्षण अभियन्ता, लो. नि. वि.	लोक निर्माण विभाग कालोनी, धामपुर, बिज दूरभाष : 01344–30242
84.	श्री महेन्द्र सिंह सहायक अभियन्ता, लो. नि. वि., लखनऊ बहुखण्डी भवन सचिवालय परिसर दूरभाष : 211528, 238001 Ext. 3037	3/3, टाइप–4, पी. डब्ल्यू.डी. कालोनी, जेल दूरभाष : 440121
85.	डा. यशपाल सिंह राठी निदेशक, प्रशिक्षण एवं सेवायोजन पन्तनगर, विद्यालय दूरभाष : 05948–33816	11/561 जी बी पन्त कृषि एवं प्रौद्यागिकी ऊधम सिंह नगर दूरभाष : 33379

Scanned with OKEN Scanner

क्र.सं.	नाम, पदनाम व कार्यालय का पता (दूरभाष सहित)	वर्तमान आवासीय पता (दूरभाष सहित)
xx	डा. अशोक पंवार जी.बी. पन्त विश्वविद्यालय, पन्तनगर दूरभाष : 05948–33816	पशु विज्ञान विभाग, गोविन्द वल्लभ पन्त कृषि महाविद्यालय, पन्तनगर, ऊधमसिंह नगर दूरभाष : 05948–33816
xx	श्री जगमेर सिंह सहायक अभियन्ता भूगर्भ जल विभाग, लखनऊ	बी–1, 1/1, सेक्टर–के, अलीगंज, लखनऊ दूरभाष : 763210
xx	श्री मामचन्द्र एहलावत अधिशाषी अभियन्ता, सिंचाई विभाग, सहारनपुर दूरभाष : 748105	नलकूप अधिकारी कालोनी, देहरादून रोड, सहारनपुर दूरभाष : 725240
xx	श्री अशोक कुमार राठी अधिशासी अभियन्ता ड्रेनेज मण्डल सिंचाई विभाग, मेडिकल रोड, अलीगढ़ दूरभाष : 400389	जी. सी. 2/11, गंगा कैनाल कालोनी, लाल डिग्गा अलीगढ़ दूरभाष : 0571–400420
xx	श्री रनवीर सिंह अधिशासी अभियन्ता विद्युत अनुरक्षण खण्ड -2, 707, जवाहर भवन, लो. नि. वि., लखनऊ दूरभाष : 280467	ई.एच.–7, गुलिंस्ता कालोनी, लखनऊ दूरभाष : 285969
xx	डा. शंकर सिंह चिकित्साधिकारी राजकीय चिकित्साधिकारी, चिरौलिया अलीगढ़	द्वारा श्री अजीत सिंह रिारोही म. नं. 3, जापान हाउस, मेरिस रोड, अलीगढ़ दूरभाष : 403266
xx	श्री यशवंत सिंह सहायक अभियन्ता सिंचाई विभाग आगरा, दूरभाष : 21151	ए–7, नलकूप कालोनी, चन्ना देवी, अलीगढ़ दूरभाष : 20162
xx	श्री राम सिंह फौजदार जिला पंचायत राज अधिकारी (से.नि.)	सी–20, न्यू आगरा, आगरा – 5 दूरभाष : 51353

स्मारिका

क्र.सं.	नाम, पदनाम व कार्यालय का पता (दूरभाष सहित)	वर्तमान आवासीय पता (दूरभाष सहित)
94.	**श्री राजवीर सिंह** अधिशासी अभियन्ता (से.नि.) सिंचाई विभाग	9/360, टीचर्स कालोनी, बुलन्दशहर दूरभाष : 27059 व 26118
95.	**श्री विजय सिंह** उप निबन्धक सहकारी समितियां सहारनपुर	80, ओल्ड आवास विकास, सहारनपुर
96.	**श्री श्रीगोपाल देशवाल** अधीक्षण अभियन्ता (से.नि.) लघु सिंचाई विभाग, लखनऊ	बी–125, इन्दिरानगर राजकीय कालोनी, (भूतनाथ मंदिर के पास), लखनऊ दूरभाष : 379462
97.	**श्री हरिराज सिंह फोगाट** आई.पी.एस. पुलिस उप महानिरीक्षक चित्रकुट धाम रेंज	प्रगति बिहार, मेरिस रोड, अलीगढ़ दूरभाष : 0571–403767 (2) डी. आई. जी. आवास, चित्रकूट धाम
98.	**श्री सी. पी. एस. एहलावत** आर. एम., पी. सी. एफ. सहारनपुर दूरभाष : 729981	रीजनल मैनेजर, पी. सी. एफ. जैन डिग्री कालेज रोड, सहारनपुर
99.	**श्री अनूप सिंह** अभियन्ता, उप गन्ना आयुक्त कार्यालय, गोरखपुर	अभियन्ता उप गन्ना आयुक्त कार्यालय, कूड़ाघाट, गोरखपुर
100.	**श्री विक्रम सिंह** क्षेत्रीय शस्विद इण्डियन पोटाश लि., गोरखपुर –दूरभाष : 335170	
101.	**डा. यशपाल सिंह** सीनियर रेडियोलॉजिस्ट मुजफ्फरनगर दूरभाष : 420046	जिला चिकित्सालय परिसर, मुजफ्फरनगर दूरभाष : 0131–440641
102.	**डा. ओ. पी. सिंह** जिला मलेरिया अधिकारी सहारनपुर दूरभाष : 0132–727204	464/70, दक्षिणी सिविल लाइन्स, मुजफ्फर दूरभाष : 0131–401375

Scanned with OKEN Scanner

क्र.सं.	नाम, पदनाम व कार्यालय का पता (दूरभाष सहित)	वर्तमान आवासीय पता (दूरभाष सहित)
123.	डा. रवीन्द्र सिंह राणा चिकित्साधिकारी सा. स्वा. केन्द्र., शामली, दूरभाष : 01318–52362	मं नं.–3, टाइप–4, अस्पताल कैम्प, सा. स्वा. केन्द्र, शामली मुजफ्फरनगर, दूरभाष : 01318–53073, 52362
124.	डा. (श्रीमती) अजया राणा चिकित्साधिकारी सा. स्वा. केन्द्र., शामली, दूरभाष : 01318–52362	मं नं.–3, टाइप–4, अस्पताल कैम्प, सा. स्वा. केन्द्र, शामली मुजफ्फरनगर, दूरभाष : 01318–53073, 52362
125.	डा. एस.पी.एस. तोमर पशु चिकित्साधिकारी शामली मुजफ्फरनगर, दूरभाष : 01318–52485	पशु चिकित्सालय शामली मुजफ्फरनगर दूरभाष : 01318–51637
126.	डा. कृष्ण कुमार सिंह पशु चिकित्साधिकारी, गजरौला ज्योतिबा फूले नगर, (अमरोहा)	पशु चिकित्सालय, गजरौला, ज्योतिबा फूले नगर दूरभाष : 403620
127.	डा. श्रीपाल चौधरी पशु चिकित्साधिकारी (से.नि.)	मं. नं. 427, द्वारा तोमर मेडिकल स्टोर्स, झिंझाना रोड, शामली, मुजफ्फरनगर दूरभाष : 51346
128.	डा. आर. के. ढाका सर्जन सा. स्वा. केन्द्र, शामली, मुजफ्फरनगर	चिकित्सालय परिसर, सा. स्वा. केन्द्र, शामली मुजफ्फरनगर, दूरभाष : 52361
129.	डा. एस. पी. सिंह प्रभारी चिकित्साधिकारी भोपा मुजफ्फरनगर	चिकित्साधिकारी प्रभारी प्रा. स्वा. केन्द्र, भोपा, मुजफ्फरनगर, दूरभाष : 40361
130.	श्री वशपाल सिंह पी. सी. एस. (जे) अपर सिविल जज, लखनऊ	ए–7, जजेज कम्पाउन्ड, रिवर बैंक कालोनी, लखनऊ दूरभाष : 221549
131.	श्री सुरेन्द्र पाल सिंह सहायक अभियन्ता लो. नि. वि., सहारनपुर	कार्यालय अधिशासी अभियन्ता प्रान्तीय खण्ड लो. नि. वि., सहारनपुर

स्मारिका

Scanned with OKEN Scanner

क्र.सं.	नाम, पदनाम व कार्यालय का पता (दूरभाष सहित)	वर्तमान आवासीय पता (दूरभाष सहित)
112.	**श्री राजेन्द्र सिंह** आधिशासी अभियन्ता लघु सिंचाई विभाग, इटावा	आफीसर्स फील्ड हास्टल, जिलाधिकारी परिस
113.	**श्री गूलवीर सिंह** आई.ए.एस. (से.नि.)	डिफेन्स कालोनी, मवाना रोड, मेरठ दूरभाष : 0121–551149
114.	**श्री अरविन्द सिंह** पी.सी.एस. उप संचालक चकबन्दी, बस्ती	120–डी, साकेत, मेरठ–250001 दूरभाष : (2) 608, खेलगांव, नई दिल्ली दूरभाष : 011–6492275
115.	**श्री बीरी सिंह** अधिशासी अभियन्ता गाजियाबाद विकास प्राधिकरण, गाजियाबाद दूरभाष : 710029 व 714906 एक्स 224	23, जी डी. ए. आफीसर्स फ्लैट्स, पटेल नगर, 1 ए, गाजियाबाद दूरभाष : 713273
116.	**श्री जयपाल सिंह** सहायक अभियन्ता 309, गंगा सिंचाई भवन, तेलीबाग, लखनऊ दूरभाष : 441327	3/5, सिंचाई कालोनी, रायबरेली रोड, तेलीबाग, दूरभाष : 441528
117.	**डा. राजवीर सिंह** डाइरेक्टर, सेन्ट्रल एवियन रिसर्च इस्टीट्यूट इज्जतनगर, बरेली दूरभाष : 0581–447261	आई. वी. आर. आई. परिसर, इज्जतनगर, बरेली दूरभाष : 0581–447293
118.	**श्री सुरेन्द्र सिंह रावत** अधिशाषी अभियन्ता, निर्माण खण्ड 1, लो. नि. वि., लखनऊ	11/4, टाइप–4, पी. डब्ल्यू. डी. कालानी, लखनऊ दूरभाष : 436055
119.	**श्री राजगोपाल सिंह वर्मा** उप निदेशक, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ. प्र. पार्क रोड़, लखनऊ	ए–801, लाप्लास कालोनी, शाहनजफ रोड, लखनऊ लखनऊ दूरभाष : 217875
120.	**डा. धर्मवीर सिंह** पशु चिकित्साधिकारी रूड़की, हरिद्वार	रूड़की, हरिद्वार

Scanned with OKEN Scanner

क्र.सं.	*नाम, पदनाम व कार्यालय का पता (दूरभाष सहित)*	*वर्तमान आवासीय पता (दूरभाष सहित)*
121.	**श्री हरदेव सिंह चौधरी** सहायक अभियन्ता ऊपरी गंगा नहर आधु. खण्ड–5, अलीगढ़	आवास सं. 111–6/5, विश्व बैंक आफीसर्स कालोनी, बन्ना देवी, अलीगढ़
122.	**श्री धर्मेन्द सिंह चौधरी** अधिशासी अभियन्ता अलीगढ़ विकास प्राधिकरण, मेरिस रोड, अलीगढ़ दूरभाष : 402813	एच. आई. जी.–3, अवन्तिका रामघट, अलीगढ़ दूरभाष : 402646
123.	**श्री चौब सिंह वर्मा** पी. सी. एस. मुख्य विकास अधिकारी, गजियाबाद दूरभाष : 0575–750605	जिलाधिकारी परिसर, गाजियाबाद दूरभाष : 718703, 722238
124.	**श्री माधवेन्द्र सिंह** सहायक अभियन्ता. छावनी परिषद, आगरा दूरभाष : 364575	मं. न.–5, सुभाष नगर कालोनी, नाई की मण्डी, आगरा दूरभाष : 207329
125.	**श्री महेश कुमार** सहायक कार्यपालक अभियन्ता राजीव गांधी भवन, एअरपोर्ट अथारिटी आफ इण्डिया दिल्ली	14–ए, टैगोर नगर, दयालबाग (हीराबाग), आगरा
126.	**श्री श्यामवीर सिंह** सहायक अभियन्ता राष्ट्रीय मार्ग, खण्ड–2, लो. नि. वि., आगरा दूरभाष : 363447	एम–13, लौयर्स कालोनी, आगरा–5 दूरभाष : 351677
127.	**श्री रघुवीर सिंह** सहायक अभियन्ता निर्माण खण्ड–1, लो. नि. वि., झांसी दूरभाष : का0 441502, आ 52442	जी–3, लौयर्स कालोनी, बाइपास रोड, आगरा
128.	**श्री शिव दयाल वर्मा** सहायक अभियन्ता निर्माण खण्ड–1, लो. नि. वि. मथुरा दूरभाष : का 403261, आ 265096	14, दयाल नगर, भोगीपुरा शाहगंज, आगरा

क्र.सं.	नाम, पदनाम व कार्यालय का पता (दूरभाष सहित)	वर्तमान आवासीय पता (दूरभाष सहित)
129.	**श्री जय पाल सिंह पोनिया** अधिशासी अभियन्ता (वि/या) खण्ड लो. नि. वि., बस्ती दूरभाष : का 363470, 3350010	82–टैगोर नगर, दयाल बाग, आगरा–282005
130.	**श्री भैरों सिंह** सहायक अभियन्ता, प्रान्तीय खण्ड, लो. नि. वि. करियप्पा मार्ग, आगरा–282 001 दूरभाष : 363261	37–ए/29/नेताजी सुभाष स्कूल के सामने, आगरा – 282 001 दूरभाष : 263926
131.	**श्री अतुल सिंह** सहायक अभियन्ता कार्यालय अधिशासी अभियन्ता प्रान्तीय खण्ड लो नि वि सहारनपुर दूरभाष : 725096	सी एच–4, पी डब्ल्यू डी कालोनी, बजैरिया रो सहारनपुर दूरभाष : 729903
132.	**श्री इन्द्रपाल सिंह राठी** सहायक अभियन्ता निर्माण खण्ड लो. सि वि, मेरठ दूरभाष : 722492	सी.एच. 2 (लो. नि. वि.) मेरठ
133.	**श्री सत्यवीर सिंह आर्य** पी.सी.एस. सम्भागीय खाद्य नियंत्रक, सहारनपुर दूरभाष : 0132-722878	आफीसर्स कालोनी, सहारनपुर दूरभाष : 0132–761132
134.	**श्री जसवंत सिंह** पुलिस उपाधीक्षक (से.नि.)	सी–95, जिंगर विहार, मुरादाबाद दूरभाष : 315454
135.	**श्री प्रियव्रत आर्य** संयुक्त कृषि निदेशक (से.नि.)	915/1, दक्षिणी सिविल लाइन, मुजफ्फरनग दूरभाष : 401702
136.	**डा. राम पाल सिंह** सहायक निदेशक (मृदा परीक्षण) क्षेत्रीय भूमि परीक्षण प्रयोगशाला दिल्ली रोड, मेरठ	

Scanned with OKEN Scanner

क्र.सं.	नाम, पदनाम व कार्यालय का पता (दूरभाष सहित)	वर्तमान आवासीय पता (दूरभाष सहित)
137.	**श्री योगेन्द्र मलिक** जिला सहायक निबन्धक सहकारी समितियां उ. प्र., मेरठ	
138.	**श्री तेजवीर सिंह तेवतिया** जिला कृषि अधिकारी, मेरठ	बी–15, पी डब्ल्यू डी आफीसर्स कालोनी, (मवाना स्टैंड के निकट), मेरठ
139.	**डा. ब्रजपाल मलिक** पशु चिकित्साधिकारी इन्चौली, मेरठ	पशु चिकित्साधिकारी, इन्चौली, मेरठ दूरभाष : 400072
140.	**डा. खिलारी सिंह** उप निदेशक पशु चिकित्सा, लखनऊ	देवपुरम, मुजफ्फरनगर दूरभाष : 404125
141.	**डा. वालेन्द्र कुमार वर्मा** चिकित्साधिकारी स्टेट आयुर्वेद मुजफ्फरनगर	366, नार्थ सिविल लाइन, मुजफ्फरनगर
142.	**डा. धर्मवीर सिंह** परियोजना अधिकारी (से. नि.)	27/55, कल्याण पुरी, रामबाग, मुजफ्फरनगर
143.	**डा. महिपाल सिंह** अस्थिरोग विशेषज्ञ जिला चिकित्सालय, मुजफ्फरनगर	
144.	**डा. संजय कुमार** चिकित्साधिकारी प्रा. स्वा. केन्द्र, मेधाखेडी, मुजफ्फरनगर	प्रा. स्वा. केन्द्र, मेधाखेडी, मुजफ्फरनगर
145.	**डा. महावीर सिंह फौजदार** प्रभारी चिकित्साधिकारी प्रा. स्वा. केन्द्र, खतौली, मुजफ्फरनगर	राजकीय चिकित्सालय परिसर, खतौली मुजफ्फरनगर दूरभाष : 73666
146.	**डा. श्रीमती आरती फौजदार** प्रभारी चिकित्साधिकारी राजकीय महिला चिकित्सालय, खतौली मुजफ्फरनगर	प्रभारी चिकित्साधिकारी, राजकीय महिला चिकित्सालय मुजफ्फरनगर दूरभाष : 73666

Scanned with OKEN Scanner

क्र.सं.	नाम, पदनाम व कार्यालय का पता (दूरभाष सहित)	वर्तमान आवासीय पता (दूरभाष सहित)
147.	**श्री दिगम्बर सिंह** उप कृषि निदेशक प्रसार मुजफ्फरनगर दूरभाष : 0121–526138	डी. एम. कम्पाउंड, मुजफ्फरनगर दूरभाष : 0121––546355
148.	**इन्द्र पाल सिंह** उप सम्भागीय कृषि प्रसार अधिकारी, सदर मुजफ्फरनगर	कृषि प्रसार परिसर, सूजडू चुंगी, मुजफ्फरन दूरभाष : 401581
149.	**श्री रणधीर सिंह चाहर** पी.सी.एस. उप जिलाधिकारी, बुढाना तहसील, मुजफ्फरनगर दूरभाष : 013963–4123, 4153	तहसील परिसर बुढाना, (2) पी.डब्ल्यू.डी. कालोनी मेरठ रोड, मुजफ्प दूरभाष : 0131–432322
150.	**श्री राम नारायण धामा** उप जिलाधिकारी, खेर, अलीगढ़	
151.	**श्री वीरेन्द्र कुमार मलिक** डी. आर. डी. ए., इटावा दूरभाष : 864573	द्वारा श्री राकेश पालीवाल, 209, पत्ताबाग, कालोनी, इटावा दूरभाष : 385144
152.	**डा. अजीत सिंह** उप निदेशक (से. नि.) पशुपालन निदेशालय	52–डी, आई. टी. आई., रोड, अलीगढ़
153.	**श्री धर्मेन्द्र सिंह** सहायक अभियन्ता ट्यूबवेल कारपोरेशन, इटावा दूरभाष : 864751	1430, सिविल लाइन, इटावा
154.	**श्री महक सिंह** अधिशासी अभियन्ता सिंचाई विभाग, अलीगढ़ दूरभाष : 864953	आर–2/230, राज नगर, गाजियाबाद दूरभाष : 0575–716776, 733459
154.	**(स्व.) श्री तेज पाल सिंह**	
156.	**डा. आर. के. सिंह** आर्युवेद चिकित्सक भूतनाथ मंदिर के सामने, लखनऊ	बी–40, इन्दिरानगर, लखनऊ दूरभाष : 383584

क्र.सं.	नाम, पदनाम व कार्यालय का पता (दूरभाष सहित)	वर्तमान आवासीय पता (दूरभाष सहित)
157.	**नरेन्द्र चौधरी** सहायक अभियन्ता लघु सिंचाई विभाग, कार्यालय मुख्य विकास अधिकारी, विकास भवन, बहराइच	386–के, कानूनगोपुरा उत्तरी, जिला अस्पताल के सामने बहराइच
158.	**श्री बलजीत सिंह दहिया** अधिशासी अभियन्ता / विशेष कार्यधिकारी आवास आयुक्त, उ. प्र. आवास एवं विकास परिषद 104, महात्मा गांधी मार्ग, लखनऊ दूरभाष : 271430	सी–611, इन्दिरा नगर, लखनऊ दूरभाष : 383120
159.	**डा. जगदीश कुमार गहलावत** प्राध्यापक, आई. टी. आई. (से.नि.) रसायनिक अभियन्त्रण विभाग	248, राम कृष्ण विहार, आई पी एक्सटेन्शन, नई दिल्ली दूरभाष : 2418452
160.	**श्री दिगपाल सिंह** संयुक्त निदेशक, कृषि (से.नि.), चंदौसी, मुरादाबाद	रेलवे स्टेशन के सामने, चन्दौसी
161.	**श्री लखपत सिंह** चंदौसी, मुरादाबाद पुलिस उपाधीक्षक (से. नि.)	रेलवे स्टेशन के सामने, चन्दौसी
162.	**श्री सुरेन्द्र सिंह राठी** उप सम्भागीय कृषि प्रसार अधिकारी (से.नि.) ज्योतिबा फूले नगर अमरोहा, मुरादाबाद	
163.	**श्री तेजपाल सिंह तोमर** प्रबन्धक (विपणन) इंडियन फारमर्स फर्टिलाइजर कोआपरेटिव लिमिटेड 8, गोखले मार्ग, लखनऊ दूरभाष : 283760, 283955 व 274267 फैक्स : 283005	डी–1363, इन्दिरा नगर, लखनऊ दूरभाष : 351653
164.	**डा. दिनेश कुमार तोमर** पशु चिकित्साधिकारी नजीबाबाद, बिजनौर	पशु चिकिसालय, नजीबाबाद, बिजनौर

Scanned with OKEN Scanner

क्र.सं.	नाम, पदनाम व कार्यालय का पता (दूरभाष सहित)	वर्तमान आवासीय पता (दूरभाष सहित)
165.	**डा. वृतकर सिन्हा** वरिष्ठ चिकित्साधिकारी जिला चिकित्सालय, बिजनौर	4/4, जिलाधिकारी परिसर, बिजनौर दूरभाष : 01342–63616
166.	**श्री शिव राज सिंह** अधिशासी अभियन्ता विद्युत वितरण खण्ड (प्रथम) बुलन्दशहर दूरभाष : 25527	4/1, हाइडिल कालोनी बुलन्दशहर दूरभाष : 05372–25527
167.	**श्री विनोद कुमार पंवार** पी. सी. एस. अपर जिलाधिकारी (नगर) गोरखपुर दूरभाष : 05732–25362	टाइप IV आवास, (निकट एस.एस.पी. निवास), गाजिया दूरभाष : 0575–710102
168.	**श्री रवीन्द्र कुमार** पी.सी.एस. (जे) सिविल जज, बिजनौर	जजेज कम्पाउन्ड, बिजनौर दूरभाष : 01342–60530
169.	**श्रीमती अनीता राज** पी. सी. एस. (जे) सिविल जज, बिजनौर	तदैव
170.	**श्री अजय कुमार** उप प्रबन्धक दि प्रदेशीय इन्डस्ट्रीयल एण्ड इनवेस्टमेन्ट कारपोरेशन आफ यू.पी. लिमिटेड, पिकप भवन, गोमती नगर, लखनऊ दूरभाष : 391360–70 Ext 366 फैक्स : 0522-391236 Vist us at http : \\www.picup.com	ए–15, पिकप कालोनी, जापलिंग रोड, लखनऊ दूरभाष : 201259
171.	**डा. ईश्वर सिंह नैन** वैज्ञानिक (प्लान्ट फिजोयोलाजी) भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड लखनऊ दूरभाष : 480735–7, एक्स 272	के–89 सी, आशियाना कालोनी, कानपुर रोड लखनऊ . 226 012 दूरभाष : 434333

क्र.सं.	नाम, पदनाम व कार्यालय का पता (दूरभाष सहित)	वर्तमान आवासीय पता (दूरभाष सहित)
172.	**श्री नरेन्द्र सिंह** एस.डी.ओ., हाइडिल मुजफ्फरनगर	हाइडिल कालोनी, सुजडू चुंगी, मुजफ्फरनगर दूरभाष : 405124
173.	**भंवर सिंह बाली** उपनिदेशक पशुपालन विभाग, देहरादून	109, इन्दिरानगर कालोनी, देहरादून दूरभाष : 620646, 625800
174.	**डा. विरेन्द्र कुमार मलिक** प्यारे लाल शर्मा हास्पिटल, मेरठ	बी–55, पल्लवपुरम, फेज–1, मेरठ दूरभाष : 570882
175.	**श्री राम पाल सिंह** मुख्य रसायनज्ञ (चीफ केमिस्ट) उ. प्र. राज्य चीनी निगम, रामपुर	उ0 प्र0 शुगर कारपोरेशन शुगर मिल बरेली रोड, रामपुर
176.	**श्री राजेन्द्र सिंह** पुलिस उपाधीक्षक	आवास क्षेत्राधिकारी पुवायां,
177.	**श्री सतीश कुमार** सहायक अभियन्ता, लो. नि. वि., मुजफ्फरनगर दूरभाष : 409541	17 स्टेट बैंक कालोनी, जानसठ रोड, मुजफ्फरनगर
178.	**रामेश्वर सिंह** सहायक अभियन्ता प्रान्तीय खण्ड, लो. नि. वि., मेरठ	15 प्रयोगात्मक आवास, लो. नि. वि. कालोनी, 218, सिविल लाइन मेरठ दूरभाष : 544987
179.	**अनुराग चौधरी** सहायक अभियन्ता, विकास प्राधिकरण, मेरठ	15 प्रयोगात्मक आवास, लो. नि. वि. कालोनी, 218 सिविल लाइन, मेरठ दूरभाष : 544987
180.	**श्री राम अवतार सिंह** अपर जिला जज सिविल कोर्ट, नैनीताल	जजेज कम्पाउण्ड, नैनीताल दूरभाष : 05942-35430
181.	**योगेन्द्र पाल सिंह** सहायक अभियन्ता लो. नि. वि. मेरठ दूरभाष : 647814	13–प्रयोगात्मक आवास, लो. नि. वि. कालोनी 218, सिविल लाइन, मेरठ दूरभाष : 545999

जियाबाद

क्र.सं.	नाम, पदनाम व कार्यालय का पता (दूरभाष सहित)	वर्तमान आवासीय पता (दूरभाष सहित)
182.	**श्री मनोज कुमार सिंह** सहायक अभियन्ता विकास प्राधिकरण, मेरठ दूरभाष : 645965, 647829	13– प्रयोगात्मक आवास, लो. नि. वि. कालोनी 218 सिविल लाइन, मेरठ दूरभाष : 545999
183.	**श्री विनय कुमार राठी** सहायक अभियन्ता मेरठ खण्ड गंगा नहर, मेरठ	ए–8, सिंचाई विभाग कालोनी, मु.–पल्लवपुरम्, दूरभाष : 5706991
184.	**श्री जितेन्द्र सिंह** अधिशासी अभियन्ता मैट खण्ड, गंगा नहर मथुरा दूरभाष : 403291	मथुरा दूरभाष : 403291
185.	**श्री महीपाल सिंह** अधिशासी अभियन्ता नलकूप खण्ड प्रथम रेलवे रोड, बरेली दूरभाष : 0581–571858	ए-9/117, सर्किट हाउस सर्किट हाउस कम्पाउण्ड, ट्यूबवेल कालोनी, ब दूरभाष : 0581–423981
186.	**श्री अरुण कुमार मलिक** उप आयुक्त व्यापारकर, बिजनौर	1, आर. ए. लाइन्स, तोपखाना, कैन्ट, मेरठ दूरभाष : 646294
187.	**श्री विजेन्द्र पाल सिंह** अतिरिक्त जिला जज रुडकी, हरिद्वार	335/1/29, सिविल लाइन, यूनिवर्सिटी वोट सामने, रुड़की, हरिद्वार दूरभाष : 73306
188.	**श्री ब्रजपाल सिंह** अधिशासी अभियन्ता नलकूप खण्ड, रुड़की, हरिद्वार दूरभाष : 72145	11, सिविल लाइन्स रुड़की, हरिद्वारा दूरभाष : 72105
189.	**श्री योगेश्वर सिंह मलिक** जिला गन्ना अधिकारी रामनगर चौराहा, रुड़की, हरिद्वार	317, आवास विकास रुड़की, हरिद्वार दूरभाष : 76254
190.	**श्री सत्यपाल सिंह** भूमि संरक्षण अधिकारी 101, राजपुर रोड, देहरादून, दूरभाष : 747463	511, आवास विकास कालोनी, रुड़की, हरिद्वार दूरभाष : 71151

Scanned with OKEN Scanner

क्र.सं.	नाम, पदनाम व कार्यालय का पता (दूरभाष सहित)	वर्तमान आवासीय पता (दूरभाष सहित)
131	**डा. मांगेराम मलिक** चिकित्सा अधिकारी संयुक्त चिकित्सालय रुड़की, दूरभाष : 73375	525, आवास विकास कालोनी, रुड़की, हरिद्वार दूरभाष : 70878
132	**श्री राम स्वरूप** मुख्य अभियन्ता (से.नि.) सिंचाई विभाग	
133.	**श्री गिरीराज सिंह** मुख्य अभियन्ता (से. नि.) सिंचाई विभाग	वत्सला, मवाना रोड, डिफेन्स कालोनी के सामने, मेरठ दूरभाष : 550125
134.	**श्री विक्रम सिंह बेनीवाल** अधीक्षण अभियन्ता (से.नि.)	373, प्रभात नगर, मेरठ दूरभाष : 644770
135.	**श्री महेन्द्र सिंह सिवाच** उप कृषि निदेशक कम प्रभारी अधिकारी (से.नि.)	जी–155, पांडव नगर, मेरठ दूरभाष : 649641
136.	**श्री जय प्रकाश सिंह** सम्भागीय कृषि प्रयोग एवं प्रर्दशन केन्द्र, मेरठ दूरभाष : 642087	बी–4, पान्डव नगर, मेरठ दूरभाष : 25430
137.	**श्री ब्रह्म सिंह** अधिशासी अभियन्ता, सिंचाई विभाग कार्यालय मुख्य अभियन्ता, गंगा, मेरठ दूरभाष : 645192	ए–6, बाउन्ड्री रोड, सिंचाई कालोनी, मेरठ दूरभाष : 44676
138.	**श्री राम पाल सिंह** अधिशासी अभियन्ता *परिकल्पना संगठन, रुड़की, हरिद्वार*	19/1, आई. आर. आई. कालोनी, वाया किनारा नहर, रुड़की, हरिद्वार *दूरभाष : 70220*
139.	**श्री ब्रह्मा सिंह** अधिशासी अभियन्ता ओ. ओ. यू.–13, आई. डी. ओ., रुड़की, हरिद्वार	ए–21/4, आई आर आई कालोनी रुड़की हरिद्वार दूरभाष : 71768

Scanned with OKEN Scanner

क्र.सं.	नाम, पदनाम व कार्यालय का पता (दूरभाष सहित)	वर्तमान आवासीय पता (दूरभाष सहित)
200	**श्रीमती मंजू मलिक** प्यारे लाल शर्मा हास्पिटल, मेरठ	बी–55, पल्लवपुरम, फेज–1, मेरठ दूरभाष : 570882
201.	**श्री दिलीप सिंह चाहर** सहा0 अभियन्ता लो. नि. वि., आगरा	10. लक्ष्मण नगर, आगरा दूरभाष : 264420
202.	**श्री रणवीर सिंह** विकास अधिकारी एल. आई. सी.	23, गांधी नगर, आगरा दूरभाष : 53354
203.	**श्री देवचरण सिंह शास्त्री** मण्डलीय लेखाधिकारी (से.नि.)	117, सुन्दर बाग, दयालबाग, आगरा दूरभाष : 53956 पी. पी.
204.	**श्री बृजपाल सिंह बडगोत्री** पुलिस उपाधीक्षक (से.नि.)	66, आवास विकास कालोनी, जी. टी, रोड, अलीग दूरभाष : 420631
205.	**डा. विजेन्द्र कुमार सहरावत** कृषि विश्वविद्यालय कानपुर	एफ 17, विक्रम कालोनी, अलीगढ़
206,	**श्री नेमवीर सिंह** वरिष्ठ प्रबन्धक आरियन्टल बैंक आफ कामर्स, अलीगढ़	सेक्टर – 3 स्कीम 7, विद्यानगर, शास्त्रीनगर, मेर दूरभाष : 766985
207.	**श्री नरेन्द्र कुमार** पी.सी.एस. (जे), सिविल जज, अलीगढ़	जे–9, जजेज कम्पाउन्ड, अलीगढ़
208.	**श्री राजेन्द्र सिंह** मुख्य अभियन्ता, नलकूप, अलीगढ़ दूरभाष : 283362	राज कुमुद भवन, एम. 69 बी., जनकपुरी, अलीगढ़ दूरभाष : 403797
209.	**महेन्द्र सिंह नेहरा** क्षेत्रीय प्रबन्धक, यू. पी. एग्रो, बरेली	

Scanned with OKEN Scanner

क्र.सं.	*नाम, पदनाम व कार्यालय का पता (दूरभाष सहित)*	*वर्तमान आवासीय पता (दूरभाष सहित)*
230.	**श्री राहुल वर्मा** सहायक कमान्डेन्ट केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (सी.आर.पी.एफ.) 108, द्रुतगति बल (आर. ए..एफ.), मेरठ	ए–137, डिफेन्स कालोनी, मवाना रोड, मेरठ दूरभाष : 0121–550917
231.	**डा0 विनोद कुमार 'कुश'** प्रभारी चिकित्साधिकारी राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय, मुरादाबाद	3/1, न्यू आफीसर्स कालोनी, कांठ रोड, सोनकपुर मुरादाबाद दूरभाष : 351006
232.	**श्री खेम सिंह खड़क** पी. सी. एस. उप सचिव, उ. प्र. अल्प संख्यक आयोग दसवां तल, इन्दिरा भवन, लखनऊ	विक्रान्त खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ
233.	**श्री नरेन्द्र कुमार मलिक** सचिव, मण्डी समिति, बडौत, जनपद बागपत	
234.	**श्री सत्यवीर सिंह सिरोही** मूल्यांकन अधिकारी कालाकांकर भवन, लखनऊ दूरभाष : 381730, 384587	ई–73, मीनाक्षीपुरम, मवाना रोड, मेरठ–250001 दूरभाष : 0121–550944
235.	**श्री शौराज सिंह खोखर** जिला कृषि अधिकारी, बिजनौर दूरभाष : 01342-62864	4/4, आफीसर्स कालोनी, कचहरी रोड, बिजनौर दूरभाष : 01342-63403
236.	**डा० चन्द्र वीर सिंह** पशु चिकित्साधिकारी सिकन्दराबाद, जनपद बुलन्दशहर	
237.	**डा. श्रवण कुमार** संयुक्त निदेशक, राज्य रक्षालय संस्थान, पटवाडागर, नैनीताल दूरभाष : 05942–41129	स्टेट वैक्सीन इन्सटीट्यूट परिसर, पटवाडागर, नैनीताल बालदियाखान मोड से नीचे, काठगोदाम–नैनीताल मार्ग, नैनीताल दूरभाष : 05942–41136

क्र.सं.	नाम, पदनाम व कार्यालय का पता (दूरभाष सहित)	वर्तमान आवासीय पता (दूरभाष सहित)
218	**श्री नरेश कुमार** सहायक अभियन्ता (सिविल) वि0जा0अ.ख0–3, एच.टी.पी.एस. कासिमपुर, अलीगढ़–202127	4–13, नयी कालोनी, एच.टी.पी.एस. क दूरभाष : 0521–882720
219	**श्री अरुण कुमार पवार** उप खण्ड अधिकारी (सिविल), उ. प्र. राज्य विद्युत परिषद बरेली दूरभाष : 0581-457683	रामपुर बाग, हाइडिल कालोनी, बरेली (2) 24/2, न्यू आर्य नगर, जेल रोड, मे
220.	**श्री रणधीर सिंह दुहन** पी.सी.एस. अपर नगर मजिस्ट्रेट, गाजियाबाद	दूरभाष : 0575-748824
221.	**श्री गजेन्द्र सिंह** जिला संख्या अधिकारी विकास भवन, अलीगढ़	एल. आई. जी.-20, अवन्तिका - 2 ए. डी. ए. कालोनी, रामघाट रोड, अली
222.	**श्री राजवीर सिंह** मण्डलीय अभियन्ता यू. पी. एग्रो, आगरा	
223.	**श्री उदयवीर सिंह** क्षेत्रीय प्रबन्धक यू. पी. एग्रो, आगरा	
224.	**श्री ओमप्रकाश सिंह** सहायक अभियन्ता निर्माण खण्ड –2, लो. नि. वि., आगरा	
225	**श्री जगजीत सिंह घुंघेश** आई. पी. एस. महानिरीक्षक, शान्ति सुरक्षा बल, गोमती नगर लखनऊ दूरभाष : 391604	4/236, विशाल खण्ड, गोमती नगर, ल दूरभाष : 396512, 395842
226.	**श्री राजेन्द्र कुमार** आई.ए.एस. (से. नि.) पूर्व अध्यक्ष लोक सेवा अधिकरण जवाहर भवन, लखनऊ	बाग बलवन्त सिंह, 467, दक्षिणी सिवि मुजफ्फरनगर दूरभाष : 0131–40703 (2) 1/48, विराम खण्ड, गोमती नगर, दूरभाष : 391783

क्र.सं.	*नाम, पदनाम व कार्यालय का पता (दूरभाष सहित)*	*वर्तमान आवासीय पता (दूरभाष सहित)*
227.	**श्री राजेन्द्र सिंह मल्हान** पी. सी. एस. अपर जिलाधिकारी, एटा	आफीसर्स कालोनी, एटा
228.	**श्री गजेन्द्र सिंह सांगू** अभियोजन अधिकारी, सिविल कोर्ट, मेरठ दूरभाष : 313548	
229.	**श्री विजेन्द्र सिंह** सहायक निबन्धक शाहजहाँपुर	
230.	**श्री योगेन्द्र पाल सिंह यादव** सहायक अभियन्ता, कार्यालय मुख्य विकास अधिकारी, मथुरा	
231.	**डा. देवेन्द्र कुमार** पशु चिकित्साधिकारी, मेरठ	309, कावली गेट, मवाना, मेरठ दूरभाष : 01233–83175
232.	**श्री विक्रम सिंह डागुर** स्थानिक अभियन्ता (सि) उ.प्र. राजकीय निर्माण निगम लि. विश्वैसरैया / मुख्यालय भवन, विभूति खण्ड गोमती नगर, लखनऊ दूरभाष : 392578 व 292581 (फैक्स) एक्सटे 277	ए–203, निर्माण निगम कालोनी, सेक्टर–19, इन्दिरा नगर दूरभाष : 348093
233.	**श्री शिव शंकर सिंह** पी.सी.एस. निदेशक, उच्च शिक्षा निदेशालय, इलाहाबाद दूरभाष : 0532–623874	4/6, आफीसर्स कालोनी, डूमंड रोड, इलाहाबाद दूरभाष : 623947
234.	**श्री नवनीत कुमार** न्यायिक मजिस्ट्रेट, विधि सिविल कोर्ट, कानपुर नगर	

क्र.सं.	नाम, पदनाम व कार्यालय का पता (दूरभाष सहित)	वर्तमान आवासीय पता (दूरभाष सहित)
235.	**श्री सुरेन्द्र सिंह** अपर सिविल जज, मैनपुरी	
236.	**श्री प्रीतम सिंह** सहायक आचार्य शर्करा अभियंत्रिकी राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानुपर – 208017 दूरभाष : 250541, 251144	टाइप–5, एन. एस. आई. कैम्पस, कानपुर दूरभाष : 252315
237.	**डा. अजीत कुमार सिंह** गिरी विकास अध्ययन संस्थान, सेक्टर ओ, अलीगंज लखनऊ – 226 024 दूरभाष : 321860, 334059	5 तिलक मार्ग, लखनऊ – 226001 दूरभाष : 273846, 225377
238.	**श्री तेजवीर सिंह राणा** सहायक निदेशक उ. प्र. राज्य सूचना केन्द्र, प्रथम तल, चन्द्रलोक भवन 36, जनपथ नई दिल्ली – 1 दूरभाष : 011–3326640 फैक्स : 011–3321068	ए–27, सेक्टर-20, नोयडा, गौतम बुद्ध नग दूरभाष : 0118-526088
239.	**श्री नेपाल सिंह** मुद्रा संरक्षण अधिकारी (से.नि.)	ग्राम मडौना, बुलन्दशहर
240.	**श्री जगपाल सिंह मलिक** वरिष्ठ वैज्ञानिक गन्ना शोध केन्द्र, मुजफ्फरनगर	गन्ना शोध केन्द्र, मुजफ्फरनगर दूरभाष : 420402
241.	**श्री अवीक्षित सिंह** सहायक अभियन्ता, पी. टी. पी. पी., पारीछा, उ. प्र. राज्य विद्युत परिषद दूरभाष : 0517-782357	ए. ई. – 4, पी. टी. पी. पी., पारीछा – 284 दूरभाष : 0517-782224
242.	**श्री नेपाल सिंह** भूमि संरक्षण अधिकारी (से.नि.)	ग्राम एवं पोस्ट मडोना, बुलन्दशहर
243.	**श्री हरवीर सिंह वर्मा** अधिशासी अभियन्ता, उ. प्र. राज्य विद्युत परिषद,. गाजियाबाद	

क्र.सं.	नाम, पदनाम व कार्यालय का पता (दूरभाष सहित)	वर्तमान आवासीय पता (दूरभाष सहित)
244.	**श्री वीर बहादुर सिंह** पी.पी.एस. अपर पुलिस अधीक्षक, मथुरा दूरभाष : 0565-400250	
245.	**श्री आर. एस. बासवान** डिप्टी आर. एम. ओ., रामपुर	225, ओल्ड आवास विकास कालोनी, रामपुर दूरभाष : 0595-350537
246.	**कर्नल (से.नि.) मक्खन सिंह**	1, आवास विकास कालोनी, जी. टी. रोड. अलीगढ़ दूरभाष : 0571-404871
247.	**श्री गोविन्द सिंह** उप खण्ड अधिकारी (सिविल) उ. प्र. राज्य विद्युत परिषद, मेरठ	56, हाइडिल कालोनी, कविनगर, गाजियाबाद दूरभाष : 0575-755901
248.	**श्री अशोक चौधरी** पी. सी. एस. डिप्टी कलेक्टर, मेरठ	जिलाधिकारी परिसर, मेरठ
249.	**श्री हरेन्द्र पाल सिंह** पी. सी. एस. डिप्टी कलेक्टर, झांसी	डी. एम. कम्पाउण्ड, झांसी
250.	**श्री नरेन्द्र चौधरी** पी. सी. एस. उप जिलाधिकारी, इग्लास, अलीगढ़	एस. डी. एम. निवास, तहसील इग्लास, अलीगढ़

-------✶-------

स्मारिका

Scanned with OKEN Scanner

क्र.सं.	नाम विधायक	क्षेत्र	पार्टी	पता एवं फोन
	सर्व श्री			
1.	प्रदीप बलियान	बघरा	भाजपा	21, 22 वि० नि०–5, मीराबाई माग दूरभाष : 274842
2.	राम नरेश रावत	गढ़मुक्तेश्वर	भाजपा	61, दारुलशफा, लखनऊ
3.	राजेश कुमार सिंह उर्फ चुन्नू	कॉठ	भाजपा	वि०नि०–3, ए–602, ओ.सी.आर., दूरभाष : 221573
4.	डा० ज्ञानवती	खैर	भाजपा	116 बी, दारुलशफा, लखनऊ दूरभाष : 285548
5.	विशम्भर सिंह	सादाबाद	भाजपा	34, रायल होटल, लखनऊ
6.	वीरेन्द्र सिंह सिरोही	अगौता	भाजपा	29ए, दारुलसफा, लखनऊ दूरभाष : 275294
7.	मलखान सिंह	इगलस	भाजपा	सी–15, पार्करोड, कालोनी, लख दूरभाष : 316356
8.	राजपाल सिंह	खतौली	किसान कामगार	903, मंत्री आवास बहुखंडी, बटल लखनऊ दूरभाष : 283714
9.	समरपाल सिंह	बरनावा	किसान कामगार	1001, बहुखंडी मंत्री आवास, बट लखनऊ दूरभाष : 275541
10.	गजेन्द्र कुमार मुन्ना	छपरौली	किसान कामगार	131 बी, दारुलसफा, लखनऊ दूरभाष : 218464
11.	सरदार सिंह	गोकुल	बासपा	ए–75, दारुलसफा, लखनऊ दूरभाष : 275614
12.	स्वामी ओमवेश	चान्दपुर	निर्दलीय	ए–104, दारुलसफा, लखनऊ दूरभाष : 275634
13.	बाबूलाल	फतेहपुर सीकरी	निर्दलीय	166 ए, दारुलसफा, लखनऊ दूरभाष : 202055
14.	चौधरी लक्ष्मीनारायण चौधरी	छाता	कांग्रेस	115 बी, दारुलसफा, लखनऊ दूरभाष : 275229
15.	जगत् सिंह	सदस्य विधान परिषद	लोकदल	
16.	विजय सिंह राना	सदस्य विधान परिषद	सपा	
17.	वीरसेन सरोहा	सदस्य विधान परिषद	भाजपा	

Scanned with OKEN Scanner

क्र.सं.	नाम संसद सदस्य	लोक सभा क्षेत्र	पता एवं फोन
सर्व श्री			
1.	तेजवीर सिंह	मथुरा	65, साउथ एवेन्यु, एम. पी. फ्लैट, दूरभाष : 3794773 (आ), मथुरा 0565–408317
2.	सोहन वीर सिंह	मुजफ्फरनगर	94, नार्थ एवेन्यु, एम. पी. फ्लैट, मुजफ्फरनगर, 384, कम्बल वाला बाग, नई मण्डी दूरभाष : 0131405819 (नि.), 400019(नि.)
3.	सोमपाल शास्त्री	बागपत	28, लोधी एस्टेट दूरभाष : 4624886 (आ.), 3388823(का.)
4.	वीरेन्द्र वर्मा	कैराना	629, सेक्टर–4, आर. के. पुरम, दूरभाष : 011–6184655 (आ) अन्सारी रोड, मुजफ्फरनगर
5.	डा० रणवीर सिंह	राज्यसभा	140, साउथ एवेन्यु, एम. पी. फ्लैट, दूरभाष : 3793667 (का)
हरियाणा			
1.	शमशेर सिंह सुरजेवाला	राज्यसभा	एबी/89, शाहजहां रोड दूरभाष : 3388338, 01684–40224
2.	भूपेन्द्र सिंह हुड्डा	रोहतक	20, विलिंग्टन क्रिसिंट रोड दूरभाष : 3792268, 011–3794080 (नि.)
3.	राम चन्द्र वेंदा	फरीदाबाद	25, हरियाणा भवन + 59, साउथ एवेन्यु, फरीदाबाद निवास दूरभाष : 011–3794080, 0129–215077
4.	किशन सिंह सांगवान	सोनीपत	34, हरियाणा भवन दूरभाष : 3386131–34
5.	सुरेन्द्र वरवाला	हिसार	202, हरियाणा भवन दूरभाष : 3386141–43
6.	सुरेन्द्र सिंह	भिवानी	5, तुगलक लेन दूरभाष : 6915823, 3794610 (नि.)
राजस्थान			
1.	नरेन्द्र सिंह	बुडनिया	311, राजस्थान भवन, बसंत कुंज, निवास, 9, केनिंग लेन दूरभाष : 4694244, 4623306, 6898363 (का.) 4693616 (नि.)
2.	डा० हरि सिह	–	310, राजस्थान भवन दूरभाष : 4618671, 4611206
3.	शीशराम ओला	झुंझनु	103, राजस्थान भवन, 1, रेसकोर्स रोड दूरभाष : 4618671, 4611206
4.	कर्नल सोना राम	जैसलमेर	320, राजस्थान भवन, 41 मीना बाग दूरभाष : 6895875 (नि), 3794700
5.	नटवर सिंह	भरतपुर	
6.	बलराम जाखड़		

Scanned with OKEN Scanner

	Name	Sl. No.
Ahalawat	C.P.S.	98
Ahalawat	Mamchandra	88
Arya	Mahendra Singh (Dr.)	55
Arya	Priyavrata	135
Arya	Satyaveer Singh P.C.S.	133
Badgotri	Brijpal Singh	204
Baswan	R. S.	245
Beniwal	Vikram Singh	194
Bhagwan	Jai	58
Chahar	Dilip Singh	201
Chahar	Randhir Singh P.C.S.	149
Chauhan	Jaipal Singh	54
Chodhury	Kultar Singh	46
Choudhary	Ajit	18
Choudhary	Anurag	179
Choudhary	Ashok P.C.S.	248
Choudhary	Dharmendra Singh	122
Choudhary	Narendra	157
Choudhary	Narendra P.C.S.	250
Choudhary	Shailendra P.C.S.	64
Choudhary	Sripal (Dr.)	107
Choudhary	Sunil	16
Choudhary	V. K. (Dr.)	78
Choudhary	Vivek	65
Dagur	Vikram	232
Dahiya	Baljeet Singh	158
Deshwal	Devendra Singh	15
Deshwal	Shri Gopal	96
Dhaka	Arivind Kumar	56
Dhaka	Brhma Singh	69
Dhaka	R. K. (Dr.) P.M.S.	108
Dhama	Ram Narain	150
Duhan	Randhir Singh P.C.S.	220
Faujdar	Arti (Dr. Smt.) P.C.S.	146
Faujdar	Mahavir Singh (Dr.) P.M.S.	145
Faujdar	Ram Singh	93
Gahalawat	Jagdish Singh (Dr.)	159
Ghungesh	Jagjit Singh I.P.S.	225
Gill	Vinai Kumar	38
Jurel	Rajveer Singh	25
Kharak	Khem Singh P.C.S.	212
Khokar	Sheoraj Singh	215
Kumar	Ajai	170
Kumar	Anil Raj P.C.S.	8
Kumar	Devendra (Dr.)	231
Kumar	Mahesh	125
Kumar	Narendra P.C.S. (J)	207
Kumar	Naresh	218
Kumar	Navneet P.C.S.(J)	234
Kumar	Rajendra I.A.S.	226
Kumar	Rajiv	67

Scanned with OKEN Scanner

Sl. No.
98
88
55
135
133
204
245
194
58
201
149
54
46
18
179
248
122
157
250
64
107
16
78
65
232
158
15
96
56
69
108
150
220
146
145
93
159
225
38
25
212
215
170
8
231
125
207
218
234
226
67

	Name	Sl. No.
Kumar	Ravindra P.C.S. (J)	168
Kumar	Sanjay (Dr.) P.M.S.	144
Kumar	Satish	177
Kumar	Sharvan (Dr.)	217
Kush	Vinod Kumar (Dr.)	211
Malhan	Rajendra Singh P.C.S.	227
Malik	Arun Kumar	186
Malik	Brajpal (Dr.)	139
Malik	Jagpal Singh	240
Malik	Mangeram (Dr.) P.M.S.	191
Malik	Manju (Dr. Smt.)	200
Malik	Narendra Kumar	213
Malik	Virendra Kumar	151
Malik	Virendra Kumar (Dr.)	174
Malik	Yogendra	137
Malik	Yogeshwar Singh	189
Mohan	Vinai	26
Nain	Ishwar Singh	171
Nehra	Mahendra Singh	209
Njovan	R.S.	36
Panwar	Arun Kumar	219
Panwar	Ashok (Dr.)	86
Panwar	Balraj Singh (Dr.)	75
Panwar	Promod Kr. (Dr.)	7
Panwar	Sudhir (Dr.)	19
Panwar	Vinod Kumar P.C.S.	167
Panwar	Yogendra Singh (Dr.)	79
Phogar	Hariraj Singh I.P.S.	97
Ponia	Jaipal Singh	129
Raj	Anita P.C.S.(J)	169
Ram	Babu	4
Rana	Ajaya (Dr. Smt.)	104
Rana	Ravindra Singh (Dr.)	103
Rana	Tejveer Singh	238
Rathi	Ashok Kumar	89
Rathi	Indrapal Singh	132
Rathi	Krishna Pal	40
Rathi	Surendra Singh	162
Rathi	Vinai Kumar	183
Rathi	Yashpal Singh (Dr.)	85
Rawat	S.S.	48
Rawat	Surendra Singh	118
Sangu	Gajendra Singh	228
Sangwan	Rajendra Singh	59
Saroha	Ram Kishan	20
Saroha	Ved Prakash Singh	53
Shastri	Dev Charan Singh	203
Shehrawat	Virendra Kumar (Dr.)	205
Singh	A.P.	44
Singh	A.P.	73
Singh	Ajai	28

	Name
Singh	Ajit (Dr.)
Singh	Ajit (Dr.) P.M.S.
Singh	Ajit Kumar Prof.
Singh	Anand
Singh	Anup
Singh	Arvind P.C.S.
Singh	Atul
Singh	Avikshit
Singh	Bhairo
Singh	Bhanwar (Dr.)
Singh	Biri
Singh	Braham
Singh	Braham
Singh	Brijendra
Singh	Brijendra Pal H.J.S.
Singh	Brijpal
Singh	Brijpal
Singh	Chandra Pal
Singh	Chandra Veer (Dr.)
Singh	D. P. (Dr.)
Singh	Dhanpal
Singh	Dharamveer
Singh	Dharamveer
Singh	Dharamveer (Dr.)
Singh	Dharamveer (Dr.)
Singh	Dharmendra
Singh	Digamber
Singh	Digpal
Singh	Fathe
Singh	Gajendra
Singh	Ganga Ram
Singh	Giriraj
Singh	Govind
Singh	Gulbeer I.A.S.
Singh	Hanuman
Singh	Hardan
Singh	Hardeo
Singh	Harandra Pal
Singh	Harpal
Singh	Indra Jeet
Singh	Indra Pal (Dr.)
Singh	Jagmer
Singh	Jaipal
Singh	Jaipal
Singh	Jai Prakash
Singh	Jaswant
Singh	Jitendra
Singh	Jogendra Pal
Singh	Kaptan
Singh	Khilari (Dr.)
Singh	Krishna Kumar (Dr.)

Scanned with OKEN Scanner

	Name	Sl. No.
Singh	Krishna Pal	161
Singh	Lakhpat	124
Singh	Madhavendra	27
Singh	Mahak	154
Singh	Mahak	32
Singh	Mahendra	84
Singh	Mahendra	185
Singh	Mahipal	143
Singh	Mahipal (Dr.) P.M.S.	246
Singh	Makhan (Col.)	6
Singh	Mathan (Dr.)	182
Singh	Manoj Kumar	52
Singh	Nand Ram	172
Singh	Narendra	21
Singh	Narendra (Dr.)	43
Singh	Nawab (Dr.)	206
Singh	Nemveer	76
Singh	Nepal	239
Singh	Nepal	242
Singh	Nepal	224
Singh	Om Prakash	102
Singh	O.P. (Dr.)	236
Singh	Pritam	156
Singh	R.K. (Dr.)	127
Singh	Raghuveer	13
Singh	Raj Bahadur	112
Singh	Rajendra	176
Singh	Rajendra	208
Singh	Rajendra	94
Singh	Rajveer	80
Singh	Rajveer (Dr.)	117
Singh	Rajveer (Dr.)	222
Singh	Rajvir	31
Singh	Ram	180
Singh	Ramawatar P.C.S. (J)	178
Singh	Rameshwar	17
Singh	Ram Kripal	175
Singh	Ram Pal	198
Singh	Ram Pal	136
Singh	Ram Pal (Dr.)	47
Singh	Ranveer	90
Singh	Ranveer	202
Singh	Ranveer	62
Singh	Rishi Pal	109
Singh	S.P. (Dr.) P.M.S.	190
Singh	Satya Pal	70
Singh	Satya Veer	91
Singh	Shankar (Dr.)	166
Singh	Shivraj	233
Singh	Shiv Shankar P.C.S.	126
Singh	Shyamveer	

Scanned with OKEN Scanner

	Name
Singh	Sohan
Singh	Sohan Veer
Singh	Surendra P.C.S. (J)
Singh	Surendra Pal
Singh	Tej Pal
Singh	Tej Pal
Singh	Tej Pal
Singh	Tej Pal I.A.S.
Singh	Uday Veer
Singh	V.P.
Singh	Veer Bahadur P.P.S.
Singh	Vijai
Singh	Vijai
Singh	Vijendra
Singh	Vikram
Singh	Vikram (Dr.)
Singh	Yashpal (Dr.) I.A.S.
Singh	Yashpal (Dr.) P.M.S.
Singh	Yash Pal P.C.S. (J)
Singh	Yashwant
Sinha	V.K. (Dr.) P.M.S.
Sirohi	Ajit Singh
Sirohi	Jagit Singh I.A.S.
Sirohi	Mahipal Singh H.J.S.
Sirohi	Satyaveer Singh
Sirohi	Vinai Singh
Siwach	Surendra Singh
Siwal	Jai Karan Singh
Siwatch	Mahendra Singh
Teotia	Tejveer Singh
Tomar	D.P.S.
Tomar	Dinesh Kumar (Dr.)
Tomar	S.P.S. (Dr.)
Tomar	Tej Pal Singh
Verma	Balendra Kumar (Dr.)
Verma	Choub Singh P.C.S.
Verma	Dori Lal
Verma	Harvir Singh
Verma	Om Singh (Dr.)
Verma	R.B. (Dr.)
Verma	Rahul
Verma	Raj Gopal Singh
Verma	Shiv Dayal
Verma	Surendra Kr.
Yadav	Yogendra Pal Singh

❖

स्मारिका

Scanned with OKEN Scanner

स्वर्गवासी सदस्यों की सूची

क्र.सं.	*नाम एवं पदनाम*	*आवसीय पता*	*स्वर्गवास होने की तिथि*
1	**श्री सोहन वीर सिंह** जिला प्रशिक्षण अधिकारी, (से.नि.) ग्राम्य विकास विभाग	एल 209, शास्त्री नगर, मेरठ दूरभाष : 0121-762367	सितम्बर 3, 1998
2	**श्री आनन्द सिंह** परियोजना निदेशक, (से.नि.) अलीगढ़	एटा बाई पास रोड, क्वार्सी रामघाट रोड, अलीगढ़ दूरभाष : 401090	अप्रैल 26, 1997
3	**श्री अजीत सिंह सिरोही** जिला सैनिक अधिकारी, (से.नि.) अलीगढ	म० नं०-3, जापान हाउस मौरिस रोड, अलीगढ़ दूरभाष : 403266	दिसम्बर 1997
4	**श्री टी० पी० सिंह**	भूतनाथ मन्दिर के सामने	1997

शाही शौक

बेजोड़ स्वाद

राजनिगंधा

पान मसाला एवं गुटखा

निर्माता : सोनल फूड प्रॉडक्ट्स, इंडिया

वैधानिक चेतावनी : तम्बाकू चबाना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

With best compliments from :

★
★ ★ ★
★

SWASTICK TUBES (P) LTD.

Manufacturers of :
ISI PVC Pipes & Fittings

Admn. Off. :
128/9/H-2, KIDWAI NAGAR, KANPUR
TEL. : 606301

मै० हिन्दी इन्स्टीरियल कारपोरेशन

पटेल नगर, अलीगढ़

पंजीकृत ठेकेदार एवम सामान्य कार्यो के आपूर्तिकर्ता,
एवम पाइप आदि के अधिकृत विक्रेता।
कृपया एक बार सेवा का अवसर प्रदान करें।

❖❖❖
❖

मै० एम० के० सन्स अलीगढ़

राठी भवन, सासनी गेट, अलीगढ

उत्तर प्रदेश, व्यापार कर द्वारा पंजीकृत नं० एल० १६३४४६४, १६५–८६
एवम उच्च कोटि की छपवाई एवम आपूर्ति कर्ता तथा समस्त जनरल
सामानों की उच्च कोटि के निर्माणकर्ता, एवं आपूर्ति कर्ता।

कृपया एक बार सेवा का अवसर प्रदान करने की अनुकम्पा करें। आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है, कि एक बार सेवा का अवसर जरूर प्रदान करेंगे।

मनीष कुमार राठी
राठी भवन, सासनी गेट, अलीगढ

स्मारिका

Scanned with OKEN Scanner

शुभःकामनाओं सहित :

ओम प्रकाश शर्मा, ठेकेदार

१/७८१, संजय कालोनी, अलीगढ़

पंजीकृत, राजकीय ठेकेदार एवं सामान्य वस्तुओं
के आपूर्तिकर्ता एवम निम्न कार्यो के विशेष रूप से निपुण :
भवन निर्माण, बोरिंग कार्य, रिचार्ज वेल से सम्बन्धित कार्य, एवं सामान्य सामग्री के उच्च स्तरीय आपूर्तिकर्ता

मै० रूचिर इन्टरप्राईजेज

फाटक सूरजभान, बेलनगंज, आगरा

फोन : ३६६५६६३६, ३६२८२५

सी० आई० फिलेब्ज, सी०आई० बैण्ड, आयरन क्लैम्प एवं अन्य उच्च कोटि के सामानों के मै० न्यू एवं आपूर्तिकर्ता।

आई०एस० आई० मार्क विशेष रूप से उक्त सामानों की दर अनुबन्ध उद्योग निदेशक कानपुर द्वारा अनुमोदित हैं,

कृपया एक बार सेवा का अवसर प्रदान करने का कष्ट करें।

With best compliments from :

*****
***
*

GAURAV MARKETTING CO. PVT. LTD.

(SWARAJ MAZADA)

Marketting Office :
28, B.N. Road, Lucknow, Tel. : 222094

Works :
7/9, H.A.L. Ancillary Complex
Faizabad Road, Lucknow Tel. : 342741

*
***
*****

With best compliments form :

ORIENTAL STRUCTURAL ENGINEERS LTD.

Regd./ Head Off. :
21 Commercial Complex, Malcha Marg,
Diplomatic Enclave, New Delhi - 110021
Telex : 031-63366 BAXI-IN, Fax : 6114421
Gram : Bakshibros.
E-mail : oseltd@ giasdi01.vsnl.net.in

With best compliments from :

OWSWAL CHEMICAL'S & FERTILIZERS LTD.

NEW DELHI

स्मारिका

With best compliments from :

RAMPUR DISTILLERY

(A UNIT OF RADICO KHAITAN LTD.)

WE THINK FOR NATION *WE CARE FOR POLLUTION*

Manufacturer's of :

✦ **EXPORT QUALITY EXTRA NAUTRAL SPIRIT**
✦ **EXPORT QUALITY INDUSTRIAL ALCHOHOL**
✦ **EXPORT QUALITY RECTIFIED SPIRIT**
✦ **INDIAN MADE FORIGN LIQUORS**
✦ **COUNTRY LIQUOR**

Regd Office & Works :
Bareilly Road, Rampur-244 901 (U.P.)
Tel.: 350601, 350602, 351903 & 350604
Gram : Radico • Fax : (0595) 350009

Head Office :
305-312 Deepali, 92, Nehru Place, New Delhi - 110 019
Tel. : 6280111 to 6280115 • Fax : (011) 6435448

Supreme Shock Absorber

S.G.S. AUTO (P) LTD.

Plot No 11 & 12 Friends Colony
16/5, Mathura Road, Faridabad - 121001
Phone : (0129) 264601

M.D.
Shailendra Singh

With best compliments from :

DEVASHISH TEWARI

VPD Plastics (P.) Ltd.

504, Chintals House,
16, STATION ROAD, LUCKNOW-226 001
Gram : VEEPEEDEE, Phone : 274317, 220986, Fax : 0522 - 274317

With best compliments from :

GUPTA TRADERS
&
GOVT. SUPPLIERS

Lucknow

Building Meterial & Hardware

NATIONAL HIGH-WAY CONSTRUCTION CO.

"A" CLASS GOVT. CONTRACTORS
GOOD PERFORMANCE FOR PRIVATE
COLONIES, FACTORIE'S ROAD ALSO

Specialist in
Bituminus Road dense carpet
works by hot-mix plant

HEAD OFFICE :
64/46, Dampier Nagar, Mathura Ph. : 401652

H M P OFFICE :
KM 148 148 NH2, Near Narhauli Village, Dholi
Piau, Mathura Ph. : 406772

Good Luck
Steel Tubes Ltd.

Manufacturers & Exporters of :
ERW Black & Galvanized Steel Tubes

Admn. off. : 24, Add. Sihani Gate Scheme, Near
Subzi Mandi Corner
Ghazibad - 201001 (U.P.) India
Phone : 790753, 790889, 790954, 791077
Fax : 91-575-791427
Regd. Off. : 5/102, Sikka Complex (1st Floor)
Community Centre, Preet Vihar,
Vikas Marg, Delhi-110092
Telfax : 2214254, Tel. : 2439513, 2465439

Carrier

THE CLIMATE MAKERS

Sales & Service of Air Conditioners
'A' Class Approved electrical contractor

2 Jeewan Bhawan, 43 Hazratganj, Lucknow-1
Phone : 216210(O), 213100-282163(W)
273075, 391177(R)

B. R. Electricals

'A' Class Approved Electrical Contracotrs

33, CANTT. ROAD, LUCKNOW - 226 001

We can do

★ 11KV to 220 V Line Work & Parnels X 12
★ Elect, Met. Work
★ 11 KV, 440V L.T. Cables & Telephone Cables
★ House wire etc.

With best compliments from :

Indus Tubes Limited

Manufacturer and exporters of

M. S. & Galvanised Steel Tubes

Pratap Champers, Gurudwara Road
Karol Bagh, New Delhi - 110 005
Tel. : 5733932/33 PBX : 5753933
Fax : 91-11-5789893

SIZES RANGE

15 to 200 mm ISI marked to various specification
and BS : 1387 & 1139
and various other International Standards

With best compliments from :

QST LIMITED

Manufacturers & Exporters of ERW Steel Pipes & Tubes, Tubular Poles (Black & Galvanised)

Regd. Off : Agarwala Building, The Mall, Kanpur - 208 004
Tel. : 364203/04/05 • Fax : 0512-360158 • Cable : Steeltube

Factory: Bindki Road, Distt. Fatehpur (U.P.)

Branch : ✪ NEW DELHI ✪ BOMBAY ✪ CALCUTTA

और अधिक **शक्तिशाली**

शक्तिमान यूरिया प्लस

चूरा रहित
बड़ा और समान
आकार का दाना

N 46% +

सही वजन
आकर्षक और
बेहतर पैकिंग

इंडो गल्फ ने अपनी मशीनों का नवीनीकरण करके अपनी उत्पादन तकनीकी को और आधुनिक बनाया है। इसीलिए अब शक्तिमान यूरिया प्लस है और भी बेहतर

इंडो गल्फ फर्टिलाइजर्स

राष्ट्र सेवा में समर्पित भारत की अग्रणी उर्वरक कम्पनी

With best compliments from :

Anuvish Finance Private Limited

R.O. : 1./109, VISHWAS KHAND, GOMTI NAGAR,
LUCKNOW PHONE : 309861
H.O. : 13, PRAGATI MARKET, TANK ROAD, SHAMLI,
DISTT. - MUZAFPAER NAGAR (U.P.)
PHONE : 01318-32765, 51583

With best compliments from :

M/s Unity Engineers

D-114, NIRALA NAGAR,
LUCKNOW

✶

'A PREMIER
AIRCONDITIONING
COMPANY IN CENTRAL
AIRCONTITIONING SYSTEMS"

✶

With best wishes from :

Hotel Mansarovar

MATHURA

With best wishes from :

BRIJWASI SWEETS

MATHURA, BRINDAWAN AND CHOWK

उत्तर प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली, मध्य प्रदेश, राजस्थान, पंजाब, महाराष्ट्र, जम्मू, तमिलनाडु और गुजरात प्रदेशों के शहरो, कस्बों से लेकर दूर दराज के गाँवों तक प्रसारित जाटों की लोकप्रिय पत्रिका

जाट समाज

आप और आपके प्रतिष्ठान, संस्था की प्रसिद्ध, सम्पूर्ण समाज को विश्वसनीयता के साथ पहुंचाने वाला प्रभावशाली माध्यम।

जाट समाज
सी–२०, न्यू आगरा
आगरा–२८२००५ फोन : ५१३५३

bajaj

LAL & COMPANY (SALES)

Authorised Dealer of :

Bajaj Electrical Limited

buy best buy bajaj

6-7, Janki Bazar, Latouche Road,
Lucknow-226001 (U.P.)
Phones : 222245 (O), 228203 (R)

JAIN ENTERPRISES

Approved Govt. Suppliers of :

Building Material, Hardware,
Sanitaryware, Electrical Goods & Paints

Specialist in : All kinds of Electrical
Mechanical & Repairing Work

242/108, YAHIYAGANJ,
LUCKNOW-226 003

With best wishes from :

Rani Laxmi Bai Memorial Senior Secondary School

Lucknow

JAIPAL SINGH
Advocate
Founder/Manager

स्मारिका

ग्रामीण कल्याण संस्थान आपकी सेवा में

(1) ग्राम पंचायतराज का अध्ययन कर सुधार हेतु प्रारूप बनाकर प्रदेश सरकार व भारत सरकार को भेजा गया।

(2) मेरठ व मुजफ्फरनगर के तीन गांवों की शिक्षा व बेरोजगारी की स्थिति का अध्ययन किया गया तथा मेरठ में विचार गोष्ठी आयोजित की गई।

(3) उपरोक्त विषय पर लखनऊ में अखिल भारतीय विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया तथा उसकी अनुशन्साएं प्रदेश सरकारों व भारत सरकार को भेजी गयी।

(4) ग्रामीण क्षेत्र से जनसंख्या के पलायन की समस्या पर अध्ययन कर एक रिपोर्ट भेजी गई।

(5) प्रदेश में जलसंसाधन से जुड़ी समस्याओं के बारे में विचारगोष्ठियों का आयोजन किया गया तथा निकट भविष्य में अखिल भारतीय सेमीनार का आयोजन प्रस्तावित है।

(6) "प्रशासन में जवाबदेही" विषय पर क्षेत्रीय विचारगोष्ठियां आयोजित की गई और निकट भविष्य में अखिल भारतीय सेमीनार का आयोजन प्रस्तावित है।

(7) एक "अध्ययन केन्द्र" की स्थापना हेतु प्रयास किए जा रहे हैं।

अजय कुमार
सचिव

कप्तान सिंह
अध्यक्ष

ग्रामीण कल्याण संस्थान

(शासन के आदेश संख्या 2974/1986–87 द्वारा पंजीकृत)

20/1, कैनाल कालोनी, लखनऊ–226 002

दूरभाष : 238868

Scanned with OKEN Scanner

ग्रामीण क्षेत्र अधिकारी कल्याण परिषद उ०प्र० सदस्यता ग्रहण प्रपत्र

१. नाम .....

२. पिता/पति का नाम .....

३. पदनाम .....
(विभाग का नाम
एवं दूरभाष सहित) .....

४. वर्तमान पता .....
(दूरभाष सहित)

.....

.....दूरभाष : .....

५. सेवा की स्थिति : सेवारत/सेवानिवृत, केन्द्र/राज्य सरकार/अन्य

४. वर्तमान पता .....
(मूल निवास)

.....

.....दूरभाष : .....

७. जन्म तिथि :

<u>घोषणा</u>

मैं ..... पुत्र/पत्नी .....
घोषणा करता/करती हूं कि उपरोक्त तथ्य मेरी जानकारी में सत्य है और मैं परिषद के उद्देश्यों में सम्पूर्ण आस्था रखते हुए परिषद का सदस्य होना चाहता/चाहती हूं। मैं परिषद के समस्त नियमों को पूर्णतया पालन करूंगा/करूंगी।

प्रस्तावक का नाम : .....
पदनाम .....
.....

(आवेदक के हस्ताक्षर दिनांक सहित)

स्मारिका

Scanned with OKEN Scanner